साहिल से

ग़ज़ल
संग्रह

डॉ. कुँवर
वीरेन्द्र विक्रम
सिंह गौतम

साहिल से

ग़ज़ल संग्रह

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

साहिल से (ग़ज़ल संग्रह)
[ई-पुस्तक]

प्रथम संस्करण: अक्टूबर 2022

निवेदन

ई-पुस्तक के रूप में तैयार ग़ज़लों का यह छठा संकलन ग़ज़ल के आशिक़ों को समर्पित है। इस संग्रह की ग़ज़लें जुलाई 2022 में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह नग्मा-ए-बुलबुल (ई-पुस्तक) की 160 ग़ज़लों के बाद की हैं। ग़ज़लों के आकलन का काम ग़ज़ल के आशिक़ों का है।

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम
बी-607, सत्या एन्क्लेव, लेक एवेन्यू, कांके रोड, राँची – 834 008

दिनांक: 8 अक्टूबर 2022

अनुक्रम

ग़ज़ल क्रमांक

बे-वजह बे-झिझक बे-ख़ौफ़-ओ-बेताब मिले
जाने क्या सोचकर उसने कोई वादा न किया
एक क़िस्सा-ए-तवील सुनाने के लिए है
सोचते सोचते सुबह करते
आगाह हो गई सहर चिड़ियों के शोर से
ख़यालों पर लगा पहरा रहा है
दिल नहीं मानता इस बात को क़ुबूल करें
मुद्दआ जिसके है ख़िलाफ़ वही क़ाज़ी है
राह लम्बी सही, गर जाती है दिल से दिल तक
हम न मंज़िल के रहे न घर के
ये है हसीन हर समय हसीन रहेगा
राह में दोस्त भी मिल सकते हैं
है इसके ही अस्तित्व से अस्तित्व हमारा
तन्हा नहीं हैं, साथ है हुजूम-ए-रहगुज़र
रेवड़ी वह बाँटने आया चलो खाने चलो
दिल्लगी छोड़कर संजीदगी से बात करें
याद आई यार की और चश्म दरिया हो गए
मिलता कोई गवाह नहीं और न क़ातिल

दरिया क्यों डूबता समंदर में
किसी दीवाने को ख़फ़ा न किया
ग़म ग़लत करने को पी लेते हैं
एक मक़बूल-सी ख़ता करते
ख़्वाब में उसने आना छोड़ दिया
सुबह-सुबह सब घर से निकले सू-ए-मंज़िल-ए-मौहूम
जुस्तजू है उसे जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं
उसकी ख़ामोशी में पोशीदा मायने हैं कई
तन्हाई में घर के अंदर तन्हा दिल घबराता है
भीड़ भरी सड़कों में वो जाना-पहचाना लगता है
हमें मयख़ाने में भी दौर-ए-ख़राब मिले
ख़बर मिली है उसके आने की
ख़्वाब में ही विसाल हो जाता
ख़बर हैं अख़बार में वहशत लिए
बंदिश-ए-शोर तेरे शहर में मजाज़ भी है
नहीं है खेल एक आफ़त है
अगर मंज़िल से वास्ता रखते
हमें आईने में अक्स-ए-अना अच्छा नहीं लगता
हाथ से अपने फिसलता जा रहा
मैं अकेला कहाँ तन्हाई में
कभी ठहरता आब-ए-वक़्त नहीं
तुम्हारे शहर में कम शोर नहीं
नहीं आना था वो नहीं आए
कभी लगा है मैं अकेला हूँ
कभी ऐसा हो तो मज़ा आए

गए जिस रोज़ साहिल से निकाले
दर्द-ए-दो-जहान काफ़ी है
पसंद उनको रंग सारे हैं
रिंद हैं जाम के तहक्कुम में
तक़दीर में लिखी हुई यह बात भी होगी

ये मौसम सर्द, स्वेटर के बिना अच्छा नहीं लगता
सुना है वक़्त नहीं रुकता है
इश्क़ की मेरी दास्ताँ है अलग
हर तमाशे का ज़रूरी नहीं कुछ मतलब हो
बे-आब दरिया दिख रहा सराब की तरह
सुनते हैं हरदम संजीदा रहता है
कल नहीं, आना है तो आज आओ
हुज़ूर से कलाम क्या करते
ग़ज़ल है बूझने-बुझाने को
आशिक़ी का सही सलीक़ा हो
बे-बर्ग शजर का घना साया नहीं रहा
रंज-ए-कुलफ़त-ओ-ज़रर का असर लगता है
रात भर रंज बे-हिसाब रहे
कल की तस्वीर बनाई जाए
यह एक काम सोचा, यह एक काम करलें
इश्क़ में नाम कर रहे हैं हम
मुसलसल हादसों के बीच, सब चलते रहे
पहचान लिया हमने बड़ी बात हो गई
हुए ख़ामोश कुछ बताते हुए
दुनिया-ए-तसव्वुर में बहला रहे हैं ख़ुद को
चिराग़ को बुझाके बैठे हैं अंधेरे में
फ़ासले बढ़ गए जब पास आए
शाम को खोजता ठिकाना है
सुबह-दम हो जायेंगे तैयार फिर
हस्ब-ए-मिज़ाज करते रहे गुफ़्तुगू हमसे
हुज़ूर ने मेहर अज़-हद कर दी
घर में फैला हुआ अस्बाब गिना करते हैं
बाद सूरज के मेरा साया नहीं साथ आया
उसकी नाराज़गी शदीद नहीं
दिल कर रहा है अपने को समेट कर देखें
नई दुनिया का तसव्वुर करते
हैं हक़ीक़त-आशना तो ख़्वाब क्यों हैं देखते
भूलना चाहते थे ख़ाना-ख़राब
हल करेंगे ये मसाइल किस तरह
किसलिए हर समय बेदार रहा
वो बे-ख़बर न इस तरह इधर उधर जाता
सहर के साथ नया दिन गुज़ारने निकले
बात हमसे करने में उसको परेशानी हुई

क्यों लोग बोलते हैं बिना लफ़्ज़ों को तोले
रू-ब-रू आए, बे-नक़ाब आए
एक दीवाने को बहलाने लगे
रहमत ख़ुदा की होती है ज़हमत नहीं होती
हमारे यार मनचले निकले
फ़ुर्सत से बात करने की फ़ुर्सत नहीं मिली
इन परिंदों के पर निकलने दें
चुक गए कितने हम बचे कितने
आ गए आज हमसे मिलने को
आजकल दौर-ए-जम्हूरी है
आदमी माँगता है आज़ादी
फ़लक पे दूर तलक टुकड़ा-ए-सहाब नहीं
आह बेसाख़्ता निकलने पर
आई ख़बर है कोई फ़रमान लिख रहे हैं
सफ़र में जो मिला गुमराह मिला
सू-ए-मंज़िल चले रफ़्ता-रफ़्ता
जज़्बा-ए-इश्क़ के सताए हैं
एन-मुमकिन कभी कहते हैं ग़ैर-मुमकिन को
आस्तीं में लिए ख़ंजर निकल पड़े क़ातिल
ख़बर की जगह हर सफ़्हे में इश्तिहार मिले
ख़ुदा सें माँगने में कोई बुराई भी नहीं
बंद दरवाज़ा दरीचा करते
दफ़अ'तन सामने आना है इत्तिफ़ाक नहीं
यही आज़ादी-ए-सहाफ़त है
मैं ख़ुद को रोकता हूँ टोकता हूँ
बा-ख़ुशी उनका इंतिज़ार करें
सबका वजूद कितने रिश्तों में बंट रहा है
देखकर आईना सदमा मुझे लगा गहरा
आदमी तन्हा शुरू करता सफ़र है गोर से
हमारी आह में पैदा हुआ असर कोई
प्यादा जो बना फ़र्ज़ी तो इतराने लगा है
बात होती है हम-ख़यालों में
मुसलसल सफ़र में है
दोस्त हमको नहीं दगा देंगे

ग़ज़लें

1: हमने अपना बयाँ कहा होता

हमने अपना बयाँ कहा होता,
ज़बाँ पे सबके क़हक़हा होता।

बोलने का अगर मौका देते,
बे-ज़बाँ ने भी कुछ कहा होता।

रू-ब-रू बैठते कभी आकर,
ग़ौर से सुनते जो कहा होता।

हाल-ए-दिल पूछा नहीं अच्छा किया,
दर्द फिर और मुंतहा[1] होता।
*1*अधिक गहरा

सवार सर पे न वाइज़ होता,
हमने उसको ख़ुदा कहा होता।

जो भी है वो है सिर्फ़ होने से,
ख़ुदी[2] न होती, न तन्हा होता।
*2*स्वाभिमान

बे-असर तो नहीं है तीर-ए-नज़र
और क्यों पास अस्लहा[3] होता।
*3*हथियार

पस-ए-हिजाब न अगर होते,
कोई हंगामा बारहा होता।

दफ़्न जो हो गए गुमनामी में,
कहाँ उनका है फ़ातिहा[4] होता।
*4*शांति पाठ

याद हमको वो कर रहे होंगे,
कुछ नहीं है तो क्यों शुबहा होता।

एक मैं ही नहीं सब कहते हैं,
अच्छा ही होता कम-कहा होता।

आदतन रहते हैं ख़फ़ा 'गौतम',
और क्या ज़्यादा सानहा[5] होता।
*5*हादसा

2: नहीं मिलते हैं दो किनारे हैं

नहीं मिलते हैं दो किनारे हैं,
दरिया बहते इसी सहारे हैं।

इश्क़ में लोग स्वाद लेते हैं,
अगरचे अश्क होते खारे हैं।

शब-ए-फ़िराक़ के सभी लम्हे,
हमने तन्हा कहाँ गुज़ारे हैं।

ज़िन्दगी होती नहीं ला-फ़ानी[1],
किसलिए करते इस्तिख़ारे[2] हैं।
[1]अमर [2]शुभ-अशुभ की जिज्ञाशा

हिज्र में अपना ग़म नहीं हमको,
बहुत उदास चाँद-तारे हैं।

सुब्ह-दम निकले लौटने के लिए,
और कहते रहे बंजारे हैं।

राख जैसे बुझे से चेहरे हैं,
दिल में जलते हुए अंगारे हैं।

मिल गए तो दुआ-सलाम किया,
निभाए जाते भाई-चारे हैं।

साथ जाते हैं लोग चार क़दम,
कूच के जब बजे नक़्क़ारे हैं।

काम कोई अटक गया होगा,
बाद मुद्दत के वो पधारे हैं।

पार एक रोज़ वो भी जायेंगे,
अभी बैठे जो इस किनारे हैं।

ज़बाँ पे लफ़्ज़ तल्ख़ हैं लेकिन,
नज़र में अलहदा इशारे हैं।

हाथ खाली हैं हमारे दोनों,
चाँद के पास सब सितारे हैं।

वक़्त ने ज़ख़्म सुखाए 'गौतम',
हमने नाखून से निखारे हैं।

3: कहा शोख़ से था दुआ दीजिए

कहा शोख़[1] से था दुआ दीजिए,
कहा शोख़ ने मुद्दआ[2] दीजिए।
[1]चंचल प्रिय [2]उद्देश्य

नहीं है सितम से शिकायत कोई,
ज़रा मोहलत-ओ-क़ुआ[3] दीजिए।
[3]सामर्थ्य

करें याद क्या हादसे जो हुए,
रहे याद ख़ुश-वाक़िआ[4] दीजिए।
[4]सुखद घटना

नहीं ज़ुल्मत-ए-शब[5] से कोई गिला,
बस उम्मीद की एक शुआ[6] दीजिए।
[5]कली रात [6]किरण

अगर तेरी शोहरत के बाइस हुए,
मेरे नाम कुछ इद्दआ[7] दीजिए।
[7]आरोप

हुआ जो हुआ ग़म न करिए कोई
अजी ख़ाक में जो हुआ दीजिए।

नहीं चारागर की ज़रूरत कोई,
मेरे दस्त से दस्त छुआ दीजिए।

फ़क़ीराना 'गौतम' की फ़ितरत हुई,
मरे तो कफ़न गेरुआ दीजिए।

4: दास्ताँ मुख़्तसर सुनानी थी

दास्ताँ मुख़्तसर[1] सुनानी थी,
तवील-तर[2] हुई, नादानी थी।
[1]छोटी/संक्षेप [2]लम्बी से लम्बी

ग़ौर से सुनते सुनते सोए हैं,
बंद आँखें थीं, नींद आनी थी।

किसलिए एतिबार हम करते,
उसके वादे में आना-कानी थी।

हासिल-ए-कुन[3] है दाग-ए-रुस्वाई,
मिली बरा-ए-मेहरबानी थी।
[3]हस्तगत

बात रूमानी थी या रूहानी,
दे रही सिर्फ़ ख़ुश-गुमानी थी।

मिले मानूस[4] अजनबी की तरह,
नहीं हमको हुई हैरानी थी।
[4]जाना-पह्चाना

तर्क-ए-दोस्ती नहीं की थी,
दोस्ती हमको आज़मानी थी।

कह दिया कुछ किसी दीवाने ने,
लिए अफ़्कार[5] हर पेशानी थी।
[5]चिंता की रेखाएँ

इश्क़ जब तक नहीं हुआ 'गौतम',
बड़ी आसान ज़िंदगानी थी।

5: बहुत बा-ख़बर है, वो बेदार है

बहुत बा-ख़बर है, वो बेदार[1] है,
सुबह रोज़ पढ़ता वो अख़बार है।
[1]होश

फ़िकर में उसे सारा दिन देखिए,
फ़क़त वो ही तन्हा ज़िम्मेदार है।

भरोसा वो ख़ुद पे भी करता नहीं,
अगरचे वही सबका मुख़्तार[2] है।
[2]अधिकार संपन्न

जुदा उसकी पहचान है भीड़ में,
जुदा उसका अंदाज़-ओ-अफ़्कार[3] है।
[3]तरीका और चिंतन

उसे ख़ौफ़ अपनों से होने लगा,
नहीं साथ उसके कोई यार है।

तवज्जोह[4] नहीं चारागर दे रहे,
किया इश्क़ ने उसको बीमार है।
[4]ध्यान

मुझे मेरा साया सा वो लग रहा,
वो लाचार भी है वो मिस्मार[5] है।
[5]तबाह हाल

बुलाए बिना जाता 'गौतम' नहीं,
अभी उसके कूचे में कुछ वक़ार[6] है।
[6]सम्मान

6: हमारा नाम गुमशुदा में दर्ज हो जाए

हमारा नाम गुमशुदा में दर्ज हो जाए,
हमारी ख़ैर-ख़बर एक फ़र्ज़ हो जाए।

ज़िंदगी सर्फ़-ए-बेजा[1] गई ख़सारे[2] में,
देर से ही सही थोड़ा ख़ुद-ग़र्ज़ हो जाए।
[1]व्यर्थ व्यय [2]हानि

बे-वजह वो नहीं अब हाज़िरी लगाते हैं,
चाहता हूँ मैं फिर मिलने की ग़र्ज़ हो जाए।

चारागर लेके हमें जा रहा कू-ए-जानाँ,
आरज़ू उसकी है तस्दीक़-ए-मर्ज़[3] हो जाए।
[3]रोग का पता

मिला अगर तो मेरा हाल-चाल पूछ लिया,
क्यों यही दोस्ती का तौर-ओ-तर्ज़ हो जाए।

ये तमन्ना है अगरचे कोई उम्मीद नहीं,
मेरा कलाम उस ज़बाँ से अर्ज़ हो जाए।

कशमकश जीने की लिए है ज़रूरी 'गौतम',
ज़िंदगी क़ैद है तो क़ैद-ए-फ़र्ज़[4] हो जाए।
[4]बंदी (जीवन) का कर्तव्य

7: दर्द बढ़ता रहा हफ़्ता-हफ़्ता

दर्द बढ़ता रहा हफ़्ता-हफ़्ता,
साँस चलती रही रफ़्ता-रफ़्ता।

देख अंदाज़-ए-बेरुख़ी सबकी,
रह गई दिल की बात ना-गुफ़्ता[1]।
[1]अनकही

कर लिया एतबार वादे पर,
और फिर हो गया दिल आशुफ़्ता[2]।
[2]दुखी

कभी मंज़िल की बात करते नहीं,
सफ़र में हैं मिले सफ़र-गिरफ़्ता[3]।
[3]यात्रा में व्यस्त

बेख़बर दरिया को मालूम नहीं,
बह गया कितना आब-ए-रफ़्ता[4]।
[4]बह गया पानी

दिल लगा मेरा दश्त-ओ-सहरा में,
अपने जैसे ही मिले वारफ़्ता[5]।
[5]आत्मविस्मृत

रहिए ख़ामोश उसकी महफ़िल में,
रखिए हर बात को दिल में ख़ुफ़्ता[6]।
[6]छिपा हुआ

आतिश-ए-इश्क़[7] है बला देखो,
कितना बेचैन है जिगर-तुफ़्ता[8]।
[7]प्यार की आग [8]फुंका दिल

किसलिए जाते सू-ए-मयख़ाना,
ख़याल-ओ-ख़्वाबों में हैं ख़ुद-रफ़्ता[9]।
[9]मस्त/डूबा हुआ

लौटकर आते नहीं हैं 'गौतम',
याद बस आते हैं अहद-ए-रफ़्ता[10]।
[10]गुजरा हुआ समय

8: गर एतिमाद से इल्ज़ाम लगाया जाए

गर एतिमाद[1] से इल्ज़ाम लगाया जाए,
ये इल्तिजा है सर-ए-आम लगाया जाए।
[1]भरोसा

जवाब दे गए होश-ओ-हवास आलिम[2] के,
तो एक बार अक़्ल-ए-ख़ाम[3] लगाया जाए।
[2]विद्वान [3]सामान्य ज्ञान

ख़लल[4] न डाले कोई नाला[5] नींद में उसकी,
ब-हर-मक़ाम[6] ये अहकाम[7] लगाया जाए।
[4]बाधा [5]चीख/रोना [6]हर स्थान पर [7]निर्देश

हिसाब-ए-सफ़र बीच राह में नहीं वाजिब,
हिसाब यह शब-ए-क़याम[8] लगाया जाए।
[8]रुकने की रात

बुलंद हौसला लेकर हैं तह-ए-बाम[9] खड़े,
कमंद-ए-ज़ुल्फ़[10] को अज़-बाम[11] लगाया जाए।
[9]मुंडेर के नीचे [11]बालों की रस्सी (लम्बे बाल) [11]मुंडेर से

दहर[12] बाज़ार है हर चीज़ यहाँ मिलती है,
शर्त बस ये है सही दाम लगाया जाए।
[12]संसार

माना अंदाज वक़्त का नहीं आसाँ 'गौतम',
फिर से अंदाज़ा-ए-इल्हाम[13] लगाया जाए।
[13]ऊपर वाले की इच्छा का अनुमान

9: फिर से कोई तोहमत डाली जाएगी

फिर से कोई तोहमत डाली जाएगी,
दुआ हमारी कब तक खाली जाएगी।

आज सभी के दिल में ये उत्सुकता है,
किसके दिल की ख़ाम-ख़याली[1] जाएगी।
[1]गलत अनुमान

सुनकर सब ज़रदार[2] बहुत बेचैन हुए,
जल्द मुफ़लिसों[3] की कँगाली जाएगी।
[2]धनी [3]निर्धन

भीड़ जा रही है फिर सू-ए-मय-ख़ाना,
बुझी तबीअत वहाँ संभाली जाएगी।

बे-हिजाब दीदार चाहने वालों की
पहले नीयत देखी-भाली जाएगी।

दीवाने बा-ख़ुशी और बदहाल हुए,
सुना किसी की बात न टाली जाएगी।

सब को शब भर नींद बराबर से आए,
क्या इसकी तरकीब निकाली जाएगी।

सफ़ में ख़ामोशी भी है, सरगोशी भी,
नज़र कहाँ आक़ा-ए-आली[4] जाएगी।
[4]बड़े व्यक्ति की दृष्टि

10: सिर पे सूरज ढोते-ढोते दिन गया

सिर पे सूरज ढोते-ढोते दिन गया,
अनमना ही सू-ए-घर[1] साकिन[2] गया।
[1]घर की ओर [2]रहने वाला

उँगलियों की पोर पे गिनते हुए,
बे-वजह बाज़ार वो हर-दिन गया।

शाम को लौटा बिना दीदार के,
कू-ए-जानाँ[3] हर सुबह लेकिन गया।
[3]प्रिय की गली

या-ख़ुदा उसको भी सोने दीजिए,
अल-सहर[4] बेचारा मोअज़्ज़िन[5] गया।
[4]बहुत सुबह [5]अज़ान देने वाला

वस्ल की चिंता न फ़िक्र-ए-हिज्र की,
रात भर वह जानिब-ए-बातिन[6] गया।
[6]अपने अंदर देखना

रात फिर बीती बदलते करवटें,
फिर यूँही हंगामा-हा-ए-दिन[7] गया।
[7]दिन का शोर

ग़म नहीं है उसके जाने का मगर,
बिन बताए किसलिए मोहसिन[8] गया।
[8]उपकार करने वाला

हाथ दो खाली रहे 'गौतम' तेरे,
सोचिए कब कैसे साल-ओ-सिन[9] गया।
[9]समय और उम्र

11: मानूस तक शहर में मुझे अजनबी लगा

मानूस[1] तक शहर में मुझे अजनबी लगा,
हैराँ हूँ अजनबी क्यों नहीं अजनबी लगा।
[1]परिचित

दैर-ओ-हरम पे बात वो करने लगा मुझसे,
ख़ामोश जब तलक था नहीं मज़हबी लगा।

नासेह पीछे पीछे था मय-ख़ाने तक आया,
कमबख़्त हमें बे-वजह हम-मशरबी[2] लगा।
[2]साथ पीने वाला

सहरा[3] में एक सराब[4] की ख़ातिर भटक रहा,
दीवाना वो पुर-अज़्मत-ए-तिश्ना-लबी[5] लगा।
[3]रेगिस्तान [4]मृगमरीचिका [5]प्यास से गर्वान्वित

मुद्दत के बाद आया अयादत के बहाने,
फ़ुर्सत से यार बैठा हुआ मतलबी लगा।

बीमार-ए-इश्क़ को मिली नसीहत-ए-बेजा,
उसको तबीब जो भी मिला मौलबी लगा।

हमने कलाम अपना सुनाया नहीं उसे,
संजीदा थे हम वो हमें ख़ंदा-लबी[6] लगा।
[6]हंसोड़

हम उसकी बारगाह[7] में कुछ कह नहीं पाए,
अंदाज़-ए-गुफ़्त-ओ-गू[8] वहाँ का साहबी लगा।
[7]दरबार (महफ़िल) [8]बात करने का तरीका

करते रहे रक़ीब से वो गुफ़्त-ओ-गू 'गौतम',
अंदाज़ उसका मिलने पर था मरहबी[9] लगा।
[9]स्वागत करता हुआ

12: लाख चाहा नहीं आदत जाती

लाख चाहा नहीं आदत जाती,
नहीं दीवाने की वहशत[1] जाती।
[1]पागलपन

बात आई समझ में दिल देकर,
इश्क़ में सिर्फ़ है लागत जाती।

ज़िक्र क़ातिल का नहीं करते हैं,
उसके चेहरे की है रंगत जाती।

मौत का लेते हम एहसान अगर,
ज़िंदगी जाती पर वक़अत[2] जाती।
[2]प्रतिष्ठा

गिला-गुज़ार[3] हो गए होते,
हाथ से सबकी रफ़ाक़त[4] जाती।
[3]शिकायत करने वाला [4]दोस्ती

कूचा-ए-जानाँ[5] से हरम[6] जाता,
सनम-परस्त[7] की इज़्ज़त जाती।
[5]प्रिय के घर से [6]मस्जिद [7]प्रिय की पूजा करने वाला

आके मक़्तल[8] में दोस्त क़ातिल से
कभी मांगी नहीं मोहलत जाती।
[8]वध-स्थल

कशमकश गर नहीं कोई होती,
उम्र जो जाती बे-लज़्ज़त जाती।

रू-ब-रू होते वो अगर 'गौतम',
जान क्यों मेरी ब-दिक़्क़त जाती।

13: एक लम्हा उम्र-भर ठहरा रहा

एक लम्हा उम्र-भर ठहरा रहा,
चंद यादों का लगा पहरा रहा।

क्या निहाँ है इज़्तिराब-ए-बहर[1] में,
बारहा साहिल से है टकरा रहा।
[1]समुद्र की बेचैनी में

गुफ़्तुगू मुमकिन नहीं होती कभी,
गर ज़बाँ पर ज़ोर-ए-फ़िक़रा[2] रहा।
[2]कटाक्ष का जोर

रू-ब-रू आने का वादा कर दिया,
जान पर दीवानों की ख़तरा रहा।

भर गया दिल कू-ए-जानाँ से कभी,
सैर करने के लिए सहरा रहा।

रिंद से मिलने गया नासेह क्यों,
लौट कर आया तो मुँह उतरा रहा।

उसके दिल में है बची उम्मीद कुछ,
आस्ताँ[3] पर यार के दोहरा रहा।
[3]ड्योढ़ी

सज गया तो पलकों पे मोती हुआ,
बह गया तो आब का क़तरा रहा।

हो गया फ़रज़ी तो 'गौतम' देखिए,
किस क़दर वह प्यादा है इतरा रहा

14: तमाशे कम नहीं हुए हैं न तमाशाई

तमाशे कम नहीं हुए हैं न तमाशाई,
बात होती है मगर होती नहीं गहराई।

मुझे मालूम नहीं होगा क्या तामीर[1] यहाँ,
खड़ी दीवार मिली, थी जहाँ भरनी खाई।
[1]निर्माण की योजना

वो शख़्स वादे पर करता है एतबार नहीं,
अगरचे रात भर है आँख नहीं झपकाई।

सबको आगाह संभलने के लिए करता था,
फिसलते देखा उसे थी नहीं जहाँ काई।

वक़्त-ए-दीदार भी पस-ए-हिजाब रहते हैं,
इश्क़ में हुस्न की देखी है हमने आक़ाई[2]।
[2]मन-मर्जी

याद करते ख़ुदा को देखा है दीवानों को,
काम नासेह का करता है बुत-ए-हरजाई।

लगाम आरज़ू-ओ-ख़्वाहिशों पे रखनी है,
सबक़ रोज़ाना सिखाती है यही मंहगाई।

हम नहीं दोस्तों से करते कभी शिकवा-गिला,
कभी ज़ुल्मत[3] में नहीं साथ देती परछाई।
[3]अँधेरा

जिसे मरने की भी फ़ुर्सत नहीं होती 'गौतम',
ऐसे मसरूफ़[4] से तो ज़िंदगी है बाज़-आई[5]।
[4]व्यस्त [5]तंग आना

15: बिना धुआँ किए सुलगता है

बिना धुआँ किए सुलगता है,
हवा मिले तो दिल दहकता है।

वक़्त गुज़रा हुआ नहीं आता,
वक़्त पर एक दिन बदलता है।

सुब्ह-दम निकल गया है सूरज,
आज देखें कहाँ पहुँचता है।

छाँव में जिसकी लोग बैठेंगे,
धूप में वो शजर झुलसता है।

बैठ जाता है गर उफन कर खूँ,
रगों में किसलिए उबलता है।

बर्क़[1] करती है काम लम्हे में।
अब्र क्यों देर तक गरजता है।
[1]आसमानी बिजली

कोई मजबूरी तो रही होगी,
वादा कर के अगर मुकरता है।

मुद्दा सुलझाने थे बैठे आलिम,
और ज़्यादा गया उलझता है।

दिन मे आराम कुछ हुआ 'गौतम',
दर्द फिर रात में उभरता है।

16: ख़फ़ा को और न ख़फ़ा करिए

ख़फ़ा को और न ख़फ़ा करिए,
मु'आमला रफ़ा'-दफ़ा' करिए।

आईना पोंछ कर है देख लिया,
ज़रा चेहरे को भी सफ़ा करिए।

ज़बान मुँह में सभी रखते हैं,
गुफ़्तुगू में ज़रा वक़्फ़ा[1] करिए।
[1]ठहराव (बोलते हुए रुकना)

जान जाए तो कू-ए-जानाँ में,
मक़ाम[2] इश्क़ में अरफ़ा[3] करिए।
[2]स्थान [3]ऊँचा

इश्क़ है इश्क़ कोई सौदा नहीं,
जिसमें उम्मीद-ए-नफ़ा करिए।

उससे दीवानों की गुज़ारिश है,
कम नहीं जोश-ए-जफ़ा[4] करिए।
[4]सताने का जूनून

मेहर[5] की दिल में आरज़ू है तो,
पेश पहले कोई तोहफ़ा करिए।
[5]कृपा

इश्क़ का मरज़ लग गया है तो,
नहीं उम्मीद-ए-शफ़ा[6] करिए।
[6]उपचार की कामना

ये सियासत ने सिखाया 'गौतम',
वादा तो करिए मत वफ़ा करिए।

17: लग रहा एक ख़्वाब देखा है

लग रहा एक ख़्वाब देखा है,
रू-ब-रू बे-नक़ाब देखा है।

यक़ीन तिश्ना-लबी[1] का करते,
चश्म लेकिन पुर-आब[2] देखा है
[1]प्यास [2]पानी से भरा

क्या वो होता है परेशान कभी,
क्या किसी ने जनाब देखा है।

दर-ओ-दीवार किसलिए देखें,
हमने ख़ाना-ख़राब[3] देखा है।
[3]बे-घर

सू-ए-मयख़ाना जाने वाले को,
हमने भी इज़्तिराब[4] देखा है।
[4]बेचैन

फिर किसी ने किया गिला शायद,
फिर उसे पुर-इताब[5] देखा है।
[5]गुस्से में

ये है महफ़िल या बारगाह[6] कोई,
बहुत अदब-आदाब देखा है।
[6]दरबार/अदालत

याद आता नहीं हमें 'गौतम',
कब उसे ला-जवाब[7] देखा है।
[7]निरुत्तर

18: अगर दीवाना हो जाए तो वीरानों में रहता है

अगर दीवाना हो जाए तो वीरानों में रहता है,
पहेली जैसा हो जाने पे अफ़सानों में रहता है।

सुनाई देती है आवाज़ रोने की मुझे हर शब,
मेरे अन्दर है कोई जो अज़ा-ख़ानों[1] में रहता है।
[1]शोक-गृह

मैं हूँ काफ़िर बरा-ए-मेहरबानी कोई समझा दे,
ख़ुदा है अलहदा कैसे जो बुतख़ानों में रहता है।

मोहब्बत ख़ास होगी रिंदों से नासेह को शायद,
वह उनके साथ सारी रात मयख़ानों में रहता है।

शिकायत हो गई है मेरे ही दिल को कोई मुझसे,
मुझे वो अनसुना करता है, बेगानों में रहता है।

बहारों में भी अब कोई चमन में गुल नहीं मिलता,
वो गमले में या जूड़े में या गुलदानों में रहता है।

कभी भी एक का होकर नहीं रहता कोई 'गौतम',
वजूद-ए-फ़र्द[2] इन्साँ का कई ख़ानों[3] में रहता है।
[2]अस्तित्व [3]हिस्सों में

19: दिल ने फिर आज बग़ावत की है

दिल ने फिर आज बग़ावत की है,
यार से मिलने की चाहत की है।

साथ नासेह को बिठाए है,
रिंद ने हद्द-ए-मुरव्वत[1] की है।
[1]अत्यधिक मेहरबानी

तबीब[2] जाने दे कू-ए-जानाँ,
ठीक तूने अगर सेहत की है।
[2]चिकित्सक

मुझे आवाज़ दी है मक़्तल[3] से,
मेरे क़ातिल ने इनायत की है।
[3]वध-स्थल

याद आया मेरा अदू[4] मुझको,
यार से फ़ैज़-ए-सोहबत[5] की है।
[4]शत्रु [5]संगत का आनंद

आरज़ू है वो देखकर जाए,
एक आशिक़ की जो हालत की है।

मिलने-जुलने का बहाना होगा,
सोचकर हमने अदावत[6] की है।
[6]दुश्मनी

ग़म नहीं क्यों मुझे दीवाना कहा,
बात उसने मेरी बाबत की है।

वह इसे शिकवा समझ लेते हैं,
बात हमने करी शोहरत की है।

निकल गए बिना सलाम किए,
मेरी हस्ती यूँ बे-इज़्ज़त की है।

मौत से है बची उम्मीद हमें,
ज़िंदगी ने बड़ी आफ़त की है।

साँस जाने को हो, वो आने को,
उस घड़ी ने बड़ी दिक़्क़त की है।

वक़्त-ए-हिज्र सोने वालों की,
उसने दुनिया से शिकायत की है।

उसको गिनता नहीं हूँ यारों में,
तौलकर जिसने दोस्ती की है।

लोग अब जानते हैं 'गौतम' को,
इश्क़ ने पूरी ये हसरत की है।

20: बे-हौसला तो हाथ की लकीर को देखें

बे-हौसला तो हाथ की लकीर को देखें,
पुर-हौसला हैं गर नई तदबीर को देखें।

बस सब्र करें काम निकल आने दें कोई,
फिर तल्ख़-ज़बाँ[1] में शहद-ओ-खीर को देखें।
[1]कड़वी बोली

अब आज की तस्वीर पर न तब्सिरा[2] करे,
कल की बनाई जा रही तस्वीर को देखें।
[2]टिप्पणी

माहौल बहुत सर्द वो होने नहीं देगा,
आतिश-नवा[3] है गर्मी-ए-तक़रीर[4] को देखें।
[3]आग भरी आवाज़ वाला [4]भाषण की गर्मी

ख़ुश हो रहे हैं लोग सभी ख़्वाब देखकर,
उनसे न कहें ख़्वाबों की ताबीर[5] को देखें।
[5]स्वप्न-फल

महफ़िल में गुफ़्तुगू हुई दीवाने को लेकर,
उसको अता करी गई तौक़ीर[6] को देखें।
[6]सम्मान

आते वो कैसे समय से बैठे थे मुसाहिब[7],
नाराज़ न हों बाइस-ए-ताख़ीर[8] को देखें।
[7]चापलूस [8]विलम्ब का कारण

गर्दन न जाने आज उतारी गई किसकी,
आलूदा-लहू[9] आब-ए-शमशीर[10] को देखें।
[9]रक्त से सनी [10]तलवार की धार

देखें उन्हें जो कह रहे यह दौर है बेहतर,
या उनके साथ बैठे गिरह-गीर[11] को देखें।
[11]असहमत

'गौतम' रहा एहसान सरसरी निगाह का,
क्यों ग़ौर से वो नुक़्ता-ए-हक़ीर[12] को देखें।
[12]एक छोटी सी वस्तु

21: फ़साना-गो सही लेकिन हूँ बे-लगाम नहीं

फ़साना-गो[1] सही लेकिन हूँ बे-लगाम नहीं,
किसी का ज़िक्र फ़साने में है पर नाम नहीं।
*1*कहानी सुनाने/लिखने वाला

हमारे सामने आने से जो कतराते हैं,
मिले जो दफ़अ'तन[2] करते दुआ-सलाम नहीं।
*2*अचानक

मैं आदतन चला जाता हूँ कू-ए-जानाँ में,
नज़र उठाता नहीं करता हूँ क़याम नहीं।

कोई भी आता नहीं छेड़ने तन्हाई में,
बहुत आराम है, दिल को मगर आराम नहीं।

किसी के काम नहीं आए आलिम-ओ-फ़ाज़िल[3],
बहुत ज़हीन हैं पर पास अक़्ल-ए-ख़ाम[4] नहीं।
*3*विद्वान/ज्ञानी *4*सामान्य ज्ञान

उसकी मंज़िल मेरी मंज़िल नहीं हो सकती है,
चले जो साथ हमारे गाम-दर-गाम[5] नहीं।
*5*कदम कदम मिलकर चलना

मैं अकेला ही नहीं एक भीड़ का हिस्सा,
मैं अकेला ही हूँ इस शहर में गुमनाम नहीं।

साथ रखते नहीं तस्वीर किसी की 'गौतम',
हमारे दिल में किसी तरह का औहाम[6] नहीं।
*6*अंध-विश्वास

22: इरादे जो किए थे उन पे अमल कर लेते

इरादे जो किए थे उन पे अमल कर लेते,
जो ख़्वाब देखे थे वो सारे दख़ल कर लेते।

ये लग रहा है रुक भी सकता था जाने वाला,
उसे गर रोकने की हम ही पहल कर लेते।

फिसलने देते नहीं वक़्त को कल हाथों से,
बिगड़ता काम नहीं पूरा ही कल कर लेते।

हम समझ पाए नहीं मौके की नज़ाकत को,
वगरना आप की तरह दल-बदल कर लेते।

मीर-ए-सफ़र[1] पे होता न भरोसा हमको,
तमाम रहज़नों को क्यों हम-बग़ल कर लेते।
[1]पथ प्रदर्शक

मेरी ख़ुद्दारी[2] अगर रोकती नहीं हमको,
सुर्ख़रू[3] लोगों की फिर हम भी नक़ल कर लेते।
[2]स्वाभिमान [3]सफल

कू-ए-जानाँ में अगर जाते शान-ओ-शौकत से,
यक़ीन है हमारा दिल वो मचल कर लेते।

उसे फ़ुर्सत नहीं है बात को समझने की,
सलाह लेने वाले सोच-सँभल कर लेते।

कोई उम्मीद नहीं करते हम क़यामत से,
हिसाब अपना अगर रोज़-ए-अजल[4] कर लेते।
[4]मृत्यु का दिन

ग़ौर से सबके तजरबात देखते 'गौतम',
इश्क़ न करते कोई और शग़ल[5] कर लेते।
[5]काम/गतिविधि

23: हर दिन है क़यामत और हर रात क़यामत

हर दिन है क़यामत और हर रात क़यामत,
लगता नहीं है होगा जुदा रोज़-ए-क़यामत।

बीमार चारागर से माँगता है यह दुआ,
यह दर्द-ए-इश्क़ हो मेरा ता-उम्र सलामत।

दरयाफ़्त कर रहे हैं रक़ीबों से मेरा हाल,
उसको हमारी फ़िक्र बहुत है, ज़हे-क़िस्मत[1]।
[1]मेर सौभाग्य

करता हमें भी ग़म-ज़दा है हाल-ए-सिकंदर,
खाली था दस्त आँखों में था आब-ए-नदामत[2]।
[2]आँसू

दीदार दिया करते हैं अब गाहे-ब-गाहे[3],
लाज़िम[4] है साथ में रहे दीवानों का बहुमत।
[3]कभी-कभी [4]आवश्यक

बस चार क़दम दूर तक दें साथ आख़िरी,
कुल चार यार हैं बहुत लेने को ये ज़हमत[5]।
[5]जिम्मेदारी

कहते हैं लोग रहते हैं महफ़ूज़ भीड़ में,
तन्हा निकलने वालों पर ही आती है शामत।

ज़रदार[6] की औकात समझ आ गई 'गौतम',
मुफ़लिस[7] ने रोटियों की लगाई सही क़ीमत।
[6]धनी [7]निर्धन

24: बहस हुई थी ज़ोर-दार, धार-दार नहीं

बहस हुई थी ज़ोर-दार, धार-दार नहीं,
एक हंगामा हुआ वो भी असरदार नहीं।

बोलने के लिए बेताब तो हर आलिम था,
बात सुनने को दूसरे की था तैयार नहीं।

तमाशबीन एक राय थे इस बारे में,
भला हुआ, थी किसी हाथ में तलवार नहीं।

तर्ज़-ए-गुफ़्तुगू से हो गया ज़ाहिर सबको,
बोलने वाले हक़ीक़त से ख़बरदार नहीं।

ग़ौर से बात को सुनने की है फ़ुर्सत किसको,
और ऐसा भी नहीं है, कोई बेकार नहीं।

पेश हमने किए सुबूत बे-गुनाही के,
जिरह वो करने लगा कौन गुनहगार नहीं।

हम भी कतराते हैं जाने से आज-कल 'गौतम',
उसकी महफ़िल में कोई जाता समझदार नहीं।

25: अमृत महोत्सव मनायें रंग-बिरंगा

अमृत महोत्सव[1] मनायें रंग-बिरंगा,
आओ लगायें शान से घर-घर में तिरंगा।
[1]भारत के स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षग-गाँठ का उत्सव

आजादी का चराग़ ये जलता रहे हरदम,
आँधी से बचायें इसे हम बनके पतंगा।

ख़ाक-ए-वतन से सबकी मोहब्बत बनी रहे,
जब तक रवाँ रहे ज़मीं पर आब-ए-गंगा।

ऐसी बनायें एकता की लोहे-सी दीवार,
हिम्मत न करे लेने की हमसे कोई पंगा।

भय अपने पड़ोसी से पड़ोसी को नहीं हो,
हो अमन-चैन मुल्क में न हो कहीं दंगा।

नफ़रत की बात करने नहीं देना किसी को,
आजाद घूमने न दें सियासी लफ़ंगा।

ये हिंद का जवान अपनी आन-बान है,
दुश्मन के लिए तार ये बिजली का है नंगा।

अवसर खुशी का सावधान भी है कर रहा,
जो जल रहे हैं डालने पायें न अड़ंगा।

घुट्टी में हम पिलायेंगे बच्चों को राष्ट्रभक्ति,
कर सकता नहीं राष्ट्रभक्त काम बेढंगा।

कहते हमेशा साफ़-साफ़ पाक बात हम,
धमकी कभी भारत को न दे मुल्क भिखमंगा।

है मुल्क अपना तान कर सीना चलें 'गौतम',
माहौल ख़ुशगवार, हर बंदा भला-चंगा।

26: दरियादिल मानेंगे शादाब करे

दरियादिल[1] मानेंगे शादाब[2] करे,
किसी दिन मेरा इंतिख़ाब[3] करे।
[1]बड़े दिल वाला [2]खुश [3]चयन

रोती सूरत नहीं अच्छी लगती,
नज़र दीवानों की बे-आब[4] करे।
[4]पानी रहित (अश्रु हीन)

उसकी रग-रग से हैं वाक़िफ़ लेकिन,
कभी चेहरा भी बे-नक़ाब करे।

पता बतला रहे क्यों दरिया का,
झील सी आँखों में ग़र्क़ाब[5] करे।
[5]डुबोना

ख़्वाब ही ख़्वाब दिखाए उसने,
कभी तो पूरा एक ख़्वाब करे।

वादा-ए-वस्ल करे या न करे,
जो भी करना है वो शिताब[6] करे।
[6]शीघ्र

दुआ लबों से नहीं दिल से दी,
ख़ुदा दुआ को असर-याब करे।

उसने दीवाना बनाया है तो,
सामने सबके वो ईजाब[7] करे।
[7]स्वीकार

इल्तिजा कर रहा है सौदाई[8],
बहुत सुकून है बेताब करे।
[8]पागल

बात समझा नहीं पाया 'गौतम',
ख़ुदा ही सबको नुक्ता-याब[9] करे।
[9]छोटी सी बात भी समझने वाला

27 की ज़ख़्म-चीं ने ज़ख़्म मिटाने की कोशिशें

की ज़ख़्म-चीं[1] ने ज़ख़्म मिटाने की कोशिशें,
वो कर रहा है कुछ तो छिपाने की कोशिशें।
[1]घाव से पपड़ी हटाने वाला

गो पस्त है पर हाथ में बाक़ी अभी जुम्बिश,
वह फिर करेगा अलम[2] उठाने की कोशिशें।
[2]झंडा

मरकज़[3] में कहानी के है किरदार उसी का,
करवा रहे हैं उससे ही अभिनय की कोशिशें।
[3]केंद्र

इस बार उखड़ने से बच गया तो है शजर,
आँधी करेगी फिर से गिराने की कोशिशें।

लगता है अभी तक वो आदमी है काम का,
करता रहा तबीब[4] बचाने की कोशिशें।
[4]चिकित्सक

होकर ख़फ़ा वो एक दिन हैरान हो गया,
सब लोग कर रहे थे मनाने की कोशिशें।

अफ़सोस है इस बात का मिलना नहीं हुआ,
ख़ुश हो गया, थी उसने की आने की कोशिशें।

कँधों पे उठाकर वही 'गौतम' को ले गए,
जो लोग कर रहे थे गिराने की कोशिशें।

28: ज़मीन ज़ेर-ए-पाँव सिर पे आसमान तो है

ज़मीन ज़ेर-ए-पाँव[1] सिर पे आसमान तो है,
गिला ख़ुदा से किसलिए वो मेहरबान तो है।
[1]पाँव के नीचे

हज़ारों ख़्वहिशें हैं दिल में, ख़्वाब आँखों में,
सफ़र में साथ ले के जाने को सामान तो है।

वो बे-ज़बान परेशान बे-वजह क्यों है,
जो बे-ज़बान है उसका बहुत सम्मान तो है।

मुआमला किया है दफ़्न नहीं मुंसिफ़ ने,
नई तारीख़ का उसने किया ऐलान तो है।

गुरूर करता है सिर पर नहीं एहसान कोई,
किया एहसान नहीं, ये भी इक एहसान तो है।

गो वो लाचार है बेजान उसे मत कहिए,
आग सीने में है और साँसों में तूफ़ान तो है।

ये ज़रूरी तो नहीं नाम-ओ-पता हो सबका,
कूचा-ए-जानाँ का दीवाना है पहचान तो है।

किसलिए दीजिए इल्ज़ाम किसी के सिर पे,
वक़्त का मारा है उसने दिया बयान तो है।

आप क्यों काम ले रहे हैं ज़ेहन से 'गौतम',
ग़म उठाने के वास्ते दिल-ए-नादान तो है।

29: यह भी एक नेक काम है जाएज़

यह भी एक नेक काम है जाएज़[1],
पेश कर साक़ी, जाम है जाएज़।
[1]उचित

दिन गुज़ारा है कशमकश में तो,
शाम को जाम-ए-शाम है जाएज़।

सलाम आए अदू[2] से चाहे,
जवाब में सलाम है जाएज़।
[2]शत्रु

बात गर दिल से समझने की है,
होश करना तमाम है जाएज़।

गिला किया है सर-ए-राह अगर
आप से इंतिक़ाम है जाएज़।

सब इसी बात पर झगड़ते हैं,
बस उसी का कलाम[3] है जाएज़।
[3]कथन

हुआ महफ़िल में बे-नक़ाब कोई,
होना फिर कोहराम है जाएज़।

अब्र क्यों इतना मेहरबान हुआ,
मेंढकी का ज़ुकाम है जाएज़।

सहर हुई है निकलिए घर से,
दिन में कुछ काम-धाम है जाएज़।

काम से आए हैं माना 'गौतम',
यार का एहतिराम[4] है जाएज़।
[4]सम्मान

30: सहाब भी मुझे लगता सराब जैसा है

सहाब[1] भी मुझे लगता सराब[2] जैसा है,
हमारा हाल भी ख़ाना-ख़राब[3] जैसा है।
[1]बादल [2]मृग-तृष्णा [3]बर्बाद घर वाला

पढ़ा है बारहा लेकिन समझ नहीं आया,
किया था दावा वो खुली किताब जैसा है।

वो बे-नक़ाब आफ़ताब-सा लगा मुझको,
मेरा ख़याल था वह माहताब जैसा है।

कहा है जो क़सीदा-गो[4] ने उसके बारे में,
मुझे यक़ीन हो गया वो ख़्वाब जैसा है।
[4]तारीफ़ में कविता करने वाला

ख़फ़ा नासेह लगा लौटकर मय-ख़ाने से,
रिंद उसको लगा आली-जनाब जैसा है।

सवाल पर सवाल बे-ज़बाँ से पूछे गए,
और माना गया वह ला-जवाब जैसा है।

एक दीवाने को दीवाना बुला कर देखा,
उसका अंदाज़ दाद-ए-इंतिख़ाब[5] जैसा है।
[5]चुनने के लिए धन्यवाद

हद्द-ए-तिश्नगी[6] इसको ही कहेंगे 'गौतम',
तिश्ना-लब[7] को लगा पानी शराब जैसा है।
[6]प्यास की सीमा [7]प्यासा

31: जब मिले तब ग़ैर की बातें हुईं

जब मिले तब ग़ैर की बातें हुईं,
कुछ बिना सर-पैर की बातें हुईं।

बहस सारा दिन हुई गर्मा-गरम,
रात शब-ब-ख़ैर[1] की बातें हुईं।
[1]शुभ-रात्रि

आईना आया हमारे हाथ जब,
हमसे अक्स-ए-ग़ैर की बातें हुईं।

साथ जब भी बैठे पंडित मौलवी,
फिर हरम-ओ-दैर की बातें हुईं।

कू-ए-जानाँ सुबह दीवाने गए,
रात बहर-ए-सैर[2] की बातें हुईं।
[2]पिकनिक

एक जंगल जैसा जब पाया शहर,
वाँ वहश-ओ-तैर[3] की बातें हुईं।
[3]जानवर और चिड़िया

वो अयादत के लिए आए मगर,
हमसे ग़म-ए-ग़ैर की बातें हुईं।

साथ बैठे थे मिलाने हाथ तो,
क्यों पुराने बैर की बातें हुईं।

बज़्म में ख़ामोश ही 'गौतम' रहा,
सिर्फ़ हर्फ़-ए-ग़ैर की बातें हुईं।

32: वो आ गए तो दिल मचलने लगा

वो आ गए तो दिल मचलने लगा,
वो चल दिए तो दम निकलने लगा।

ख़्वाब आँखों में उतर आने पर,
वक़्त-ए-सहर है फिसलने लगा।

बरा-ए-मेहरबानी[1] साक़ी ने,
दे दिया जाम दिल बहलने लगा।
[1]कृपा कर के

सलाह दी गई वर्ज़िश की उसे,
कू-ए-जानाँ में वो टहलने लगा।

दोस्तों ने किया किनारा जब,
दिल हमारा अदू[2] से मिलने लगा।
[2]शत्रु

हाथ आकर सुबह मिलाया था,
शाम होते ही दल बदलने लगा।

अपने ज़ख़्मों की नुमाइश करके,
राज़ वो अपने ही उगलने लगा।

आया नासेह जब मय-ख़ाने में,
रिंद ने देखा तो संभलने लगा।

हुआ सनम से जब ख़फ़ा 'गौतम',
हरम में सर-ब-सज्दा[3] मिलने लगा।
[3]सर झुका हुआ

33: रात बीती मेरी करवट लेते

रात बीती मेरी करवट लेते,
चौंकते जागते आहट लेते।

राब्ता[1] चाहते अगर रखना,
देखकर वो हमें न कट[2] लेते।
[1]संपर्क [2]रस्ते से हटना

कैफ़ियत[3] गू-मगू[4] की होने पर,
फ़ैसला वो नहीं झटपट लेते।
[3]परिस्थिति [4]असमंजस

हमें आती नहीं दुनियादारी,
हमारी राय क्यों मुँह-फट लेते।

उसकी महफ़िल में रसाई होती,
क़ाएदा[5] उसका अगर रट लेते।
[5]नियम

तपा[6] हुआ है उसे देखा नहीं
कभी पेशानी पे सिलवट[7] लेते।
[6]पका हुआ (मैच्यौर)

कोई मतलब नहीं निकलने पर,
ग़ैर की वो नहीं झंझट लेते।

दश्त-ओ-सहरा में भटकने वालों,
हमारे शहर में भटक लेते।

किताब-ए-माज़ी के सफ़्हे 'गौतम',
एक दिन तो उलट-पलट लेते।

34: वादा बोसीदा बार-बार किया

वादा बोसीदा बार-बार किया,
हमने बे-वजह एतिबार किया।

कूचा-ए-जानाँ में जाने के लिए,
दिल-ए-नादान को तैयार किया।

रोकने के लिए दीवानों को,
निकास उसने है दुश्वार किया।

रुख़ से पर्दा ज़रा सा सरका के,
उसने दोबारा तलबगार किया।

शिकायतें सभी को हैं उससे,
किसलिए आपने इज़हार किया।

हाल पूछा मेरे रक़ीबों का,
और भी ज़्यादा सोगवार किया।

काम कुछ आन पड़ा है हमसे,
हमको दीवानों में शुमार किया।

इश्क़ से तौबा करने वालों ने,
कम-से-कम जुर्म ये इक-बार किया।

वो नहीं आयेंगे मिलने 'गौतम',
किसलिए आपने इसरार किया।

35: सोना लगता नहीं आसाँ हमको

सोना लगता नहीं आसाँ हमको,
ख़्वाब करते हैं परेशाँ हमको।

देता कोई नहीं जवाब हमें,
कितने देने हैं इम्तिहाँ हमको।

कू-ए-जानाँ में भी पता करते,
ढूँढते हो यहाँ-वहाँ हमको।

आदतन तन के खड़ा रहने पर,
परखने आईं आँधियाँ हमको।

मोह मिट्टी का छूटता ही नहीं,
बुला रहा है आसमाँ हमको।

आज महफ़िल में दोबारा उसने,
सुनाई मेरी दास्ताँ हमको।

साँस लेने में हो रही दिक़्क़त ,
भारी लगने लगे एहसाँ हमको।

चैन से पीने दे हमें ज़ाहिद,
क्यों दिखाते हो दो-जहाँ हमको।

वक़्त ही मीर-ए-सफ़र है तो,
जहाँ ले जाए कारवाँ हमको।

दिल जलाते हैं दफ़्न करते नहीं,
आँख में चुभ रहा धुआँ हमको।

ज़ुल्मत-ए-ज़ुल्फ़[1] के असीर हुए,
रास आया न चराग़ाँ हमको।
[1]बालों का अँधेरा

चाँद पूरा फ़लक पे आने पर,
याद आती हैं रोटियाँ हमको।

गो उसे घर से निकाला हमने,
याद आती हैं बेटियाँ हमको।

भूल पाते नहीं अदू को हम,
याद करते नहीं याराँ हमको।

चार दिन के हैं मेहमान सभी,
लग रहे सारे मेज़बाँ हमको।

अब यहीं पर क़याम हो 'गौतम',
रास आने लगा वीराँ हमको।

36: हमारे लहज़े में शिद्दत नहीं थी

हमारे लहज़े में शिद्दत[1] नहीं थी,
शिकायत में कोई जिद्दत[2] नहीं थी।
*1*दम/ताकत *2*नवीनता

किया ख़ामोश था पास-ए-वफ़ा[3] ने,
हमें कुछ कहने में दिक़्क़त नहीं थी।
*3*प्यार में संकोच

तवज्जोह आदतन उसने नहीं दी,
मेरी अर्ज़ी तो बे-मिन्नत[4] नहीं थी।
*4*बिना अनुरोध/प्रार्थना

अगरचे[5] चाहता कोई नहीं था,
बहस वाँ कोई बे-हुज्जत नहीं थी।
*5*यद्यपि

वहाँ माहौल भी कुछ सर्द-ज़ा[6] था,
मेरी आहों में भी हिद्दत[7] नहीं थी।
*6*बढ़ती शीत *7*गरमी

नहीं की बात सीधे मुँह किसी ने,
कहें कैसे कि ये ख़िफ़्फ़त[8] नहीं थी।
*8*अनादर

ख़बर क्यों लेते हैं 'गौतम' की सबसे,
अगर दीवानों की क़िल्लत[9] नहीं थी।
*9*कमी

37: दरिया को नहीं परखा है पानी में पैठकर

दरिया को नहीं परखा है पानी में पैठकर,
सबने बहाव देखा है साहिल से बैठकर।

फैला हुआ कहाँ से कहाँ तक है आसमान,
नापेंगे अब नज़र से ही हर ओर देखकर।

गहरे से गहरा ज़ख़्म भी भर देता वक़्त है,
सुनकर न ज़ख़्म देखने लगना कुरेदकर।

जो शजर हैं लचके नहीं जड़ से उखड़ गए,
उसने सबक़ सिखाया कलाई उमेठकर।

दिल मेरा खो गया है कू-ए-यार में कहीं,
मिन्नत के बाद उसने लिखी रपट ऐंठकर।

हम ऊब गए इस क़दर दोनो जहान से,
तन्हाई में आ बैठे हैं ख़ुद को समेटकर।

आता नहीं है चैन इश्क़ में किसी तरह,
देखा खड़े होकर भी, लेटकर भी, बैठकर।

होती है नासमझ से दोस्ती वबाल-ए-जान,
यह बात मानने लगा 'गौतम' भी झेंपकर।

38: नगरी नगरी मस्त कलंदर

नगरी नगरी मस्त कलंदर,
ढूँढ रहे बापू के बंदर।

एक मिला तो हमने पाया,
ग़ैबत में लेता रस जीभर।

एक बाम के ऊपर देखा,
झाँक रहा आँगन के भीतर।

एक पेड़ से लटके लटके,
ख़ुश हो रहा बुराई सुनकर।

बापू वाले भूखे प्यासे,
कहीं खा रहे होंगे लंगर।

फ़िकर अगर कोई कर लेता,
कभी न जाते घर से बाहर।

समझाते हैं हमें मदारी,
ढूँढ रहे क्यों पागल बनकर।

गुमशुदगी की रपट लिखा दी,
थाने में 'गौतम' ने जाकर।

39: गुफ़्तुगू जान-बूझ कर नहीं कड़वी करते

गुफ़्तुगू जान-बूझ कर नहीं कड़वी करते,
अगर नाराज़ी को कुछ देर मुल्तवी[1] करते।
[1]टालते

हर एक मिसरे[2] पर गर मरहबा[3] कहा होता,
आपके नाम पर हम पूरी मसनवी[4] करते।
[2]पंक्ति [3]प्रोत्साहित [4]काव्य-ग्रंथ

अब तो रखते नहीं उम्मीद किसी से कोई,
ज़िंदगी तुझसे क्यों उम्मीद-ए-क़वी[5] करते।
[5]अधिक इच्छा

वक़्त कहने से न रुकता है न चलता है कभी,
किसलिए जानते हुए रवा-रवी[6] करते।
[6]हड़बड़ी

पास[7] जो होता उसे फ़र्त-ए-नज़ाकत[8] का,
सितम भी अपने वो अंदाज़-ए-लखनवी[9] करते।
[7]संस्कार का सम्मान [8]अत्यधिक कोमलता (दयालुता) [9]लखनऊ का विख्यात तौर-तरीका

हम नहीं देख रहे रहगुज़र में नक़्श-ए-पा,
तमाम उम्र गई दौर-ए-ख़ुदरवी[10] करते।
[10]अपनी राह चुनते/निर्णय करते

जानते हम अगर क़ीमत नहीं मिलती कोई,
इश्क़ में दिल किसी के पास न गिरवी करते।

अगर न जाते बिला-नाग़ा वहाँ पर वाइज़,
रिंद मयख़ाने को ही आलम-ए-अलवी[11] करते।
[11]स्वर्ग

साथ देते नहीं हैं दोस्त तुम्हारा 'गौतम',
रक़ीब किसलिए तुम्हारी पैरवी करते।

40: चश्म एहसास-ए-जुर्म से पुर-आब होते हैं

चश्म एहसास-ए-जुर्म से पुर-आब होते हैं,
बहुत आसानी से हम ग़र्क़-ए-आब होते हैं।

उसको देखा है सर-ए-राह हमने रोज़ाना,
बात दीगर है वो सर-ए-रिकाब[1] होते हैं।
[1]घोड़े की रिकाब में (सवार)

मिलने आते हैं आईने से इजाज़त लेकर,
अगरचे सामने पस-ए-नक़ाब होते हैं।

लोग आते नहीं हैं बाज़ इश्क़ करने से,
और कहते हैं इश्क़ में अज़ाब[2] होते हैं।
[2]कष्ट

अच्छे लगते नहीं रक़ीब मगर क्या करिए,
ख़ार के बीच ही पैदा गुलाब होते हैं।

अपने दीवानों से ये कह के मिलाते हैं हमें,
ऐसे होते हैं जो ख़ाना-ख़राब होते हैं।

बात पे अपनी लोग चीखते-चिल्लाते हैं,
ग़रज़ पड़े तो वही नुक्ता-याब[3] होते हैं।
[3]छोटी सी बात समझने वाला

दो-गुना होती है तकलीफ़ हमारी 'गौतम',
हमारे हाल पे जब ख़ुश जनाब होते हैं।

41: बे-वजह बे-झिझक बे-ख़ौफ़-ओ-बेताब मिले

बे-वजह बे-झिझक बे-ख़ौफ़-ओ-बेताब मिले,
एक दिन के लिए हर बशर बे-नक़ाब मिले।

एक शब झील के किनारे आप आ जायें,
चाँद का अक्स पहुँच में मुझे सर-आब[1] मिले।
[1]पानी की सतह पर

ऐसा कुछ सोचने में यार बुराई क्या है,
दहर[2] में जो भी मिले वो हमें शादाब[3] मिले।
[2]दुनिया [3]प्रसन्न

उठा के दस्त दुआ ग़ैर के लिए करते,
दुआ लगे किसी को आपको सवाब[4] मिले।
[4]पुण्य

बे-ज़बाँ लोगों से यह बात समझ में आई,
कोई ख़ामोश क्यों रहे अगर जवाब मिले।

तमाम उम्र का हिसाब रख नहीं पाए,
मान लेंगे मलक[5] से जो हमें हिसाब मिले।
[5]एक फ़रिश्ता (क़यामत के दिन सबका हिसाब करने वाला)

जहाँ खोया है, रास्ते वहाँ हमवार[6] हैं सब,
ढूँढने से वहाँ शायद ही इंक़िलाब मिले।
[6]चौरस

उसने मिलते ही तआरुफ़[7] मेरा पूछा 'गौतम',
छोड़ो, मुद्दत के बाद आज हैं जनाब मिले।
[7]परिचय

42: जाने क्या सोचकर उसने कोई वादा न किया

जाने क्या सोचकर उसने कोई वादा न किया,
तकाज़ा करने का हमने भी इरादा न किया।

रक़ीब थे मुक़ाबले में कू-ए-जानाँ में,
सारे हम-जुर्म[1] थे हमने उन्हें आदा[2] न किया।
*1*एक-सा गुनाह करने वाले *2*दुश्मन

उसे बचा के बढ़ा के बना दिया फ़रज़ी[3],
इश्क़ के खेल में हमने उसे प्यादा[4] न किया।
*3*वजीर *(शतरंज का मोहरा) 4*शतरंज का सबसे छोटा मोहरा

नई तारीख़ दी गई हमें सुनवाई की,
मेरे मुंसिफ़ ने फ़ैसला हस्ब-ए-वादा[5] न किया।
*5*रोज़ की तरह

उसको देखा सहेजते हुए क़तरा क़तरा,
तिश्ना-लब ने एक भी अश्क-उफ़्तादा[6] न किया।
*6*आँसू बहाना

जवाब देते हैं ना नूँ से और हाँ हूँ से,
कलाम[7] खुल के कभी साफ़-ओ-सादा न किया।
*7*बात

मेरी हस्ती से उसे कोई मोहब्बत होगी,
छीलते रोज़ हैं थोड़ा-सा बुरादा[8] न किया।
*8*चूर्ण *(लकड़ी का चूर्ण)*

सहेजने की नहीं चीज़ है माना हमने,
दर्द सीने में निहाँ[9] रक्खा कुशादा[10] न किया।
*9*छुपा *10*खुला कर देना

कू-ए-जानाँ से चले आए हैं लेकिन 'गौतम',
फ़ासला हमने एक हद्द से ज़्यादा न किया।

43: एक क़िस्सा-ए-तवील सुनाने के लिए है

एक क़िस्सा-ए-तवील[1] सुनाने के लिए है,
एक क़िस्सा-ए-कोताह[2] छुपाने के लिए है।
[1]लम्बी कहानी [2]छोटी कहानी

रोने के लिए है शब-ए-तन्हाई[3] ज़रूरी,
माहौल दिन का हँसने-हँसाने के लिए है।
[3]रात का एकांत

आशिक़ रहे ख़ामोश अगर ज़ख़्म-रेज़[4] है,
तमगा ये ज़माने को दिखाने के लिए है।
[4]बोलता घाव

हमवार[5] रास्तों में सफ़र का मज़ा कहाँ,
ठोकर सफ़र मक़बूल[6] बनाने के लिए है।
[5]चौरस [6]आनंद-दायक

देता नहीं गवाही किसी हादसे की वो,
आया शहर में खाने-कमाने के लिए है।

नासेह की आमद[7] बिला-नाग़ा है किसलिए,
मय-ख़ाना अगर पीने-पिलाने के लिए है।
[7]आगमन

उम्मीद नहीं हमको सुनेगा वह ग़ौर से,
मेरा कलाम जिसको लुभाने के लिए है।

यह दर्द सलामत रहे दिल में तेरे 'गौतम',
एहसान ये अपनों का उठाने के लिए है।

44: सोचते सोचते सुबह करते

रात भर सोचते, सुबह करते,
यह नहीं करते अगर यह करते।

दूर तक जाते यार के पीछे,
यार को रोकते सुलह करते।

सिलसिला बात का शुरू होता,
गर मुलाकात बे-वजह करते।

राय दोनो की एक करने को,
एक कोशिश किसी तरह करते।

फ़ैसले का किसी को हक़ देकर,
फ़ैसले पर नहीं जिरह करते।

दिल दिया है तो भरोसा रखिए,
ऐरे-ग़ैरे पे हैं शुबह करते।

आप मिलते कहीं नहीं तन्हा,
बात कब और किस जगह करते।

राब्ता इस तरह निभाया है,
तोड़कर जोड़कर गिरह करते।

आपसे हारता नहीं 'गौतम',
आपका दिल अगर फ़तह करते।

45: आगाह हो गई सहर चिड़ियों के शोर से

आगाह हो गई सहर चिड़ियों के शोर से,
लो जागने लगा शहर चिड़ियों के शोर से।

दस्तक तो दी गई थी सिर्फ कान पर मगर,
नज़रों पे भी हुआ असर चिड़ियों के शोर से।

खो देता है बशर वजूद ख़्वाब में खोकर,
अपनी उसे मिली ख़बर चिड़ियों के शोर से।

शब भर सुना था हिज्र के नालों को ग़ौर से,
घबराने लगा है क़मर[1] चिड़ियों के शोर से।

[1]चाँद

सब दिन से निपटने को हैं तैयार हो गए,
आई जो सदा-ए-ग़दर चिड़ियों के शोर से।

वह जाम-ए-शाम बेख़ुदी का था बना बाइस,
याद आ गया नफ़-ओ-ज़रर चिड़ियों के शोर से।

फिर दिन ढलेगा, आदमी क़याम करेगा,
फ़िलहाल हो शुरू सफ़र चिड़ियों के शोर से।

कहने के लिए तो नहीं औकात है 'गौतम',
होता है दहर पर असर चिड़ियों के शोर से।

46: ख़यालों पर लगा पहरा रहा है

ख़यालों पर लगा पहरा रहा है,
उसी मज़मून को दोहरा रहा है।

ज़रूरत है उसे राहत की शायद,
जो गुज़री है उसे बिसरा रहा है।

उसे देखा है ख़ुद से बात करते,
वो था बा-होश अब बौरा रहा है।

बुलाते हैं नहीं उसको वहाँ पर,
जहाँ हुक्काम का दौरा रहा है।

मिलेगे एक दिन फ़ुर्सत से आकर,
लबों पर यार के फ़िक़रा रहा है।

करी फिर हँसने की कोशिश-ए-बेजा,
जिगर में दर्द फिर गहरा रहा है।

पता पूछा था जिसका उसने सबसे,
वो उसको देखकर कतरा रहा है।

मिले हैं यार से जो ज़ख़्म उसको,
वो दिखलाते हुए इतरा रहा है।

उसे बाज़ी मुसलसल[1] खेलनी है,
बशर तो वक़्त का मोहरा रहा है।
[1]लगातार

खिलौना चाहिए उसको पुराना,
नई हर पेशकश ठुकरा रहा है।

अगरचे अब नहीं जाता है 'गौतम',
वो लेता बज़्म का ब्योरा रहा है।

47: दिल नहीं मानता इस बात को क़ुबूल करें

दिल नहीं मानता इस बात को क़ुबूल करें,
साथ में बैठकर फिर बहस-ए-फ़ुज़ूल करें।

ज़ेर-ए-बहस है मुद्दा नहीं मौजूद-उल-वक़्त[1],
किसलिए ख़ुद को हम अर्बाब-ए-उक़ूल[2] करें।
[1]वर्तमान से जुड़ा [2]बुद्धिमान

लोग कहते हैं इश्क़ काम है दीवानों का,
कोई क्यों शौक़िया ये काम ना-माक़ूल करें।

बात समझा रहे हैं सब तजरबा-कार हमें
सुर्ख़-रू होना है तो दिल को बे-उसूल करें।

फ़ालतू चीज़ की बाज़ार में क़ीमत है सिफ़र,
दिल की क़ीमत लगे फ़ौरन उसे वसूल करें।

रात तो ख़्वाबों में बेकार गुज़र जाती है,
दिन में अपने को किसी काम में मशग़ूल करें।

शौक़ दिल में लिए आए हैं अगर मक़्तल में,
कोई उम्मीद फिर क़ातिल से न मक़्तूल करें।

इसी को लोग समझदारी कहेंगे 'गौतम'
सबक़ मिले तो दोबारा न वही भूल करें।

48: मुद्दआ जिसके है ख़िलाफ़ वही क़ाज़ी है

मुद्दआ[1] जिसके है ख़िलाफ़ वही क़ाज़ी है,
ये मुसीबत ही हमारी वज्ह-ए-नाराज़ी है।
[1]मामला

एक बुत ने हमें पहले बना दिया काफ़िर,
और फिर कह दिया काफ़िर के लिए ग़ाज़ी[2] है।
[2]अल्लाह को न मानने वाले के विरुद्ध

आस्ताँ[3] पर रगड़ रहा जो बार बार जबीं,
वो ग़रज़-मंद है, सब कह रहे नमाज़ी है।
[3]चौखट

उसे तन्हाई में भी कहते नहीं हम अपना,
लिहाज[4] ही ख़ता-ए-इश्क़-ए-मजाज़ी[5] है।
[4]संकोच [5]मन ही मन प्यार करने की गलती

दर्ज हो एतराज़ सख़्त आज आशिक़ का,
नक़ाब में है क्यों मिलने को अगर राज़ी है।

पूछते हम नहीं, वो भी नहीं बताते हैं,
किसलिए आए अगर इतनी जल्द-बाज़ी है।

आप मे भी अगर है ज़ौक[6] सरफ़राज़ी[7] का,
देखिए पास क्या अंदाज़-ए-लफ्फ़ाज़ी[8] है।
[6]इच्छा [7]सम्मान [8]बात करने का हुनर

गुफ़्तगू करने की ये शर्त लगाई उसने,
सवाल पूछना ज़्यादा ज़बाँ-दराज़ी[9] है।
[9]बहस करना

आज के दौर की महफ़िल है बे-मज़ा 'गौतम',
कलाम सुनते नहीं होती फ़िक़रे-बाज़ी[10] है।
[10]कटाक्ष करना

49: राह लम्बी सही, गर जाती है दिल से दिल तक

राह लम्बी सही, गर जाती है दिल से दिल तक,
बात एक रोज़ पहुँच जाती है दिल से दिल तक।

शोख़ नज़रों से अगर देख ले जान-ए-जानाँ,
दफ़'अतन[1] बर्क़[2] दौड़ जाती है दिल से दिल तक।
[1]अचानक [2]बिजली

ज़बान की नहीं मोहताज है न क़ासिद की,
सदा-ए-दिल निकल के जाती है दिल से दिल तक।

बस तसव्वुर है बहुत और भरोसा है बहुत,
तड़प महसूस करी जाती है दिल से दिल तक।

गर्मी-ए-इश्क़ से पैदा जो ख़लिश[3] होती है,
रफ़्ता रफ़्ता वो फैल जाती है दिल से दिल तक।
[3]व्यग्रता

ख़्वाब जब साथ देखते हैं खुली आँखों से,
नक़्श[4] ताबीर[5] होती जाती है दिल से दिल तक।
[4]चिन्ह [5]प्रतिफल/साकार

देख लो जूड़े में गुलाब सजा कर 'गौतम',
प्यार की ख़ुश्बू बिखर जाती है दिल से दिल तक।

50: हम न मंज़िल के रहे न घर के

हम न मंज़िल के रहे न घर के,
हम भरोसे पे रहे रहबर के।

हम हुए संगसार तब जाना,
हमने पूजे हैं सनम पत्थर के।

बात करते नहीं रिहाई की,
असीर होंगे ज़ुल्फ़-ए-अबतर[1] के।
[1]अस्त-व्यस्त बाल

जिस्म परखा तबीब ने मेरा,
ज़ख़्म देखे नहीं हैं भीतर के।

प्यार का दावा करने वालों में,
कितने पंडित हैं ढाई आखर के।

काम लगता नहीं अदू का यह,
पीठ पर हैं निशान ख़ंजर के।

लग रहा है वो नामा[2] भेजेंगे,
गिन रहे हैं वो पर कबूतर के।
[2]पत्र

ज़िंदगी से कोई उम्मीद नहीं,
सोचते हैं कि देख लें मर के।

हमने सीखा नहीं हुनर 'गौतम',
किस तरह उड़ते हैं बिना पर के।

51 ये है हसीन हर समय हसीन रहेगा

ये है हसीन हर समय हसीन रहेगा,
ये हिंद का तिरंगा नामचीन[1] रहेगा।
[1]विख्यात

सब हैं स्वतंत्र मुल्क में स्वछंद नहीं हैं,
हर आदमी स्व-तंत्र के अधीन रहेगा।

अधिकार संविधान ने हमको दिया लेकिन,
कर्तव्य का भी बोध समीचीन[2] रहेगा।
[2]सामयिक/उपयुक्त

होता है गर्व शान से जब कहते हैं सैनिक,
यह राष्ट्र-ध्वज है, ये ईमान-ओ-दीन रहेगा।

वय से हैं पचहत्तर के हैं संसार में युवा,
इस मुल्क का भविष्य बेहतरीन रहेगा।

मुमकिन है हिंद फिर से बने सोने की चिड़िया,
हर आदमी गर मुल्क में अमीन[3] रहेगा।
[3]ईमानदार

हम देख नहीं पाएंगे शताब्दी उत्सव,
झंडा मगर हिमालय पे आसीन रहेगा।

हाथों में और दिल में तिरंगा रहे 'गौतम',
ता-उम्र ही खिसियाया पाक-चीन रहेगा।

52: राह में दोस्त भी मिल सकते हैं

राह में दोस्त भी मिल सकते हैं,
और अग़्यार[1] भी मिल सकते हैं।
[1]अपरचित

रेंगकर चलिए, बचिए ठोकर से,
अगरचे घुटने भी छिल सकते हैं।

ख़ार को पानी पिलाते रहिए,
साथ में फूल भी खिल सकते हैं।

न सुनें हाल-ए-दिल तो बेहतर है,
हौसले आपके हिल सकते हैं।

साफ़-गोई से पेश आने पर,
जनाब भी हो ख़जिल[2] सकते हैं।
[2]लज्जित

वो है ख़ामोश सामने 'गौतम',
ज़बान आप भी सिल सकते हैं।

53: है इसके ही अस्तित्व से अस्तित्व हमारा

है इसके ही अस्तित्व से अस्तित्व हमारा,
खिलता रहे तिरंगे से व्यक्तित्व हमारा।

यह आन-बान-शान से उड़ता रहे ऊँचा,
इसकी सुरक्षा करना है दायित्व हमारा।

साझी ये धरोहर है जो सौंपी गई हमको,
बलिदानों के दम पर बना कृतित्व हमारा।

इस झंडे के नीचे खड़े है सिर्फ भारतीय,
सदियों ज़माना देखे सहअस्तित्व हमारा।

पहचान हो अभिमान हो ईमान हो सबका,
हर दौर में करता रहे नेतृत्व हमारा।

इसको नमन करेंगे हम मन-प्राण से 'गौतम',
करता ये विश्व में है प्रतिनिधित्व हमारा।

54: तन्हा नहीं हैं, साथ है हुजूम-ए-रहगुज़र

तन्हा नहीं हैं, साथ है हुजूम-ए-रहगुज़र[1],
मालूम किसी को नहीं कितना बचा सफ़र।

[1]राह की भीड़

एक लम्हा बे-ख़याल कभी बीतता नहीं,
कोई ख़याल देर तक रहता नहीं मगर।

क्या बात हुई आज है बे-ज़ार-ओ-परेशाँ[2],
लगता नहीं है दीन-ओ-दुनिया से बे-फ़िकर।

[2]दुखी और बेहाल

जीने की कशमकश में है मशग़ूल रात-दिन,
मायूस ज़िंदगी से नहीं आज भी बशर।

मिलता नहीं जवाब किसी को सवाल का,
आये किधर से हम यहाँ जाएंगे हम किधर।

होती है सहर वक़्त से होती है शाम भी,
कटता नहीं है वक़्त तो होते हैं बे-सबर।

बस एक शिकायत करी, झंझट खड़ी हुई,
आने लगे हैं आजकल घर पर मेरे अफ़सर।

कुछ काम आ पड़ा है आपसे उसे 'गौतम',
महफ़िल में आपका वो लेते नाम हैं अक्सर।

55: रेवड़ी वह बाँटने आया चलो खाने चलो

रेवड़ी वह बाँटने आया चलो खाने चलो,
खाने वाले गा रहे हैं आप भी गाने चलो।

ऐरे-ग़ैरे ले रहे हैं बढ़ के इस सौगात को,
मुफ़्त है, लगने नहीं हैं आने-दो-आने, चलो।

अच्छे अच्छे पंक्ति में बैठे इसी के वास्ते,
आप क्योंकर हैं झिझकते जो मिले पाने चलो।

झुनझुनों गुब्बारों से होती हैं बेहतर रेवड़ी,
बच्चा बनकर आज अपने दिल को बहलाने चलो।

वादा करके जो नहीं फिर रेवड़ी हैं बाँटते,
'आपको देखेंगे अगली बार' धमकाने चलो।

दीन और ईमान की बातें सभी बेकार हैं,
लो जो मस्जिद से मिले फिर हँस के बुतख़ाने चलो।

डर है कल कुछ बाँटने को पास में होगा नहीं
बस बचेंगे याद करने को ये अफ़साने, चलो।

हर गली हर ठौर पर भंडारा है जब तक खुला,
बैठ कर खाने नहीं तो बाँध कर लाने चलो।

रेवड़ी के बाँटने पर रोक लग सकती है कल,
वह लुटाने को है तत्पर आप हथियाने चलो।

उस पे पाबंदी है 'गौतम' टैक्स जो है दे रहा,
वह अगर टोके या माँगे उसको ले थाने चलो।

56: दिल्लगी छोड़कर संजीदगी से बात करें

दिल्लगी छोड़कर संजीदगी से बात करें,
एक मौका मिले तो ज़िंदगी से बात करें।

साफ़गोई से है गुरेज़ तो ख़ामोश रहें,
दलील देके न पेचीदगी से बात करें।

हमें तो रस्म-ए-अयादत से कोफ़्त होती है,
देखने आएँ फिर हैरानगी से बात करें।

इश्क़ की दास्तान में मज़ा नहीं होगा,
सारे किरदार अगर सादगी से बात करें।

बात कुछ कहने की हसरत तो है दीवाने में
आप गर बाज़ आएं ख़ंदगी[1] से, बात करें।
[1]हँसी

अदू करें तो नहीं बात बुरी लगती है,
हमारे यार क्यों पोशीदगी[2] से बात करें।
[2]दुराव/छुपाव

तुनक-मिज़ाजी हसीनों की है अदा माना,
कभी दीवानों से कुशादगी[3] से बात करें।
[3]खुलापन

ख़ुलूस-ए-इश्क़[4] के ये हैं अदब-आदाब नहीं,
किसी के इश्क़ में बे-पर्दगी[5] से बात करें।
[4]प्यार में ईमानदारी [5]निर्लज्जता

बे-झिझक, बे-हिचक दरपेश[6] हों कभी 'गौतम',
एक दिन ही सही वो उम्दगी[7] से बात करें।
[6]प्रस्तुत [7]खरापन

57: याद आई यार की और चश्म दरिया हो गए

याद आई यार की और चश्म दरिया हो गए,
देखते ही देखते अहवाल-ए-गिरिया[1] हो गए।
[1]दु:ख का प्रतीक

मौत से उम्मीद रखकर ज़िन्दगी जीते रहे,
अपने ही पिंजर[2] में तन्हा क़ैद चिड़िया हो गए।
[2]कंकाल (अंजर-पंजर)

अज़ल[3] से लेकर अजल[4] तक सफ़र की मानूसियत[5],
सबको समझाने की ख़ातिर बशर ज़रिया हो गए।
[3]अनादि काल [4]मृत्यु काल [5]सुपरिचय

ऐसे भी देखे हैं कुछ हालात के मारे हुए,
शब में यूँ टूटे के सबके जिस्म बोरिया[6] हो गए।
[6]बिछावन (गद्दा)

ख़्वाब जन्नत का ख़ुदा से जोड़ता दिल को रहा,
वक़्त की ठोकर लगी तो फिर दहरिया[7] हो गए।
[7]नास्तिक

देखें क्या कहता है अब शेख़-ए-हरम[8] इस बात पर,
लोगों को कहते सुना है ख़ुदा रुपया हो गए।
[8]मस्जिद का पीर

अलहदा सबका नज़रिया इश्क़ पर 'गौतम' रहा,
यक-ब-यक अल्फ़ाज़-ए-बेजा-नज़रिया[9] हो गए।
[9]गलत विचार वाले शब्द

58: मिलता कोई गवाह नहीं और न क़ातिल

मिलता कोई गवाह नहीं और न क़ातिल,
पड़ताल[1] से शहर में कुछ होता नहीं हासिल।
[1]पूछताछ

इंसाफ़ की उम्मीद में सफ़ में खड़े हैं अब,
मुंसिफ़[2] ने बारगाह[3] में रख ली मेरी फ़ाइल।
[2]न्यायाधीश [3]न्यायालय

हमवार[5] राह की तलाश में उलझ गए,
समझे ये देर से नहीं आसान है मंज़िल।
[5]समतल (आसान)

नासेह न दरपेश[6] मसाइल[7] नए करें,
करने हैं ग़र्क़[8] जाम में रिंदों को मसाइल।
[6]प्रस्तुत [7]मुद्दा (विषय) [8]डुबाना

करने लगा है बात वो अब अपने आप से,
बीमार-ए-इश्क़ का ये इस्तिआ'रा[9] मुस्तक़िल[10]।
[9]लक्षण [10]स्थायी

कुछ यार हैं अदू भी हैं घेरे हुए हमें,
पहचान मे आ जाएंगे सारे दम-ए-मुश्किल[11]।
[11]कठिन समय

दैर-ओ-हरम[12] में भीड़ फ़क़ीरों की है जुटी,
सब ग़ौर कर रहे हैं किसे क्या हुआ हासिल।
[12]मंदिर-मस्जिद

ये इश्क़ के सबक़ हैं, ये आसाँ नहीं 'गौतम',
आक़िल[13] को बना देते हैं ये सामा-ए-आक़िल[14]।
[13]समझदार [14]समझदारी/समझदारों की बात सुनने वाला

59: दरिया क्यों डूबता समंदर में

दरिया क्यों डूबता समंदर में,
कुछ इरादा निहाँ है अंदर में।

जिसे मालूम हो वो बतलाए,
क्या गया दस्त-ए-सिकंदर में।

संभालकर लिखें बही-खाता,
हिसाब देना होगा महशर[1] में।
[1]प्रलय के दिन

शैख़-ओ बरहमन के चक्कर में,
हम हरम में गए न मंदर में।

सर-ब-सजदा[2] हुआ है दीवाना,
जब लगा संग-ए-राह ठोकर में।
[2]सर झुकाना

है नए साल से उम्मीद मगर,
दिन बचे काफ़ी हैं कैलेंडर में।

कोशिशें कर के देख ले क़ातिल,
बू-ए-ख़ूँ तो रहेगी ख़ंजर में।

नाम उसका अगर लिया 'गौतम',
रू-ब-रू होंगे नए तेवर में।

60: किसी दीवाने को ख़फ़ा न किया

किसी दीवाने को ख़फ़ा न किया,
उसने वादा किया वफ़ा न किया।

सब्र करना है सिखाया उसने,
किसी को तालिब-ए-ईफ़ा[1] न किया।
[1]वचन याद दिलाने वाला

लोग कहते हैं उसके बारे में,
एक भी सौदा बे-नफ़ा न किया।

ढूँढने से नहीं मिला हमको,
जिसको हँस कर कभी दफ़ा न किया।

बू-ए-ख़ूँ है पसंद क़ातिल को,
उसने ख़ंजर कभी सफ़ा न किया।

वो अयादत के लिए जाते हैं,
किसी के घर कभी क़िफ़ा[2] न किया।
[2]ठहरना

मानते वो नहीं उसे आशिक़,
गिला जिसने रफ़ा-दफ़ा न किया।

अपने दीवानों में कभी 'गौतम',
किसी को आला-ओ-अरफ़ा[3] न किया।
[3]प्रमुख श्रेष्ठतर

61: ग़म ग़लत करने को पी लेते हैं

ग़म ग़लत करने को पी लेते हैं,
मुर्दा दिल इस तरह जी लेते हैं।

कौन-सा ज़ख़्म दिया है किसने,
खोलकर देखकर सी लेते हैं।

ग़ैर का लेते हैं एहसान नहीं,
हम सबक़ यारों से ही लेते हैं।

अपने हिस्से का है, कमाया है,
जो भी हम नेकी-बदी[1] लेते हैं।
[1]अच्छा-बुरा

अपने अपने से सब लगे हमको,
रोटी जो रूखी-सूखी लेते हैं।,

हाज़िरी देने वाले कहते हैं,
कभी कभी वो मिल भी लेते हैं।

दुआ या बद-दुआ अज़ीज़ों की,
जो मिले राज़ी-ख़ुशी लेते हैं।

उसे कहते हैं रहमदिल 'गौतम',
बे-रुख़ी से जो अर्ज़ी लेते हैं।

62: एक मक़बूल-सी ख़ता करते

एक मक़बूल-सी[1] ख़ता करते,
वो इजाज़त अगर अता करते।
[1]प्यारी-सी

रिश्ता तोड़ा न होता यारों ने ,
क्यों रक़ीबों से राब्ता[2] करते।
[2]मेल-मिलाप

रब ने दौलत अता करी है तो,
साथ ही ज़ौक-ए-अता[3] करते।
[3]बांटने का मन

रहे मसरूफ़ दुनियादारी में,
थोडे फ़ुर्सत के पल अता करते।

वो सितम को करम बताते गर,
क़बूल बे-ख़ता ख़ता करते।

फ़लक की बात करने वालों को,
ज़मीं को देखा लापता करते।

हम नहीं जाएंगे उसके दर पर,
वो फ़क़ीरों को हैं चलता करते।

देर तक उसने बहस की हमसे,
काश दरपेश न नुक़्ता करते।

कभी 'गौतम' की वो ख़बर लेते,
हम भी अपना अता-पता करते।

63: ख़्वाब में उसने आना छोड़ दिया

ख़्वाब में उसने आना छोड़ दिया,
इस तरह रिश्ता बचा तोड़ दिया।

सफ़र हम-वार[1] ख़त्म होने पर,
सफ़र को उसने नया मोड़ दिया।
[1]समतल/चौरस (आसान)

साथ निकला जो पकड़कर बाजू,
उसने बाजू मेरा मरोड़ दिया।

फिर पसीने से हुआ तर-दामन,
धूप ने जिस्म फिर निचोड़ दिया।

नसीब ख़स्ता देखकर मेरा,
देने वाले ने हाथ जोड़ दिया।

ज़िन्दगी से नहीं उम्मीद कोई,
इसने ग़म-ख़्वार भी हँसोड़ दिया।

इश्क़ में उसके क्यों बर्बाद हुए,
मामला मेरे ही सिर फोड़ दिया।

वक़्त जब निकला वसूली के लिए,
सूद पर सूद उसने जोड़ दिया।

क़द से छोटी हमें चादर देकर,
हमको हर रात ने सिकोड़ दिया।

उसने चुप रह के लाजवाब किया,
सवाल उसको था बे-जोड़ दिया।

रात भर महल बनाए 'गौतम',
सहर ने ईंट-ईंट तोड़ दिया।

64: सुबह-सुबह सब घर से निकले सू-ए-मंज़िल-ए-मौहूम

सुबह-सुबह सब घर से निकले सू-ए-मंज़िल-ए-मौहूम[1],
राहगुज़र के साथ क़दम का रिश्ता लाज़िम-ओ-मलज़ूम[2]।
[1]अस्पष्ट लक्ष्य की ओर [2]स्थायी

दरिया सूखे हुए रू-ब-रू थे, साहिल पर क्यों रुकते,
ख़ुश्क-लबाँ[3] सहरा में आ बैठे बनके क़ल्ब-ए-महकूम[4]।
[3]सूखे होंठ (प्यासे) [4]गुलाम दिल

वाइज़ की सोहबत में जिस दिन बैठे देखा साक़ी को,
रिंद उठ गए मय-ख़ाने से केवल जाम नज़र से चूम।

ताली बजा रहे थे मिलकर जलसे में जो थे मौजूद,
पूछ रहे थे फिर आपस में जलसे का क्या था मफ़्हूम[5]।
[5]प्रयोजन

बात उजाले की करने में सर्फ़ कर दिया सारा दिन,
रात हुई तो लोग खोजने निकले हैं चराग़ मादूम[6]।
[6]गायब

आता है इल्ज़ाम बेचारे क़ातिल पर ही क्यों हरदम,
ख़ुद मक़्तूल चले आते हैं मक़्तल में बनकर मासूम।

अब कोई उम्मीद किसी को नहीं किसी से है 'गौतम',
मज़ा दे रहा है महफ़िल में सबको क़िस्सा-ए-मज़लूम[7]।
[7]सताए हुए की कहानी

65: जुस्तजू है उसे जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं

जुस्तजू[1] है उसे जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं,
कमी लगी उसे जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं।
[1]तलाश

गिला किए बिना कटता नहीं कोई लम्हा,
ख़ता गिनी गईं जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं।

ख़याल-ए-मौत से माइल[2] नहीं मिला कोई,
ख़फ़ा है ज़िन्दगी जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं।
[2]आकृष्ट

नहीं उम्मीद-ए-शिफ़ा[3] दी चारागर ने कभी,
काम आई दुआ जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं।
[3]सेहत की आशा

नाम उसने नहीं लिया किसी का महफ़िल में,
बात करते रहे जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं।

सुना है रहते परेशान आजकल वो हैं,
याद आने लगी जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं।

एक उम्मीद से वाबस्ता[4] क्यों रहा 'गौतम',
ख़बर लेते रहे जिसकी वो कहीं मैं तो नहीं।
[4]संबंधित

66: उसकी ख़ामोशी में पोशीदा मायने हैं कई

उसकी ख़ामोशी में पोशीदा मायने हैं कई,
और लफ़्ज़ों के भी मतलब जुदा गिने हैं कई।

भीड़ तो आज भी जुटती है उसके कूचे में,
भीड़ को देखकर ज़ाहिर है अनमने हैं कई।

मुतमइन होना चाहते हैं अपनी सूरत से,
साथ में रखते हमेशा वो आइने हैं कई।

उसकी महफ़िल में बा-उम्मीद गए दीवाने,
सुना है साथ आज लाए झुनझुने हैं कई।

चारागर आजकल मरीज़ को समझाते हैं,
अभी तो आपके होने मुआइने[1] हैं कई।
[1]परीक्षण

सितम की या करम की उससे बात क्या करते,
हमारे जैसे खड़े उसके सामने हैं कई।

ठीक से कोई उसे जानता नहीं 'गौतम',
उसके बारे में अभी क़िस्से अनसुने हैं कई।

67: तन्हाई में घर के अंदर तन्हा दिल घबराता है

तन्हाई में घर के अंदर तन्हा दिल घबराता है,
घर के कोने-कोने से कोई आवाज़ लगाता है।

मेरे घर तो नहीं हवा का झोंका आया मुद्दत से,
कौन है जो मेरे घर के दरवाजे को खटकाता है।

कू-ए-यार जा रही सीधी हरम और मयख़ाने तक,
इसी बहाने हर दीवाना घर से आता-जाता है।

ध्यान नहीं देता है कोई कभी किसी के रोने पर
उसे ग़ौर से देख रहे जो हँसता और हँसाता है।

अंधी दौड़ लगाना उसकी फ़ितरत में शामिल होगा,
ठोकर खाकर गिरने वाला उठ के ठोकर खाता है।

बे-ज़बान की बातों का दे पाता नहीं जवाब कोई,
लोग नज़र नीची करते हैं वो जब नज़र उठाता है।

चलते-चलते थकने वाला मौका पाकर लेटेगा,
लेटे-लेटे थकने वाला बैठ-बैठ सुस्ताता है।

बहुत देर तक नहीं ख़फ़ा रह पाता है उससे 'गौतम',
अपनों से कैसी नाराज़ी ख़ुद दिल को समझाता है।

68: भीड़ भरी सड़कों में वो जाना-पहचाना लगता है

भीड़ भरी सड़कों में वो जाना-पहचाना लगता है,
एक अजनबी चेहरे से मुझको दीवाना लगता है।

आदत से मजबूर बहुत मैं एतबार कर लेता हूँ,
हालाँकि हर वादा हमको नया बहाना लगता है।

देख रहे हैं महफ़िल में वह सबको तिरछी नज़रों से,
इंतिज़ार यह सबको है किस जगह निशाना लगता है।

रोज़ाना दो-चार हादसे हम पर गुज़र गए ऐसे,
सूरत से हर भोला-भाला हमें सयाना लगता है।

आवाज़ों के जंगल में आवाज़ किसी को क्या देते,
बात किसी के कानों तक मुश्किल पहुँचाना लगता है।

नहीं मिला कोई भी हमको जिसका कोई दर्द नहीं,
लेकिन सबको अपना-अपना दर्द यगाना लगता है।

मिला बाद मुद्दत के फिर भी बोल रहा जल्दी में हूँ,
'गौतम' जिगरी दोस्त हमें ऐसा बेगाना लगता है।

69: हमें मयख़ाने में भी दौर-ए-ख़राब मिले

हमें मयख़ाने में भी दौर-ए-ख़राब[1] मिले,
हमारे आने पर साक़ी हैं बे-शराब[2] मिले।
[1]बुरा समय [2]बिना शराब के

मिल नहीं पाते हैं पर याद रोज़ करते हैं,
मान लें कैसे हमें दोस्त हैं नायाब मिले।

दवा के बदले दुआ-ओ-सलाह देते हैं,
हकीम ऐसे दिल-अज़ीज़ दस्तियाब[3] मिले।
[3]उपलब्ध

जो सुबह-शाम पेश करते हैं सलाम उसे,
वो समझदार लोग हमको कामयाब मिले।

नज़र झुका के सुनाया था हाल-ए-दिल हमने,
ख़फ़ा-ख़फ़ा से बे-वजह हमें जनाब मिले।

मुझे यक़ीन है लेता है वो ख़बर मेरी,
मगर कभी तो हमारे लिए बेताब मिले।

कौन दीदार-ओ-करम का इंतज़ार करे,
सितम गवारा हमें है मगर शिताब[4] मिले।
[4]जल्दी

कलाम हम नहीं कहते हैं आजकल 'गौतम',
क़सीदा-गो[5] हमें महफ़िल में असर-याब मिले।
[5]तारीफ़ करने वाले

70: ख़बर मिली है उसके आने की

ख़बर मिली है उसके आने की,
ख़ुश-नसीबी ग़रीब-ख़ाने की।

पास दिल के ज़ेहन नहीं होता,
सोचते क्यों उसे समझाने की।

कुछ सबक़ तजरबात देते हैं,
चाह है सीखने-सिखाने की।

नाम लेते हैं लोग क़ातिल का,
एक तमन्ना है आजमाने की।

ख़्वाब से भारी हो रही आँखें,
नहीं कोशिश करें जगाने की।

चाहकर भी हँसी नहीं आती,
क्या ज़रूरत है गुदगुदाने की।

मसअले दिल के सुनाते कैसे,
बात होती है आब-ओ-दाने की।

भीड़ में चलिए संभलकर 'गौतम'
सबको जल्दी है आने-जाने की।

71: ख़्वाब में ही विसाल हो जाता

ख़्वाब में ही विसाल हो जाता,
ग़रीब मालामाल हो जाता।

नेकी करके न फ़रिश्ता बनते,
आदमी बहरहाल हो जाता।

बात जन्नत की बताते पीकर,
शेख़ साहब कमाल हो जाता।

लिहाज़-ओ-पास[1] न होता कोई,
पैदा लुत्फ़-ए-मक़ाल[2] हो जाता।
[1]संकोच और सम्मान [2]जबान का आनंद

पस-ए-पर्दा अगर नहीं रहते,
राज़ खुलते बवाल हो जाता।

सवाल का जवाब दे देते,
नया पैदा सवाल हो जाता।

ग़ौर से देखा आईना होता,
साफ़ सब ख़द्द-ओ-ख़ाल[3] हो जाता।
[3]शक्ल-ओ-सूरत

रहा बा-होश हमेशा 'गौतम'
वर्ना कोह-ए-वबाल[4] हो जाता।
[4]मुसीबत का पहाड़

72: ख़बर हैं अख़बार में वहशत लिए

ख़बर हैं अख़बार में वहशत[1] लिए,
पढ़ रहे हैं लोग सब दहशत[2] लिए।
[1]पागलपन [2]भय

बा-ख़बर रहते हैं कुछ कहते नहीं,
जी रहे हैं अम्न-ओ-इज़्ज़त लिए।

यह ज़माना कब्ज़े में उसके हुआ,
यार आया सामने बहुमत लिए।

लौटेंगे लेकर नई तारीख़ हम,
जाएँगे इंसाफ़ की हसरत लिए।

एक वादे की सिफ़त भी ख़ूब है,
आज मेरा चेहरा है रंगत लिए।

जाते कू-ए-यार में रोज़ाना हम,
यार के दीदार की हसरत लिए।

हमने देखे हैं हरम, बुत-ख़ाने भी,
सफ़ में बैठे लोग हैं मन्नत लिए।

वो ख़फ़ा हैं सामने आते नहीं,
ख़्वाब में आते रहे आफ़त लिए।

बहस तो है बे-शग़ल[3] का मशग़ला[4],
देखो 'गौतम' भी है ये इल्लत[5] लिए।
[3]खाली आदमी (बेकार) [4]शौक़ [5]बुरी आदत

73: बंदिश-ए-शोर तेरे शहर में मजाज़ भी है

बंदिश-ए-शोर[1] तेरे शहर में मजाज़[2] भी है,
ख़ामुशी का सबब तो पास-ओ-लिहाज़ भी है।
[1]हल्ला करने की मनाही [2]कानूनी रोक

ये ज़िंदगी का सफ़र होता मुकम्मल है जहाँ,
पड़ाव आख़िरी है मंज़िल-ए-एज़ाज़[3] भी है।
[3]सम्मानित लक्ष्य

ये ज़रूरी तो नहीं है वजह हर बात की हो,
इश्क़ में रूठना-मनाना तो जवाज़[4] भी है।
[4]मान्य

इंतिहा गुफ़्त-ओ-गू की होगी वहाँ पर कैसे,
नए मुद्दे पे नई बहस का आग़ाज़ भी है।

नए सबक़ मिलेंगे सीखने को आज हमें,
मेरे रक़ीबों में शामिल हुआ उस्ताज़[5] भी है।
[5]सिखाने वाला (उस्ताद)

अगरचे भीड़ में चलते हैं साथ-साथ सभी,
ये नए दौर का शहर है बे-लिहाज़ भी है।

हमारे साथ बे-रुख़ी से पेश आते हैं,
नज़र में उसकी हमारे लिए अग़माज़[6] भी है।
[6]दृष्टि डालने का उपक्रम

ख़फ़ा किसी से किसी को कभी नहीं देखा,
साफ़गोई है बहुत पर्दा-ए-अल्फ़ाज़ भी है।

हमको उम्मीद है इंसाफ़ की नहीं 'गौतम',
वही क़ातिल वही मुंसिफ़ है बे-नियाज़[7] भी है।
[7]निष्ठुर

74: नहीं है खेल एक आफ़त है

नहीं है खेल एक आफ़त है,
इश्क़ की शर्त ही शराफ़त है।

पाँव मंज़िल पे पहुँच जायेंगे,
अगर जुनून-ए-मसाफ़त[1] है।
[1]यात्रा का पागलपन

उसे दीवाना लोग कह देंगे,
उठाए बार-ए-ख़िलाफ़त[2] है।
[2]विरोध का भार

ख़ैर-मक़्दम[3] रक़ीब करते हैं,
अगर तहज़ीब-ओ-सक़ाफ़त[4] है।
[3]स्वागत [4]शिष्टता और समझदारी

क़द्र होगी किसी भी महफ़िल में
पस गर ज़ौक़-ए-ज़राफ़त[5] है।
[5]हँसोड़पन

पस-ए-हिजाब वो खड़े हैं उधर,
इधर दीवार-ए-शराफ़त है।

वो जो दिल के क़रीब है 'गौतम',
पैकर-ए-हुस्न-ओ-लताफ़त[6] है।
[6]सौन्दर्य और कोमलता का स्वररूप

75: अगर मंज़िल से वास्ता रखते

अगर मंज़िल से वास्ता रखते,
पकड़ के पाँव से रस्ता रखते।

राब्ता हमसे नहीं रखना था,
हमारा नाम सर-बस्ता[1] रखते।
[1]राज़

जाते स्कूल दौड़कर बच्चे,
आप हल्का अगर बस्ता रखते।

खून महँगा नहीं रहा माना,
थोड़ा पानी को भी सस्ता रखते।

कोई आता नहीं अयादत[2] को,
हम नहीं दिल को हैं ख़स्ता[3] रखते।
[2]हाल=चाल लेना [3]बर्बाद

अभी अभी तो नींद आई थी,
ख़्वाब में पाँव आहिस्ता रखते।

क्यों ख़फ़ा हो गए दीवानों से,
मिज़ाज[4] यार शाइस्ता[5] रखते।
[4]दिमाग [5]मृदु

कुछ तवज्जोह[6] मिल गई होती।
बात गर आप दानिस्ता[7] रखते।
[6]ध्यान [7]सोच-समझ कर

बाद मुद्दत के मिले थे 'गौतम',
कैसे हम शिकवा बरजस्ता[8] रखते।
[8]तुरंत (आनन-फानन में)

76: हमें आईने में अक्स-ए-अना अच्छा नहीं लगता

हमें आईने में अक्स-ए-अना[1] अच्छा नहीं लगता,
कोई बोसीदा[2] क़िस्सा बांचना अच्छा नहीं लगता।
[1]अहंकार की छाया [2]पुराना/बासी

ज़रूरी भूलना जिस हादसे को मानते हैं हम,
अकेले में उसी को सोचना अच्छा नहीं लगता।

ख़िलाफ़त की हमें उम्मीद अपने दुश्मनों से थी,
बना हो यार उनका सर्ग़ना[3] अच्छा नहीं लगता।
[3]लीडर

हमारी दास्ताँ बे-नाम महफ़िल में सुनाकर फिर,
सभी से नाम हँसकर बूझना अच्छा नहीं लगता।

किसी के ख़्वाब मेरी आँखों को लगने लगे अच्छे,
किसी के हिज्र में अब जागना अच्छा नहीं लगता।

चला जाता है कहकर अलविदा नाराज़ होकर जो,
उसे आवाज़ देकर रोकना अच्छा नहीं लगता।

जो हँसते रहते हैं हालात पर और अपनी हालत पर,
उन्हें अब्दुल्ला बनकर नाचना अच्छा नहीं लगता।

वो मौका होने पर ना बोलना ख़ामोश रह जाना,
फिर उसके बाद मुट्ठी भींचना अच्छा नहीं लगता।

नए वादों से वो बहला रहे हैं फिर हमें 'गौतम',
बिना आवाज़ वाला झुनझुना अच्छा नहीं लगता।

77: हाथ से अपने फिसलता जा रहा

हाथ से अपने फिसलता जा रहा,
बर्फ़ बनकर मैं पिघलता जा रहा।

साथ में वाइज़ के बैठा चार पल,
वो बहकता मैं संभलता जा रहा।

आईने को देखकर हैरान हूँ,
आईना या मैं बदलता जा रहा।

छोड़कर आया है पीछे मंज़िलें,
कोई शैदाई[1] है चलता जा रहा।
[1]प्रेम में पागल

लग रहा है हमको दीवाना कोई,
सिर्फ़ वादे से बहलता जा रहा।

आँख में शायद फ़लक है भर लिया,
पाँव से सब्ज़ा[2] कुचलता जा रहा।
[2]घास

वक़्त के हाथों हुआ जो नातवाँ[3],
वक़्त के साँचे में ढलता जा रहा।
[3]दुर्बल

हो रहा ज़ाहिर कोई अफ़सोस है,
तन्हा देखो हाथ मलता जा रहा।

वह किसी से वास्ता रखता नहीं,
अपनी ही धुन में टहलता जा रहा।

लोग न इसको अजूबा मान लें
ख़ार के संग फूल खिलता जा रहा।

बे-ज़बाँ पर जाम का देखो असर,
सामने ग़ैरों के खुलता जा रहा।

रेंगने वालों को जाकर देख लो,
पा बचा है घुटना छिलता जा रहा।
अब नहीं है छेड़ता 'गौतम' उसे,
वो है आपे से निकलता जा रहा।

78: मैं अकेला कहाँ तन्हाई में

मैं अकेला कहाँ तन्हाई में,
एक सूरत भी है बीनाई[1] में।
[1]दृष्टि

साथ बे-जान जिस्म है मेरा,
जान छूटी बुत-ए-हरजाई[2] में।
[2]बेवफ़ा प्रेमिका

रू-ब-रू होके सज़ा देते हैं,
मज़ा है जुरअत-ए-रसाई[3] में।
[3]जबरन प्रवेश

गया मयख़ाने से सू-ए-जन्नत,
रिंद वाइज़ की रहनुमाई में।

सहर हुई है मगर है कोहरा,
अभी लेटे रहें रज़ाई में।

आज फिर शहर में हड़ताल हुई,
फिर दिहाड़ी गई खटाई में।

दिल की बातें निहाँ रहीं दिल में,
ज़ेहन उलझा रहा महँगाई में।

क्यों बुलाए बिना गए 'गौतम'
क्या मिला आपको रुस्वाई में।

79: कभी ठहरता आब-ए-वक़्त नहीं

कभी ठहरता आब-ए-वक़्त[1] नहीं,
किसी ने देखा फ़ौत-ए-वक़्त[2] नहीं।
[1]समय का दरिया [2]समय की समाप्ति

हमने देखा उसे पछताते हुए,
जिसे लगा था हब्स-ए-वक़्त[3] नहीं।
[3]समय की कमी

अपने यारों से ही समझा हमने,
यहाँ है कौन इब्न-उल-वक़्त[4] नहीं।
[4]अवसरवादी

वक़्त देता है उन्हें ख़ास सबक़,
मानते ख़ुद को तिफ़्ल-ए-वक़्त[5] नहीं।
[5]समय के खिलौने

कैसे पहुँचेंगे अपनी मंज़िल पर,
सफ़र शुरू किया बर-वक़्त[6] नहीं।
[6]सही समय

वक़्त हमने है बदलते देखा,
एक सा रहता कभी वक़्त नहीं।

बाद मुद्दत के वो घर आया है,
गिला करने का सही वक़्त नहीं।

रिंद से जाता है मिलने वाइज़,
देखता वक़्त और बे-वक़्त नहीं।

दिल करे जब सनम को याद करें,
कौन-सा वक़्त है ख़ुश-वक़्त[7] नहीं।
[7]अच्छा समय

उससे मिलना है तो पता कर लें,
रहता फ़ुर्सत से है हर-वक़्त नहीं।

इनको जाया[8] नहीं करिए 'गौतम'
दिन हैं बस चार यम-ए-वक़्त[9] नहीं।
[8]बर्बाद [9]समय का सागर

80: तुम्हारे शहर में कम शोर नहीं

तुम्हारे शहर में कम शोर नहीं,
मेरी आवाज़ में भी ज़ोर[1] नहीं।
[1]दम

हमको उम्मीद थी नहीं कोई,
तुमने भी देखा मेरी ओर नहीं।

गाँठ खोली नहीं गई तुमसे,
मिला हमें भी ओर-छोर नहीं।

आदतन कोई कुछ नहीं बोला,
वहाँ था कोई कर-ओ-कोर[2] नहीं।
[2]बहरा-अंधा

मैंने यारों को आज़माया है,
अदू से कोई भी कमज़ोर नहीं।

लहर के साथ नहीं आए गुहर[3],
बहर[4] में उतरे ग़ोता-ख़ोर नहीं।
[3]मोती [4]समुद्र

इश्क़-ओ-मुश्क[5] हैं नहीं छुपते,
किसी को कहिए चुग़ुल-ख़ोर नहीं।
[5]प्यार और शत्रुता

इश्क़ जिसने भी किया कहता है,
इश्क़ पर तो किसी का ज़ोर नहीं।

पतंग कैसे उड़ाई 'गौतम',
बंधी पतंग से है डोर नहीं।

81: नहीं आना था वो नहीं आए

नहीं आना था वो नहीं आए,
साँस लेते रहे घर में साए।

कोई आया नहीं ख़यालों में,
सुबह से हम हैं नहीं मुस्काए।

हुआ माहौल साँस पर भारी,
जिस्म को छोड़कर चला जाए।

शौक़ से राह में भटकते हैं,
नहीं आवाज़ से छेड़ा जाए।

बात तेरी भी सुनेंगे वाइज़,
जाम से पहले दिल बहल जाए।

उलझ के हमसे कहा आलिम ने,
ख़ुदा ही समझे और समझाए।

सजाया प्यार से गुलदानों में,
किसलिए हैं गुलाब कुम्हलाए।

खड़ा है दरमियान-ए-दैर-ओ-हरम[1],
वो इधर जाए या उधर जाए।
[1]मंदिर और मस्जिद के बीच

दोस्त आए सलाह देने को,
गए बोसीदा सबक़ दोहराए।

हमें है आरज़ू क़यामत की,
हमें सफ़ में खड़ा किया जाए।

लकड़ियाँ सील गई हैं 'गौतम',
अलाव छोड़ो कौन सुलगाए।

82: कभी लगा है मैं अकेला हूँ

कभी लगा है मैं अकेला हूँ,
कभी लगा मैं लिए मेला हूँ।

इस नतीजे पे देर से पहुँचा,
किसी के हाथ में मैं खेला हूँ।

किसलिए वो सहेजते हमको,
ठीक समझा था मैं अधेला हूँ।

सबक़ नए सिखाए रोज़ हमें,
लोग उस्ताद हैं मैं चेला हूँ।

साथ चलते हैं लोग चार क़दम,
और फिर कहते हैं झमेला हूँ।

कुछ नहीं होने का एहसास हुआ,
मुझे लगा था मैं अलबेला हूँ।

वक़्त को मैं सलाम करता हूँ,
उसकी ठोकर में एक ढेला हूँ।

जिसमें ख़ुद डूबता रहा 'गौतम',
तेज़ पानी का एक रेला हूँ।

83: कभी ऐसा हो तो मज़ा आए

कभी ऐसा हो तो मज़ा आए,
काम निकले वो सौ-दफ़ा आए।

बस यही एक गिला रह जाए,
जब कभी आए तो ख़फ़ा आए।

कभी तो मेरे भी घर के अंदर,
खुले दरीचों से हवा आए।

हमें तारीख़ों ने थका डाला,
आरज़ू अब है फ़ैसला आए।

उन्हीं दीवानों में हम शामिल हैं,
जिन्हें वो वादों से बहला आए।

आज भी ख़ुश्बू ये मिट्टी देगी,
भिगोने के लिए घटा आए।

किसी के लब पे एक दिन शायद,
फ़क़ीर के लिए दुआ आए।

सुना है लोग हैं नाराज़ बहुत,
ऐसा मजलिस[1] में क्या सुना आए।
[1]महफ़िल

चारागर अच्छा है वही 'गौतम'
देख भर लेने से शिफ़ा[2] आए।
[2]सेहत वापसी

84: गए जिस रोज़ साहिल से निकाले

गए जिस रोज़ साहिल से निकाले,
किया कश्ती को दरिया के हवाले।

मज़ा गिरने में भी आने लगेगा,
अगर कोई हमें बढ़कर सँभाले।

अभी तक समझ में आया नहीं है,
पढ़े हैं इश्क़ में सबके मक़ाले[1]।
[1]शोध-पत्र

बजाने तालियाँ मुर्दे लगे फिर,
नए जुमले किसी ने हैं उछाले।

शिकायत सब उसी की कर रहे हैं,
हमें भी तो लगे थे भोले-भाले।

सहर के साथ ही अंगड़ाई लेते,
चले जाते न दिन सब बैठे-ठाले।

मज़ा देगी हमारी दास्ताँ भी,
मिला लें आप कुछ इसमें मसाले।

मिले मसरूफ़ सारे लोग हमको,
सुनाते किसको अपने आह-ओ-नाले[2]।
[2]दर्द-विलाप

बहुत मायूस होकर देखता हूँ,
इन्हीं दीवानों में कुछ थे जियाले[3]।
[3]बहादुर

बहुत ही सर्द है माहौल 'गौतम',
बहुत दिन हो गए ख़ूँ को उबाले।

85: दर्द-ए-दो-जहान काफ़ी है

दर्द-ए-दो-जहान काफ़ी है,
दर्द-ए-इश्क़ तो इज़ाफ़ी[1] है।
[1]अतिरिक्त

याद आया नहीं ख़ुदा उसको,
लग रहा बंदा ख़ुद-तवाफ़ी[2] है।
[2]अपनी पूजा करने वाला

मेरा हर राज़ फ़ाश कर देगा,
चारागर लग रहा सहाफ़ी[3] है।
[3]पत्रकार

साथ उसके रक़ीब भी आयें,
हमारे दिल में जगह काफ़ी है।

उसी के इश्क़ ने बीमार किया,
जिसका दीदार बहुत शाफ़ी[4] है।
[4]सेहतकारी

हमें पहचानते नहीं हैं वो,
हमार साथ बे-इंसाफ़ी है।

गिला करने की ख़ता करने पर,
मिली किसे कभी मुआफ़ी है।

गर सितम गिन के करेंगे 'गौतम'
हम कहेंगे ये तो ना-काफ़ी है।

86: पसंद उनको रंग सारे हैं

पसंद उनको रंग सारे हैं,
तेरे आशिक़ मलंग[1] सारे हैं।
[1]दरवेश

पस-ए-हिजाब हैं माना लेकिन,
चश्म-ए-शोख़-ओ-शंग[2] सारे हैं।
[2]शरारती आँखें

लोग कहने लगे हमें क़ाफ़िर,
सर तलक आए संग[3] सारे हैं।
[3]पत्थर

रक़ीब पेच लड़ाने आए,
उड़ा रहे पतंग सारे हैं।

आए नासेह फिर मयख़ाने में,
तौबा ये जेहन-ए-तंग[4] सारे हैं।
[4]संकीर्ण मानसिकता वाले

उसके कूचे में बैठे ख़ाना-ख़राब,
लिए दिल में उमंग सारे हैं।

होगी खूँ-रेज़ी[5] उसके कूचे में,
आज आए दबंग सारे हैं।
[5]रक्तपात

नहीं आसान इश्क़ के रस्ते,
संभलिए तार-ओ-तंग[6] सारे हैं।
[6]अँधेरे और संकीर्ण

आज पूछा है हाल-ए-दिल 'गौतम',
आज हैरान-ओ-दंग सारे है।

87: रिंद हैं जाम के तहक्कुम में

रिंद हैं जाम के तहक्कुम[1] में,
अभी कुछ और है तक़द्दुम[2] में।
[1]प्रभाव/निर्देश [2]प्राथमिकता

होंठ मय से रहे भीगे जब तक,
सब रहे कैफ़-ओ-तरन्नुम[3] में।
[3]मौज-मस्ती

गए हैं अर्श-ए-मोअज़्ज़म[4] पर
नहीं हैं गर्त-ए-तज़ल्लुम[5] में।
[4]सबसे ऊँचे आसमान पर [5]हार्दिक पीड़ा के गढ्ढे में

अभी वाइज़ उन्हें मुआफ़ करे,
रिंद हैं महव-ए-तकल्लुम[6] में।
[6]वार्तालाप में व्यस्त

क़ैद-ए-दहर[7] में रहे दिन भर,
इस घड़ी तो हैं क़ैद-ए-ख़ुम[8] में।
[7]दुनिया (की झंझटों) की क़ैद [8]शराब के मटके की क़ैद मैं

क्या करेंगे ख़ुदा की जन्नत में,
दस्त सब जायेंगे जहन्नुम में।

यार का साथ चाहिए 'गौतम',
रहें जन्नत में या जहन्नुम में।

88: तक़दीर में लिखी हुई यह बात भी होगी

तक़दीर में लिखी हुई यह बात भी होगी,
निकले हैं सहर में तो कहीं रात भी होगी।

माना के हाथ छूट भी सकता हैं भीड़ में,
ख़्वाहिश हो बाहमा[1] तो मुलाक़ात भी होगी।
[1]दानो ओर बराबर से

अंदाज़ा सफ़र का लगा रहे थे दिन ढले,
हम भूल गए सुबह शुरूआ'त भी होगी।

दोराहे भी चौराहे भी आए हैं सफ़र में,
इस सफ़र में कहीं रह-ए-नजात[2] भी होगी।
[2]मुक्ति की राह

होता सफ़र-गिरफ़्ता[3] है जो भी है हमसफ़र,
उससे कोई उम्मीद बाज़-औक़ात[4] भी होगी।
[3]यात्रा में लिप्त [4]कभी-कभी

आईने में सूरत को देखकर हैं मुतमइन[5],
सूरत अलहदा एक पस-ए-ज़ात[6] भी होगी।
[5]आश्वस्त [6]मेरी पहचान के अतिरिक्त

अल्लाह निगहबान हो अपनों ने दी दुआ,
दी साथ में कुछ ख़ास हिदायात भी होगी।

ज़ख़्मों के निशाँ पाँव में गिनते रहे 'गौतम',
चेहरे पे नक़्श वक़्त की सौगात भी होगी।

89: ये मौसम सर्द, स्वेटर के बिना अच्छा नहीं लगता

ये मौसम सर्द, स्वेटर के बिना अच्छा नहीं लगता,
मगर घर को जलाकर तापना अच्छा नहीं लगता।

मैं उनसे हार कर ही जीतना बेहतर समझता हूँ,
मुक़ाबिल गर अना[1] से हो अना अच्छा नहीं लगता।
[1]स्वाभिमान

हमारी जान लेनी है बचाकर लीजिए दामन,
बदन पर पैरहन ख़ूँ से सना अच्छा नहीं लगता।

उजाले के लिए जो रातभर बेचैन था उसको,
सहर के वक़्त हो कोहरा घना अच्छा नहीं लगता।

फ़क़ीरी कर रहे हैं कासा-ए-दस्त-ए-दुआ[2] लेकर,
ज़बाँ पे आपके हर्फ़-ए-अना[3] अच्छा नहीं लगता।
[2]दुआ के लिए हाथ जोड़ना [3]स्वाभिमान की बात

दलीलें आलिम-ओ-फ़ाज़िल[4] की हैं तो ठीक ही होंगी,
मगर मुद्दे को ज़्यादा खींचना अच्छा नहीं लगता।
[4]शिक्षित और विद्वान

अगर हम बात को अपनी कुछ इस अंदाज़ से कहते,
ज़बाँ से बात कहकर सोचना अच्छा नहीं लगता।

ये दीवानों का हंगामा है रौनक कू-ए-जानाँ की,
वहाँ जाकर मैं बैठा अनमना अच्छा नहीं लगता।

बुरा लगता नहीं है वो वफ़ा वादा नहीं करते,
गिला करने पे लेकिन रूठना अच्छा नहीं लगता।

हमारा हाल सबके सामने मत पूछिए 'गौतम',
वही बोसीदा क़िस्सा बांचना अच्छा नहीं लगता।

90: सुना है वक़्त नहीं रुकता है

सुना है वक़्त नहीं रुकता है,
हमसे तो काटे नहीं कटता है।

चला तो आया कू-ए-जानाँ से,
यहाँ वहाँ मगर भटकता है।

चारागर हार मान ही लेंगे,
दर्द-ए-दो-जहान लगता है।

रिंद को एक जाम दे साक़ी,
बिना पिए बहुत बहकता है।

क़फ़स में परकटा परिंदा है,
आज भी आसमान तकता है।

उठ के लेने लगा उबासी क्यों,
सोते सोते क्या बशर थकता है।

चुकाता मूल किस तरह कोई
चुकाए सूद नहीं चुकता है।

चलो कोशिश कोई करो 'गौतम',
सोचने भर से क्या हो सकता है।

91: इश्क़ की मेरी दास्ताँ है अलग

इश्क़ की मेरी दास्ताँ है अलग,
वही किरदार हैं बयाँ है अलग।

वही सूरत है आईना भी वही,
अक्स ये कैसे ना-गहाँ[1] है अलग।
[1]अचानक

शेख़ करता है बात जन्नत की,
मझे लगता है वो जहाँ है अलग।

यहाँ से सिर के बल गया कोई,
यहाँ जो मिल रहा निशाँ है अलग।

बारहा देखा है उसे छुपकर,
हमारे से कहाँ-कहाँ है अलग।

निज़ाम एक था बनाया गया,
यहाँ अलग है क्यों वहाँ है अलग।

कैसे पहुँचेंगे किसी मंज़िल तक,
हमारा मीर-ए-कारवाँ है अलग।

उठा जो सीने से अलग है वो,
उठा जो चूल्हे से धुआँ है अलग।

नया दिन आया है उम्मीद लिए,
आज जो देंगे इम्तिहाँ है अलग।

नीयत-ए-अब्र[2] है जुदा 'गौतम',
नीयत-ए-आब-ए-रवाँ[3] है अलग।
[2]बादल का इरादा [3]बहते हुए पानी (दरिया) का इरादा

92: हर तमाशे का ज़रूरी नहीं कुछ मतलब हो

हर तमाशे का ज़रूरी नहीं कुछ मतलब हो,
वही होता है जो होना है, तो जब हो तब हो।

इश्क़ के मारों का होता है ठिकाना सहरा,
वो नहीं चाहेंगे सहरा में एक मशरब[1] हो।
[1]जलाशय

अज़ीज़ आस-पास हों तो ख़ुशी होती है,
अज़ीज़तर है जो वो यार ही अल-अक़रब[2] हो।
[2]सबसे निकट

किसलिए जाए वो हरम में या बुत-ख़ाने में,
ऐसा हो सकता है के इश्क़ उसका मज़हब हो।

उसको सजदे में कभी देखा नहीं लोगों ने,
थकन से टूटकर वो दोहरा पड़ा अग़लब[3] हो।
[3]संभवतः

उसके बीमार-ए-इश्क़ को नहीं छेड़े कोई,
क्या पता रोने को भरा हुआ लबालब हो।

चारागर से नहीं उम्मीद अब करे कोई,
नब्ज वो देखने आता है अगर मरकब[4] हो।
[4]सवारी/आने-जाने का साधन

वादा-ए-वस्ल क्यों कल का किया गया 'गौतम',
वस्ल है अपने मुकद्दर में तो वह हमशब[5] हो।
[5]आज की रात

93: बे-आब दरिया दिख रहा सराब की तरह

बे-आब दरिया दिख रहा सराब[1] की तरह,
अब लग रही है तिश्नगी[2] अज़ाब[3] की तरह।
[1]मृगमरीचिका [2]प्यास [3]मुसीबत

उसकी है आरज़ू उसे दीवाना सब कहें,
ज़ख़्मों को गिनाया अलल-हिसाब[4] की तरह।
[4]एक एक कर गिनना

उम्मीद कर रहे थे मिलेंगे हमें जवाब,
रखने लगा सवाल वो जवाब की तरह।

तन सर से जुदा करने का वादा है तुम्हारा,
क़ातिल क्यों पेश आ रहे क़स्साब[5] की तरह।
[5]कसाई

आए चमन में बाग़बाँ का हाल पूछने,
लेकर गुलाब चल दिए दाराब[6] की तरह।
[6]राजा

मुंसिफ़ तो अपने दम पे नहीं फ़ैसला देता,
सुनता है वो दलीलें नुक्ता-याब[7] की तरह।
[7]छोटी बात को भी समझने वाला

ग़र्क़ाब[8] भी होना कहाँ सबके नसीब में,
कुछ लोग फ़ना हो रहे हबाब[9] की तरह।
[8]डूबना [9]बुलबुला

नज़रें नहीं मिलाता है उस शोख़ से 'गौतम',
क़ाबू में जो ज़ेहन करे शराब की तरह।

94: सुनते हैं हरदम संजीदा रहता है

सुनते हैं हरदम संजीदा रहता है,
हँसता है लेकिन रंजीदा रहता है।

रिंदों के संग रोज़ बैठता है वाइज़,
उसका पुख़्ता मगर अक़ीदा[1] रहता है।
*1*विश्वास

शब भर हिज्र नहीं देता सोने उसको,
सारा दिन देखा ख़्वाबीदा[2] रहता है।
*2*निद्रालु

करता है तफ़तीश ख़बर जो छपती है,
वो हाथों में लिए जरीदा[3] रहता है।
*3*अखबार

झुक के नहीं सलाम किसी को करता है,
मगर हमेशा सर-ए-ख़मीदा[4] रहता है।
*4*सर झुकाए

जाने-पहचाने लोगों से समझा है,
सबके अंदर कुछ पोशीदा[5] रहता है।
*5*छुपा हुआ

बारगाह[6] में बात समझ में आती है,
सीधा मुद्दा भी पेचीदा रहता है।
*6*अदालत

बच्चे जाते नहीं खेलने वहाँ कभी,
जिस घर में केवल रोईदा[7] रहता है।
*7*वयस्क

'गौतम' बहुत डराता है वह यार हमें,
होठों पर जो लिए क़सीदा[8] रहता है।
*8*तारीफ़ के पुल

95: कल नहीं, आना है तो आज आओ

कल नहीं, आना है तो आज आओ,
कभी मिलने को वादा बाज[1] आओ।
[1]बिना/बगैर

इश्क़ में तेरे हैं बीमार बहुत,
लेकर तदबीर-ए-इलाज आओ।

ज़ुल्मत-ए-हिज्राँ[2] के सताए हैं,
बन के मानिंद-ए-मह-ए-आज[3] आओ।
[2]वियोग का अँधेरा [3]आज के चाँद की तरह

छोड़कर काम-काज बैठेंगे,
छोड़कर आज काम-काज आओ।

ज़िद नहीं है के ख़ुश-मिज़ाज[4] मिलो,
आप तो हस्ब-ए-मिज़ाज[5] आओ।
[4]अच्छे मन से [5]अपने मन के अनुसार

फिर किसी रोज़ गिला कर लेना,
साथ बैठेंगे हम-मिज़ाज[6] आओ।
[6]सामान सोच वाले

तुम्हारे इंतिज़ार में हमने,
जला के रक्खे हैं सिराज[7] आओ।
[7]चिराग

हमको दीवाना कह रहे हैं सब,
आज तो करने एहतिजाज[8] आओ।
[8]प्रतिकार

फिर निशाना बनाओ 'गौतम' को,
निभाने रस्म-ओ-रिवाज आओ।

96: हुज़ूर से कलाम क्या करते

हुज़ूर से कलाम क्या करते,
पेश होते हैं हम डरते डरते।

इस अदा से डरा के रखते हैं,
जाइए बात हम नहीं करते।

इश्क़ के रास्ते हमवार नहीं,
सिर्फ दीवाने पाँव हैं धरते।

हैसियत का पता रहा हमको,
आस्ताँ पर रहे सज्दा करते।

चाँद को देख के ख़ुश होते हैं,
नहीं छूने की आरज़ू करते।

कोई उम्मीद जब नहीं बाक़ी,
किसलिए बोलिए गिला करते।

करीब दिल के रहने वालों को,
कभी भी हम नहीं रुस्वा करते

यहाँ अपना पता नहीं मिलता,
हम कहाँ आ गए मरते मरते।

ज़र या दीदार हो लुटाया हुआ,
दामन-ओ-चश्म में नहीं भरते।

ख़्वाब आँखों को भले लगते हैं,
नींद को किसलिए परे करते।

खड़ा हुआ है सफ़ में मक़्तल में,
किसलिए एहतियात वो बरते।

कुछ नहीं कहते बे-ज़ुबाँ लेकिन,
सुना है वो भी आह हैं भरते।

जाम लेकर जो बैठता ज़ाहिद,
रिंद मयख़ाने को जन्नत करते।

चलो कुछ सीख लें परिंदों से,
हर समय ये उड़ा नहीं करते।

सुलगते दिल में जो अंगारे हैं,
वो भी हैं आँख में धुआँ करते

ज़िक्र महफ़िल में चला 'गौतम' का,
कुछ कहा उसने भी डरते डरते।

97: ग़ज़ल है बूझने-बुझाने को

ग़ज़ल है बूझने-बुझाने को,
लिखी गई है आज़माने को।

गया वो रोटियाँ कमाने को,
गया वो रोटियाँ पचाने को।

पास उसके नहीं दिखाने को,
पास है क्या नहीं दिखाने को।

कोई जाता नहीं मनाने को,
भीड़ पीछे गई मनाने को।

काम की खोज है दीवाने को,
काम से मौज है दीवाने को।

ढूँढता वो किसी ठिकाने को,
ढूँढता वो नए ठिकाने को।

माँगता वो है मेहनताने को,
बाँटता वो है मेहनताने को।

मिलेंगे आस पास ही दोनो,
बाँचते अपने ही फ़साने को।

दूरी बढ़ती ही जा रही 'गौतम',
कुछ करो फ़ासला घटाने को।

98: आशिक़ी का सही सलीक़ा हो

आशिक़ी का सही सलीक़ा हो,
अर्ज़-ए-ग़म भी बा-सलीक़ा हो।

ख़ुद की रुस्वाई का बाइस होगा,
अगर इज़हार बे-सलीक़ा हो।

बिना अंदाज़ा-ए-मंज़िल चलना,
सफ़र का ये नहीं तरीक़ा हो।

बात सबको समझ में आती है,
अगर छोड़ा नहीं दक़ीक़ा[1] हो।
[1] हर यत्न

अर्ज़ करते हैं रिंद वाइज़ से,
ज़िक्र जन्नत का या परी का हो।

हमें अच्छा कभी नहीं लगता,
मज़ाक़ बज़्म में किसी का हो।

क़ौल-ओ-क़सम है बहुत 'गौतम',
इश्क़ में किसलिए वसीक़ा[2] हो।
[2] शपथ-पत्र *(एफिडेविट)*

99: बे-बर्ग शजर का घना साया नहीं रहा

बे-बर्ग[1] शजर[2] का घना साया नहीं रहा,
हमराह[3] कोई अपना पराया नहीं रहा।
[1]बिना पत्ता [2]पेड़ [3]सह-यात्री

साक़ी है और मय भी है रिंदों के वास्ते,
इसरार-ए-बे-ख़ुदी[4] ही ख़ुदाया[5] नहीं रहा।
[4]भुलाने के लिए पीने का अनुरोध [5]हे भगवान्

तूफ़ान की छप्पर से अदावत[6] तो ठीक है,
क्यों घोंसला बया का बनाया नहीं रहा।
[6]शत्रुता/विरोध

वह शख़्स है अजीब क्यों घर छोड़ता नहीं,
देने को अगर पास किराया नहीं रहा।

रोटी बहुत मुफ़ीद[7] दवा भूख की होगी,
पानी पिला के जिसको जिलाया, नहीं रहा।
[7]लाभदायी

जाकर हरम में हम भी खड़े हो गए सफ़ में,
अब और कोई फ़र्ज़-ए-किफ़ाया[8] नहीं रहा।
[8]सामाजिक जिम्मेदारी

आने लगी है नींद अब बे-फिक्र है 'गौतम',
सर पे किसी का कुछ भी बक़ाया नहीं रहा।

100: रंज-ए-कुलफ़त-ओ-ज़रर का असर लगता है

रंज-ए-कुलफ़त-ओ-ज़रर[1] का असर लगता है,
ख़याल-ए-लुत्फ़-ए-कुर्बत[2] से भी डर लगता है।
[1]झंझट और हानि का दुःख [2]निकट होने के मजे का विचार

दिल मिलाने का अब ख़याल भी नहीं आता,
आज-कल हाथ मिलाने में भी डर लगता है।

अजीब लगता है माहौल इस शहर का मुझे,
सलाम करता है जो भी बद-नज़र लगता है।

एक आदत की तरह चाय सुबह की लेकर,
पढ़ता अख़बार है लेकिन बे-ख़बर लगता है।

घूमते फिरते हैं कुछ लोग बे-वजह दिन-भर,
एक आवारा सा हमको तो महर[3] लगता है।
[3]सूरज

सर छुपाने को जगह दे रहा शहर लेकिन,
जिसे भी देखता हूँ वो दर-बदर[4] लगता है।
[4]घर से भटका हुआ

राह लिपटी रही क़दमों से उम्र-भर 'गौतम',
जाना-पहचाना नहीं हमको सफ़र लगता है।

101: रात भर रंज बे-हिसाब रहे

रात भर रंज बे-हिसाब रहे,
नींद आई नहीं, बे-ख़्वाब रहे।

रात भर आप भी नहीं सोए,
आप किस सोच में जनाब रहे।

आपके करम याद करते हैं,
आपके सितम लाजवाब रहे।

ख़ार दामन में सजा लेंगे हम,
आपके हिस्से में गुलाब रहे।

आरज़ू है वो बे-नक़ाब मिले,
ज़िद्द है तो पस-ए-नक़ाब रहे।

तर्क करिए, मगर वादा करिए,
दिल में कुछ देर इल्तिहाब[1] रहे।
[1] उत्तेजना

नहीं सहरा से शिकायत कोई,
नज़र के सामने सराब[2] रहे।
[2] मृगमरीचिका

ज़र से माना फ़क़ीर हूँ 'गौतम',
मिज़ाज से मगर नवाब रहे।

102: कल की तस्वीर बनाई जाए

कल की तस्वीर बनाई जाए,
ज़ह-ए-तौक़ीर[1] बनाई जाए।
[1]सम्मान सहित/योग्य

रहें क़ाबू में ख़्वाहिशात सभी,
सख़्त ज़ंजीर बनाई जाए।

ख़्वाब देखा है बारहा सबने,
आओ ताबीर बनाई जाए।

अब नई दुनिया की ज़रूरत है,
बिला-ताख़ीर[2] बनाई जाए।
[2]बिना विलम्ब

बना रहे हैं अगर राह नई,
तो बे-नज़ीर[3] बनाई जाए।
[3]जिसका शानी न हो

सबको माइल[4] करे मोहब्बत में,
ऐसी तासीर[5] बनाई जाए।
[4]आकृष्ट [5]असर

बहस कोई भी हो छोटी या बड़ी,
नहीं गम्भीर बनाई जाए।

ख़ाक सारी समेटकर 'गौतम',
नई जागीर बनाई जाए।

103: यह एक काम सोचा, यह एक काम करलें

यह एक काम सोचा, यह एक काम करलें,
जो भी मिले शहर में, उसको सलाम करलें।

मुँह कौन लगाता है, बदनाम आदमी को,
इक नेक काम करके, कुछ नेक-नाम करलें।

हमने गिला किया था, जिसका जवाब ये है,
अब आपके लिए क्या, जीना हराम करलें।

तैयार लग रहे हैं, जाने को सब दहर[1] से,
कुछ काम बस बचे हैं, उनको तमाम करलें।
[1]दुनिया

हर रोज़ का है क़िस्सा, हर रोज़ की कहानी,
ख़्वाहिश ये आख़िरी है, उनसे कलाम करलें।

लगता नहीं अगरचे, यह काम है ज़रूरी,
मेरी सलाह ये है, फ़िक्र-ए-अवाम[2] करलें।
[2]जनता की चिंता

एक सिलसिला है देखें कब ख़त्म होगा 'गौतम',
फिर एक सुबह आई, फिर एक शाम करलें।

104: इश्क़ में नाम कर रहे हैं हम

इश्क़ में नाम कर रहे हैं हम,
ख़ुद को बदनाम कर रहे हैं हम।

उसी कूचे में सुबह होती है,
जहाँ पे शाम कर रहे हैं हम।

अपनी बर्बादी की हर तैयारी,
बर-सर-ए-आम[1] कर रहे हैं हम।
[1]लोगों के सामने

बे-रुख़ी से जो पेश आते हैं,
उन्हें सलाम कर रहे हैं हम।

लोग दीवाना अब कहें हमको,
वो इंतिज़ाम कर रहे हैं हम।

तमाशबीन चल रहे पीछे,
कू-ए-जाँ आम कर रहे हैं हम।

पस-ए-नक़ाब वो मिले हमसे,
तो एहतिराम[2] कर रहे हैं हम।
[2]सम्मान

उसने रक्खा है हाशिए पे हमें,
इश्क़-ए-ताम[3] कर रहे हैं हम।
[3]प्यार की पराकाष्ठा

लोग चर्चा हैं कर रहे 'गौतम',
अजीब काम कर रहे हैं हम।

105: मुसलसल हादसों के बीच, सब चलते रहे

मुसलसल[1] हादसों के बीच, सब चलते रहे,
सड़क ठहरी नहीं, सबके क़दम चलते रहे।
*1*लगातार

रहा मुंसिफ़ हमेशा ही, परेशाँ-ओ-पशेमाँ,
दलील-ओ-बहस से, सब फ़ैसले टलते रहे।

समय के साथ चलने की, नहीं आदत बनाई,
उड़े हाथों के तोते, हाथ तब मलते रहे।

मज़ा ग़ैबत[2] में सबको, जाम-सा आने लगा,
मज़ा लेते रहे सब, राज़ सब खुलते रहे।
*2*निंदा *(*पीठ पीछे*)*

किताब-ए-माज़ी के, सफ़्हे बचाने में लगे,
हवा के साथ घर के, परदे भी हिलते रहे।

अगरचे कारवाँ में, हमसफ़र की भीड़ है,
बना के दायरे अपने, बशर चलते रहे।

बही-खाता बशर का, काम का होता नहीं,
मलक[3] के हाथ के मीज़ान[4] में तुलते रहे।
*3*मृत्यु का फ़रिश्ता *4*तराजू

सहर के वक़्त में, बुझना उन्हें 'गौतम' पड़ा,
अगरचे रात भर, सारे दिये जलते रहे।

106: पहचान लिया हमने बड़ी बात हो गई

पहचान लिया हमने बड़ी बात हो गई,
आईने में कल ख़ुद से मुलाकात हो गई।

मरने की दुआ देने लगे हैं हमें हबीब,
सबके फ़ज़ल से ज़िंदगी सुक़रात हो गई।

कहने थे आए अलविदा एहसान आपका,
जाते थे, ज़िंदगी खड़ी हज़रात हो गई।

देखा था एक बार मुस्करा के यार ने,
फिर ज़िंदगी तो क़ैद-ए-लम्हात हो गई।

हर शाम को उम्मीद से हैं डालते पड़ाव,
हर सुबह सफ़र की नई शुरूआ'त हो गई।

आँखों में चुभ रहा वो धुआँ दिल से उठा था,
कुछ देर बाद यक-ब-यक[1] बरसात हो गई।
[1]अचानक

जाते हैं कू-ए-जानाँ तक कितने तमाशबीन,
हंगामा देखते हुए कसरात[2] हो गई।
[2]व्यायाम/घूमना

जब दिल किया तो हो गए 'गौतम' से वो ख़फ़ा,
जब दिल किया तो उस पे इनायात हो गई।

107: हुए ख़ामोश कुछ बताते हुए

हुए ख़ामोश कुछ बताते हुए,
लिहाज़-ए-राब्ता[1] निभाते हुए।
[1]परिचय का संकोच

आए दीवानावार मिलने को,
चल दिए सिर्फ मुस्कुराते हुए।

दास्ताँ सुनते सुनते वो सोए,
और हम सो गए सुनाते हुए।

यार के इंतिज़ार में शब भर,
जागते उँगलियाँ चटख़ाते हुए।

आज के दौर के शागिर्दों को,
देखा उस्ताद को सिखाते हुए।

सँभलने के लिए मयख़ाने में,
रिंद आते हैं लड़खड़ाते हुए।

मिले दीवाने कू-ए-जानाँ में,
तमाशा करते हँसते-गाते हुए।

सामने दफ़अ'तन अगर आए,
गुज़र गए नज़र चुराते हुए।

जहाँ से फिर निकाले जायेंगे,
वहीं जाते हैं हिचकिचाते हुए।

हमने मिलने की पेशकश की तो,
रहे ख़ामोश सिर हिलाते हुए।

एक यह बात चुभ गई 'गौतम',
पलट के देखा नहीं जाते हुए।

108: दुनिया-ए-तसव्वुर में बहला रहे हैं ख़ुद को

दुनिया-ए-तसव्वुर[1] में बहला रहे हैं ख़ुद को,
बे-फ़िक्र बन रहे हैं, झुठला रहे हैं ख़ुद को।

[1]ख़याली दुनिया

फ़ुर्सत नहीं किसी को, देखे तमाशा मेरा,
रोज़ाना एक तमाशा, दिखला रहे हैं ख़ुद को।

मिलने पे पूछते हैं सब लोग ही तआरुफ़[2],
अग़यार[3] बन रहे हैं, दफ़ना रहे हैं ख़ुद को।

[2]परिचय [3]अपरचित

एक गांठ लग गई थी कल खींचतान करते,
सुलझाने की कोशिश मे, उलझा रहे हैं ख़ुद को।

जाता है कू-ए-जाँ से ही रास्ता हरम[4] तक,
हम जा रहे हरम हैं, बहका रहे हैं ख़ुद को।

[4]मस्जिद

रस्ता है पता हमको, मंज़िल भी पता हमको,
अपना ही सफ़र है पर, भटका रहे हैं ख़ुद को।

सागर में ही राहत है, मयख़ाना ही जन्नत है,
ना-समझदार मिलकर, समझा रहे हैं ख़ुद को।

अफ़सोस किया होगा कुछ देर बाद 'गौतम',
महफ़िल से उसकी आकर बतला रहे हैं ख़ुद को।

109: चिराग़ को बुझाके बैठे हैं अंधेरे में

चिराग़ को बुझाके बैठे हैं अंधेरे में,
सुकून मिल रहा तन्हाइयों के घेरे में।

नज़र बचा के हमें लूटा किसी अपने ने,
लिहाज़-ओ-पास नहीं होता है लुटेरे में।

हमने इंसाफ़ की उम्मीद में नालिश[1] की थी,
और अब सोचते हैं फँस गए किस फेरे में।
[1]शिकायत

बहस की आप से शुरुआत की थी दोनों ने,
रफ़्ता रफ़्ता ठहर गई है तेरे मेरे में।

गेंद बच्चों की खो गई यहाँ कहीं शायद,
खोजते रोज़ हैं कचरे के ऊँचे ढेरे में।

उसकी आदत है बैठे बैठे ही सो जाने की,
जगह नहीं है लेटने की उसके डेरे में।

तुम्हारा शहर लग रहा है पहेली 'गौतम',
बसेरा राह पर या राह है बसेरे में।

110: फ़ासले बढ़ गए जब पास आए

फ़ासले बढ़ गए जब पास आए,
लम्हे क़ुर्बत के नहीं रास आए।

राब्ता ख़त्म कर दिया ऐसा,
नहीं साए भी आस-पास आए।

दिल पे इक बोझ लिए बैठे हैं,
कैसे आराम से अब साँस आए।

पाँव तो रहते हैं ज़मीं पे मगर,
कभी तो मुट्ठी में आकास आए।

आबला-पा है इल्तिजा करता,
कभी पैरों के तले घास आए।

आज आए हुज़ूर महफ़िल में,
साथ हैं कुछ मुरीद-ख़ास आए।

हमने सीखे अदब-आदाब सभी,
आपको भी लिहाज़-ओ-पास आए।

एक हसरत ये रह गई 'गौतम',
कभी मिलने वो बद-हवास आए।

111: शाम को खोजता ठिकाना है

शाम को खोजता ठिकाना है,
रात-भर का जो आशियाना है।

नींद में भी यही ख़याल रहा,
सहर होने पे किधर जाना है।

याद दिन में कभी नहीं आता,
ख़्वाब में रोज़ आना-जाना है।

सिर्फ अख़बार पढ़ रहे हैं अब,
क़िस्सा-ए-इश्क़ तो बचकाना है।

हमें आवाज़ न दो पीछे से,
अभी तो दूर बहुत जाना है।

बे-वजह बात नहीं करता है,
आदमी लग रहा सयाना है।

शुक्रिया, हमको है ख़बर 'गौतम',
किधर हरम किधर बुतख़ाना है।

112: सुबह-दम हो जायेंगे तैयार फिर

सुबह-दम हो जायेंगे तैयार फिर,
हादसों से होने को दो-चार फिर।

या-ख़ुदा कहने लगा है चारागर,
आ गया लो इश्क़ का बीमार फिर।

रह नहीं पाता बिना वादा किए,
होता है वादा-शिकन[1] लाचार फिर।
[1]वादा तोड़ने वाला

आप ना करिए गिला कोई कभी,
चाहते हों गर न हो यलग़ार[2] फिर।
[2]हमला

लौटा कू-ए-जाँ से ना-उम्मीद वो,
देखिए बैठा है अब बेज़ार फिर।

चाह कर भी दम निकलता है नहीं,
है दुआओं की हमें दरकार फिर।

फिर से दरिया पर मेहरबाँ हो गई,
सहरा तक पहुँची नहीं बौछार फिर।

ऊब कर घर से बना था यायावर,
याद आया है उसे घर-बार फिर।

अब गुज़ारिश किसलिए 'गौतम' करे,
सामने रख देंगे सब एज़ार[3] फिर।
[3]बहाना

113: हस्ब-ए-मिज़ाज करते रहे गुफ़्तुगू हमसे

हस्ब-ए-मिज़ाज[1] करते रहे गुफ़्तुगू हमसे,
तय हो नहीं पाई है रह-ए-आरज़ू हमसे।
[1]मूड के अनुसार

यारों की वजह से अदू को यार कह दिया,
लो और ख़फ़ा हो गया अब तो अदू हमसे।

वहशत में हमने चाक चाक कर लिया दामन,
होता नहीं अब अपना ही दामन रफ़ू हमसे।

नासेह ने मयख़ाने तक पीछा नहीं छोड़ा,
कतराने लगे साक़ी के संग हम-सुबू[2] हमसे।
[2]साथ बैठकर पीने वाले

हम आदतन रोज़ाना गए कूचा-ए-जानाँ,
मालूम था वो होंगे नहीं रू-ब-रू हमसे।

क्या करते नहीं लोग तवज्जोह के वास्ते,
हो पाती नहीं चाहकर भी हा-ओ-हू[3] हमसे।
[3]हल्ला-गुल्ला/शोर करना

दौर-ए-ख़िज़ाँ के हम तमाशबीन थे 'गौतम',
बे-रंग चमन मांग रहे हैं लहू हमसे।

114: हुज़ूर ने मेहर अज़-हद कर दी

हुज़ूर ने मेहर अज़-हद[1] कर दी,
आज मरने में भी मदद कर दी।
[1]असीमित

नाम अब पूछते हैं मिलने पर,
हद कर दी जनाब हद कर दी।

रास्ते जाने थे दिल से दिल तक,
दरमियाँ किसलिए सरहद कर दी।

गिला के बदले में गिला कर के,
बात दोनों ने हम-अदद[2] कर दी।
[2]सामान संख्या (बराबरी)

गुम-शुदा करने के लिए ख़ुद को,
हमने तन्हाई ही लहद[3] कर दी।

साथ बैठे थे गुफ़्तुगू के लिए,
और दोनो ने रद्द-ओ-कद कर दी।
[3]कब्र

ख़याल उसका साथ रहता है,
सफ़र के वास्ते रसद कर दी।

सीख पाए न ये हुनर 'गौतम',
ग़रज़ पड़ी ज़बाँ शहद कर दी।

115: घर में फैला हुआ अस्बाब गिना करते हैं

घर में फैला हुआ अस्बाब[1] गिना करते हैं,
रोज़ तन्हाई में हम ख़्वाब गिना करते हैं।
[1]सामान

कोई उम्मीद नहीं करते किसी से लेकिन,
बचे हैं जो मेरे अहबाब[2] गिना करते हैं।
[2]दोस्त

हमें हर बार लगा सहरा को डुबो देंगे,
हार कर उतरे जो सैलाब गिना करते हैं।

यायावर चाँद-सितारे रातभर बस्ती में,
खुले दरीचे[3] और बाब[4] गिना करते हैं।
[3]खिड़की [4]दरवाजा

अजीब शौक़ है साहिल पे खड़े लोगों का,
आज कितने हुए ग़र्क़ाब गिना करते हैं।

किया है लाजवाब गाहे-ब-गाहे सबने,
सवाल बाक़ी बे-जवाब गिना करते हैं।

हर तरफ आज सियासत दिखाई देती है।
उसके दीवानों में अहज़ाब[5] गिना करते हैं।
[5]दल/टोलियाँ

सभी हैं गर्म-निगाही[6] के मुंतज़िर[7] 'गौतम',
हो रहा कौन कामयाब गिना करते हैं।
[6]खुश नज़र [7]प्रतीक्षा रत

116: बाद सूरज के मेरा साया नहीं साथ आया

बाद सूरज के मेरा साया नहीं साथ आया,
फिर अंधेरे में कोई हाथ नहीं हाथ आया।

दौड़ती देखी हैं रफ़्तार से हमने सड़कें,
हमारे पैरों के नीचे मगर फुटपाथ आया।

भीड़ में एक भी चेहरा नहीं मानूस[1] दिखा,
जिसे भी देखा लगा वो यहाँ अनाथ आया।
[1]परिचित

अजीब सफ़र है कहने को हमसफ़र हैं बहुत,
न कोई साथ है जाता न कोई साथ आया।

गिरह लगाई थी मजबूत अपने हाथों से,
फिर उसके बाद तो कोई न सिरा हाथ आया।

सोचता हूँ मैं ख़ुदा को कहूँ ख़ुदा-हाफ़िज़,
रास आई न ख़ुदाई न ख़ुदा हाथ आया।

ऐब तो दोस्तों के देखता नहीं 'गौतम',
दोस्त तो दोस्त है, अच्छा या बुरा हाथ आया।

117: उसकी नाराज़गी शदीद नहीं

उसकी नाराज़गी शदीद[1] नहीं,
उसने घायल किया शहीद नहीं।
[1]बहुत जादा

दर्द-ए-जिस्म का गिला कैसा,
दर्द-ए-इश्क़ से बईद[2] नहीं।
[2]अधिक नहीं

वस्ल की भी उमीद रहती है,
हिज्र करता है ना-उमीद नहीं।

दुआ भी देते रहें चारागर,
सिर्फ होगी दवा मुफ़ीद[3] नहीं।
[3]पर्याप्त

किसलिए आए कू-ए-जानाँ में,
हौसला जिनका था हदीद[4] नहीं।
[4]फौलाद

लौटकर आयेगा दीवाना फिर,
सख़्त दी जाती है ताकीद नहीं।

सर-ब-सज्दा खड़े रहे लेकिन,
ग़ुलाम हम हैं ज़र-ख़रीद नहीं।

सुर्ख़रू जो नहीं होता 'गौतम',
उसका होता कोई मुरीद[5] नहीं।
[5]भक्त

118: दिल कर रहा है अपने को समेट कर देखें

दिल कर रहा है अपने को समेट कर देखें,
ख़ुद कब्र खोदें और उसमे लेट कर देखें।

कैसा लगेगा जिस्म पर लिबास कफ़न का,
हम इसमें अपने जिस्म को लपेट कर देखें।

मुद्दे उलझते जाते हैं सुलझाने में अक्सर,
हो जायेगा यक़ीन एक डिबेट[1] कर देखें।
[1]वाद-विवाद

मुंसिफ़ से फ़ैसला नहीं तारीख़ मिलेगी,
क़ातिल को चलें आज मजिस्ट्रेट कर देखें।

उसको पसंद आते हैं जो लोग हैं ख़ामोश,
हम सोचते हैं आज को-ऑपरेट[2] कर देखें।
[2]सहयोग

आईना भी कहने लगा है आजकल हमसे,
चेहरे पे अपने आप नया पेंट[3] कर देखें।
[3]रंग

आसान झमेले नहीं हैं इश्क़ के 'गौतम',
गर चाहें एक दिन के लिए डेट[4] कर देखें।
[4]मिलने की नियत तारीख

119: नई दुनिया का तसव्वुर करते

नई दुनिया का तसव्वुर[1] करते,
कहाँ पे पा-ए-तफ़क्कुर[2] करते।
[1]परिकल्पना [2]विचारों की बुनियाद

मिले ख़्वाबों की गर ताबीर[3] हमें,
पेश हम हुस्न-ए-तफ़ाख़ुर[4] करते।
[3]स्वप्न-फल [4]गर्व का प्रदर्शन

आब-जू[5] बहते बीच सहरा में
ऐसे कुछ कार-ए-तहय्युर[6] करते।
[5]पानी की धार (सरिता) [6]आश्चर्यजनक कार्य

देखकर होती तसल्ली सबको,
इस तरह नए तनाज़ुर[7] करते।
[7]ख़याल/सोच

क़त्ल की साफ़ गवाही के लिए,
लोग क़ातिल को तक़र्रुर[8] करते।
[8]नियुक्त

हम नहीं होते तो रक़ीब मेरे,
किसलिए अश्क-ए-तवातुर[9] करते।
[9]लगातार रोना/विलाप करना

दोस्तों से है मोहब्बत 'गौतम',
उनके दम पर हैं तफ़ाख़ुर[10] करते।
[10]गर्व करना

120: हैं हक़ीक़त-आशना तो ख़्वाब क्यों हैं देखते

हैं हक़ीक़त-आशना[1] तो ख़्वाब क्यों हैं देखते,
फ़लक पर तारे भी हैं, महताब[2] क्यों हैं देखते।
[1]यथार्थ के उपासक [2]चाँद

आईने से लग रहा है वो ख़फ़ा हैं आजकल,
वगर्ना[3] चेहरे को वो बर-आब[4] क्यों हैं देखते।
[3]अन्यथा [4]पानी की सतह पर

आस्ताँ पर आपके आया लगाने हाज़िरी,
सजदा-ए-मस्ताना का अलक़ाब[5] क्यों हैं देखते।
[5]उपाधियाँ/हैसियत

अब अदब-आदाब को तरजीह देता है बहुत,
पूछ लेता है पस-ए-नक़्क़ाब[6] क्यों हैं देखते।
[6]नकाब के पीछे

अपने दीवानों में कोई फ़र्क़ गर करते नहीं,
कौन आया पहनकर कमख़ाब[7] क्यों हैं देखते।
[7]भड़कदार कपडे

कू-ए-जाँ में भी सियासत हो रही है आजकल,
अब रक़ीबों मे नए अहज़ाब[8] क्यों हैं देखते।
[8]दल/टोली

इश्क़ के दरिया में गर ग़र्क़ाब[9] होना है नहीं,
आप साहिल पर खड़े गिर्दाब[10] क्यों हैं देखते।
[9]डूबना [10]भंवर

कल तलक तो आपसे 'गौतम' न था कोई गिला ,
क्या हुआ है आज सब बेताब क्यों हैं देखते।

121: भूलना चाहते थे ख़ाना-ख़राब

भूलना चाहते थे ख़ाना-ख़राब[1],
याद आते ही रहे आली-जनाब।
[1]बेघर

उसने सुनकर दुआ दी मरने की,
दुआ के बदले में मिलता है सवाब[2]।
[2]पुण्य

जी रहे सब इसी भरोसे पर,
बशर की ज़िंदगी है एक हबाब[3]।
[3]बुलबुला

यार का सितम करम होता है,
यही सवाल का है नेक जवाब।

पिला के मुफ़्त की आदत डाली,
अब नहीं साक़ी देता जाम-ए-शराब।

तिश्ना-लब को कोई आराम नहीं,
आँख को ही भला लगता है सराब।

पास मुफ़लिस[4] के ख़ास है कुछ तो,
सलाम कर रहे हैं आली-जनाब।
[4]गरीब

मेरे हिस्से में छोड़कर काँटे,
तोड़कर ले गए वो सारे गुलाब।

रात भर खुल के सुनाया 'गौतम '
मुख़्तसर[5] दास्ताँ का लुब्ब-ए-लुबाब[6]।
[5]छोटी [6]सार-संक्षेप

122: हल करेंगे ये मसाइल किस तरह

हल करेंगे ये मसाइल[1] किस तरह,
साथ सब बैठे लिए दिल में गिरह।
[1]मामला/समस्या

मुद्दई[2] को हो रहा ख़ुद पर शुबह[3],
यूँ वकीलों ने करी उससे जिरह।
[2]केस करने वाला [3]संदेह

हर क़दम पर लोग क्यों गिरने लगे,
थी बनी हमवार[4] सड़कों की सतह।
[4]चौरस/समतल

कल तलक सूखे का भय लगता रहा,
लायेगा सैलाब क्या अब्र-ए-सियह[5]।
[5]काला बादल

देखिए क्या गुल खिलेंगे रात भर,
हिज्र की यह रात है सर्द-ओ-सियह[6]।
[6]ठंडी और काली

ख़्वाब आँखों में नहीं हम पालते,
फिर बड़ी मनहूस लगती है सुबह।

एक मुसलसल[7] जंग ही है ज़िंदगी,
ना फ़तह होती है ना होती सुलह।
[7]लगातार

गुफ़्तुगू ख़ुद से करें तन्हाई में,
हो वजह कोई नहीं तो बे-वजह।

सू-ए-मंज़िल[8] था चला 'गौतम' मगर,
बे-ख़बर वो आ गया है किस जगह।
[8]लक्ष्य की ओर

123: किसलिए हर समय बेदार रहा

किसलिए हर समय बेदार[1] रहा,
आदमी वक़्त का शिकार रहा।
[1]होश में *(चिंतित)*

गया है देखो वो भी काँधे पर,
हवाई घोड़े पर सवार रहा।

ठोकरें उसको भी लगी होंगी,
बा-क़दम[2] जो था ख़बरदार रहा।
[2]कदम कदम पर

तेज जा सकते हैं अगर कोई,
बार-ए-एहसान[3] ना उधार रहा।
[3]एहसान का बोझ

कान में आते ही सदा-ए-मलक[4],
बहुत घबराता गुनहगार रहा।
[4]मृत्यु के फ़रिश्ते *(मलक)* की आवाज़

पलट के जाना नहीं मुमकिन है,
माना हमको कोई पुकार रहा।

ज़िंदगी से नहीं मोहब्बत की,
मौत के साथ भी बेज़ार[5] रहा।
[5]अनुत्सुक

वक़्त पर छूटेगी गाड़ी 'गौतम',
जिसे भी जाना है तैयार रहा।

124: वो बे-ख़बर न इस तरह इधर उधर जाता

वो बे-ख़बर न इस तरह इधर उधर जाता,
उतर के दिल में देखता ख़ुदा नज़र आता।

ऐसे दीवाने से तो हुस्न भी है ख़ौफ़-ज़दा[1],
कूचा-ए-जानाँ मे भी लाता है बही-खाता।
[1]डरा हुआ

बात जन्नत की क्यों करते हो रिंद से वाइज़,
एक ख़ामोशी लगाते तो क्या आता-जाता।

हमने दरख़्वास्त की थी एक बार गाँव चलें,
कभी दिल्ली चला गया तो कभी कोलकाता।

अब तो तूफ़ान भी कतराते हैं मेरे घर से,
बंद दरवाज़ों दरीचों को कौन खड़काता।

एक उम्मीद तो बीमार-ए-इश्क़ को होती।
चारागर नब्ज़ नहीं पाता मगर मुस्काता।

वो आदमी नहीं लगता है इस शहर का मुझे,
गिरा के दूसरों को क्यों है वो ठहर जाता।

ज़रूरी होता है थोड़ा-बहुत भरम 'गौतम',
वो बे-नक़ाब न होता न कोई ग़श[2] खाता।
[2]बेहोश होना

125: सहर के साथ नया दिन गुज़ारने निकले

सहर के साथ नया दिन गुज़ारने निकले,
हमें ख़बर नहीं हम क्या तलाशने निकले।

नज़र उठा के आफ़्ताब[1] को देखा सबने,
दबी ज़बान से सौ सौ उलाहने[2] निकले।
*1*सूरज *2*शिकायत

जुनून-ए-इश्क़ में जो रात भर नहीं सोए,
वो ग़म-ए-रोज़गार हैं संभालने निकले।

हया के साथ उसे फ़िक्र है ज़माने की,
पस-ए-नक़ाब वो हमारे सामने निकले।

इश्क़ की बात होश वाले नहीं करते हैं,
होश खोने के लिए जाम थामने निकले।

आबला-पा[3] नहीं तैयार थे चलने के लिए,
सिर्फ इसरार[4] पर सब लोग नाचने निकले।
*3*छाले भरे पैर *4*अनुरोध

तमाशबीन भी जुटने लगे हैं मक़्तल[5] में,
आज क़ातिल सुना हुनर तराशने[6] निकले।
*5*वध-स्थल *6*निखारने

ख़ुदा के नाम पर साग़र[7] ये छिपा दे साक़ी,
शेख़ साहब मेरा नशा उतारने निकले।
*7*शराब का प्याला

सर-ब-सज्दा[8] नहीं होता मैं किसी के आगे,
ख़याल-ए-कुफ़्र[9] सब कितने डरावने निकले।
*8*सर झुकाना *9* ख़ुदा के अतिरिक्त आस्था का विचार

वो अयादत[10] के लिए निकले हैं घर से 'गौतम',
ख़बर छपेगी कल किसको नवाज़ने[11] निकले।
*10*हाल-चाल लेना *11*कृपा करना

126: बात हमसे करने में उसको परेशानी हुई

बात हमसे करने में उसको परेशानी हुई,
बग़ल से मेरे गुज़र जाने में आसानी हुई।

यूँ लगा वो चाहता है पूछना कोई सवाल,
बे-ज़बाँ बोला नहीं तो बात बे-मानी[1] हुई।
[1]फ़ालतू

हम उठे थे सोचकर याँ[2] लौटकर आना नहीं,
पीछे से आवाज़ आई फिर से नादानी हुई।
[2]यहाँ

फिर परिंदे लाए हैं तिनके नशेमन[3] के लिए,
फिर सबा[4] की देखिए रफ़्तार तूफ़ानी हुई।
[3]घोंसला [4]हवा

राय सबकी एक थी दुनिया नहीं ये काम की,
लोग संजीदा नहीं थे सुन के हैरानी हुई।

ऐसा हो तो कैसा हो या जो हुआ होता नहीं,
लोग जब फ़ुर्सत में थे यूँ बात इम्कानी[5] हुई।
[5]संभावना

रास्ते में रोज़ हमको मिल रहे कुछ अजनबी,
सबकी सूरत हमको लगती जानी-पहचानी हुई।

हिज्र के मारे हुए सोते कहाँ हैं रात भर,
मुफ़्त में मुस्तैदी से घर की निगहबानी[6] हुई।
[6]चौकीदारी

रोज़ ही अफ़्कार[7] से दो-चार बल पड़ते रहे,
इस तरह हुक्काम की पेशानी[8] नूरानी[9] हुई।
[7]चिंता [8]माथा [9]तेज युक्त

मौत दरवाज़े से मेरे लौटकर 'गौतम' गई,
ज़िंदगी जीने की जिद्द-ओ-जहद ला-सानी हुई।

127: क्यों लोग बोलते हैं बिना लफ़्ज़ों को तोले

क्यों लोग बोलते हैं बिना लफ़्ज़ों को तोले,
ख़ुश हैं वो बे-ज़बान जो कुछ भी नहीं बोले।

मौसम का भरोसा नहीं कल तेज धूप थी,
जब उसने सिर मुंडाया तो गिरने लगे ओले।

महफ़िल में लोग जाते हैं कमख़ाब[1] पहनकर,
वो आदमी ज़िद्दी है बदलता नहीं चोले।
[1]अच्छी पोशाक

रहता था आस्तीन में तो कुछ लिहाज़ था,
अब जेब को दख़ल किए बैठे हैं संपोले।

लाचारगी से उसने दिया होगा ये बयान,
जो करना है कर लीजिए जो होना है होले।

अब लोग उसे बहुत जल्द दफ़्न करेंगे,
आँखों में नहीं आग नहीं दिल में हैं शोले।

लगता नहीं उसको बची उम्मीद किसी से,
मुद्दत हुई है उसको दिल-ओ-जाँ को टटोले।

उम्मीद है एक रात ये तारे कहें 'गौतम',
है सुबह बहुत दूर, नींद आए तो सोले।

128: रू-ब-रू आए, बे-नक़ाब आए

रू-ब-रू आए, बे-नक़ाब आए,
पस-ए-नक़ाब ना अज़ाब[1] आए।
[1]प्रकोप/आफ़त

रात भर इंतिज़ार करते रहे,
नीद आई नहीं, ना ख़्वाब आए।

दें इजाज़त तो हम कलाम कहें,
चाहे महफ़िल में इंक़लाब आए।

अपनी आँखों से पिलाकर देखें,
ज़िद नहीं जाम-ए-शराब आए।

हँस दिया वो मेरे सवालों पर,
जवाब ख़ूब लाजवाब आए।

आरज़ू है कभी कहें हम भी,
ब-ख़ुदा[2] घर मेरे जनाब आए।
[2]भगवान् कसम

फ़लक पे रोज़ देखते हैं हम,
आज पहलू में माहताब आए।

तेरी दिल जोई के लिए 'गौतम',
कहो तो ख़ाना-ए-ख़राब आए।

129: एक दीवाने को बहलाने लगे

एक दीवाने को बहलाने लगे,
कोरे वादों से वरग़लाने[1] लगे।
[1]फुसलाना

फ़िक्र करते हैं बे-ज़बानों की,
न कोई चीखने-चिल्लाने लगे।

थोड़ी जन्नत की हक़ीक़त जाने,
रिंद नासेह को पिलाने लगे।

उसकी आँखों में चुभ रहे होंगे,
आजकल रोज़ हैं रुलाने लगे।

ज़बाँ को सिल के बैठ जाने पर,
ख़याल दिल में कुलबुलाने लगे।

यही पहचान है दीवाने की,
रोते रोते वो खिलखिलाने लगे।

ख़्वाब लगता है, ख़्वाब ही होगा,
वो मेरे सामने हकलाने लगे।

कल परेशान थे मुझे लेकर,
आज फिर गुल नया खिलाने लगे।

वस्ल से दिल नहीं भरा 'गौतम',
हिज्र के मारे तिलमिलाने लगे।

130: रहमत ख़ुदा की होती है ज़हमत नहीं होती

रहमत ख़ुदा की होती है ज़हमत नहीं होती,
बेटी से बढ़ के कोई भी दौलत नहीं होती।

मिलता ग़ुरूर बेटे से, बेटी से शराफ़त,
बेटी की बदौलत कभी वहशत नहीं होती।

बेटे के साथ होने से बढ़ता है हौसला,
बेटी को बिना देखे तो राहत नहीं होती।

माना के बुढ़ापे का सहारा बना बेटा,
बेटी की तरह बेटे से ख़िदमत नहीं होती।

दौलत से नहीं तौलती माँ-बाप का रिश्ता,
बेटी की दुआओं में किफ़ायत नहीं होती।

टुकड़ा जिगर का अपना कौन देता है हँसकर,
बेटी न देता अगर रवायत[1] नहीं होती।
[1]प्रथा

करता है एक रोज़ विदा बेटी को 'गौतम',
दिल से वो कभी बाप के रुख़्सत नहीं होती।

131: हमारे यार मनचले निकले

हमारे यार मनचले निकले,
कभी बुरे कभी भले निकले।

मछलियाँ ख़त्म हो गईं होंगी,
आज तालाब से बगुले निकले।

हमेशा अच्छा कौन कहता है,
मेरे ख़िलाफ़ भी जुमले निकले।

बैठे-ठाले बहस करी सबने,
देखिए कितने मसअले[1] निकले।
[1]समस्याएँ

वक़्त के हाथ के खिलौने हैं,
सभी बर-आब[2] बुलबुले निकले।
[2]पानी की सतह पर

जिसे अज़ीज़ समझ लेते हैं,
उसी के साथ फ़ासले निकले।

आज छत पर वो ये कहते आए,
चाँद उसके मुक़ाबले निकले।

शहर में जो भी मिले ख़ाना-ख़राब,
उसी के ख़ास लाडले निकले।

बात संजीदगी से क्या करते,
साथ जो बैठे चुलबुले निकले।

किया मुंसिफ़ ने तो बरी 'गौतम',
सब नहीं दूध के धुले निकले।

132: फ़ुर्सत से बात करने की फ़ुर्सत नहीं मिली

फ़ुर्सत से बात करने की फ़ुर्सत नहीं मिली,
फिर मिलने की कभी कोई सूरत नहीं मिली।

करनी थी बात दोनो को तफ़सील से लेकिन,
दोनो रहे ख़ामोश, तबीअत नहीं मिली।

महफ़िल मे बोलने का इशारा नहीं मिला,
जाने की उठ के हमको इजाज़त नहीं मिली।

वो आए अयादत[1] के लिए एक बार बस,
दोबारा इस कदर कभी राहत नहीं मिली।
[1]हाल चाल पूछना

दीवाना उसे मानता नहीं है ज़माना,
आशिक़ को मुसलसल[2] अगर वहशत[3] नहीं मिली।
[2]स्थायी [3]दीवानापन

ना कहने की किसी को है फितरत[4] नहीं मेरी,
हाँ कहने की हुज़ूर को आदत नहीं मिली।
[4]स्वभाव

देखा है सर झुकाए हुए जा रहा 'गौतम',
लगता है कू-ए-जानाँ में वक़अत[5] नहीं मिली।
[5]सम्मान/प्रतिष्ठा

133: इन परिंदों के पर निकलने दें

इन परिंदों के पर निकलने दें,
एक बेहतर डगर निकलने दें।

ये परिंदे नहीं क़फ़स[1] के लिए,
इन्हें भी सैर पर निकलने दें।
[1]पिंजरा

फ़लक[2] का ओर-छोर नापेंगे,
इन्हें उड़ान पर निकलने दें।
[2]आसमान

हमारा दिन है ढल रहा लेकिन,
हुई इनकी सहर निकलने दें।

सबक़ सौ सीखने ज़रूरी हैं,
बनेंगे बा-ख़बर निकलने दें।

होंगे ज़िंदान-ए-दहर[3] में कल,
आज तो बे-ख़बर निकलने दें।
[3]संसार के बंदी

यही तो होंगे जियाले[4] कल के,
सख़्त हो दोपहर, निकलने दें।
[4]बहादुर

इनमें फ़ौलाद की गुंजाइश है,
बेटियाँ मान्यवर निकलने दें।

हमे भी रोकिए नहीं 'गौतम',
हुई पूरी उमर निकलने दें।

134: चुक गए कितने हम बचे कितने

चुक गए कितने हम बचे कितने,
अब तो मेरी कमर लगी झुकने।

मुझको दिल ने बनाया यायावर,
कहीं देता नहीं हमे टिकने।

पाँव मैंने बचाए ठोकर से,
रेंगने से मगर छिले घुटने।

मेरे यारों की मेहरबानी से,
दिल हमेशा लगा मेरा दुखने।

हम हरम में गए न मंदिर में,
हर जगह देखे झमेले इतने।

क़द मकानों का हो गया ऊँचा,
हम तो जितने थे रह गए उतने।

बे-ज़बाँ बज़्म में कई आए,
सारे मिल के हमें लगे अपने।

मुँह छुपाते हुए दिखे 'गौतम',
जो हैं बाज़ार में बैठे बिकने।

135: आ गए आज हमसे मिलने को

आ गए आज हमसे मिलने को,
बे-वजह निकले थे टहलने को।

बात करना नहीं सियासत पर,
मुद्दा मिल जाता है झगड़ने को।

खुश हुए हाथ से उड़े तोते,
मिला है वक़्त हाथ मलने को।

सबको आसानी से बहलाया है,
लोग बैठे ही थे बहलने को।

अब्र इसकदर मेहरबान हुए,
हुई तैयार छत टपकने को।

इससे पहले की आँच बुझ जाती,
रख दी चूल्हे पे दाल गलने को।

पहले सरकार को बनाने को,
आज बा-फ़िक्र हैं बदलने को।

राज़ दिल का बता रहा 'गौतम',
नहीं तैयार दिल मचलने को।

136: आजकल दौर-ए-जम्हूरी है

आजकल दौर-ए-जम्हूरी[1] है,
सभी का मशवरा[2] ज़रूरी है।
*1*प्रजातंत्र *2*मत

हमारा मशवरा नहीं लेते,
बस इसी बात की रंजूरी[3] है।
*3*नाराजी

कूचा-ए-जानाँ में चले जाते,
एक उम्मीद पर ज़रूरी है।

थक गए बात सुनाने वाले,
बात फिर रह गई अधूरी है।

आज भूले से गिला कर बैठे,
ज़बाँ पे हर्फ़-ए-माज़ूरी[4] है।
*4*लज्जित शब्द

आप भी इश्क़ की ख़ता करिए,
जिगर[5] के साथ गर सुबूरी[6] है।
*5*हिम्मत *6*धैर्य

ख़याल सहर का नहीं आता,
बड़ी लम्बी शब-ए-महजूरी[7] है।
*7*जुदाई की रात
जहर घुला है हवा में माना,
साँस लेना मगर मजबूरी है।

नहीं मिलेगा यार से 'गौतम',
मगर नियाज़-ए-हुज़ूरी[8] है।
*8*उपस्थित रहने (देखने) की इच्छा

137: आदमी माँगता है आज़ादी

आदमी माँगता है आज़ादी,
रिवायातों[1] का है मगर आदी।
[1]परम्परा/रिवाज

ज़मीन पूछने लगी दब के,
और कितनी बढ़ेगी आबादी।

बात पर ग़ौर किसलिए होता,
बात थी हो रही सीधी-सादी

आज के दौर के क़ाबिल बच्चे,
करते उस्ताद से हैं उस्तादी।

बैठे हैं कालीदास[2] शाख़ों पर,
पड़ी ख़तरे में अम्न-ओ-आज़ादी।
[2]डाल पर बैठकर उसी डाल को काटने वाला *(मूर्ख)*

राह हमवार खोजते हैं सब,
कहाँ गए सफ़र के उन्मादी।

होते तामीर हैं हवाई क़िले,
नहीं आता ख़याल बुनियादी।

खोज लेते हैं चोर-दरवाज़ा,
आदमी हो गए हैं ईजादी।

बहुत आराम-देह है शायद
लुभा रही है सभी को खादी।

कोई पढ़ता नहीं कभी 'गौतम',
अपने हाथों से लिखी बर्बादी।

138: फ़लक पे दूर तलक टुकड़ा-ए-सहाब नहीं

फ़लक पे दूर तलक टुकड़ा-ए-सहाब[1] नहीं,
हमको हैरान दिखा सहरा-ओ-सराब नहीं।
[1]बादल

चमन से लौटा है उलझा के ख़ार से दामन,
वो मानने लगा अब खिलते हैं गुलाब नहीं।

नज़र से मुफ़लिसों की निकलते नहीं मोती,
अमीर की नज़र का आब भी बे-आब[2] नहीं।
[2]बिना चमक का

हिज्र में रात भर जो हाय-हाय करता है,
उसको दीवाना मान सकते हैं नायाब नहीं।

ज़िद है दीवानों की दीदार बे-नक़ाब मिले,
उधर ये ज़िद है वो आयेंगे बे-नक़ाब नहीं।

वक़्त कम पड़ गया बे-बात की बहस करते,
और उसका भी मिला लुब्ब-ए-लुबाब[3] नहीं।
[3]सही मंतव्य

क़ुबूल सजदा ख़ुदा को नहीं होता 'गौतम',
हमारे दिल में गर सनम-ए-लाजवाब[4] नहीं।
[4]ईश्वर

139: आह बेसाख़्ता निकलने पर

आह बेसाख़्ता[1] निकलने पर,
रंज करता रहा संभलने पर।
[1]अनायास

बोलना चाह रहे थे लेकिन,
चुप हुआ मुद्दआ[2] बदलने पर।
[2]विषय

उसे किस बात की शिकायत थी
याद आया नहीं बहलने पर।

वो जगह भूल नहीं पाता है,
लगी थी चोट जहाँ गिरने पर।

बाद मुद्दत के साथ बैठा है,
वो भी बोलेगा बात खुलने पर।

मिल भी सकता है सिरा एक कोई,
सख़्त इस गाँठ के सुलझने पर।

लोग मसरूफ़ दिन में रहते हैं,
जाम लेते हैं शाम ढलने पर।

बाक़ी सब ठीक-ठाक है 'गौतम',
होती मुश्किल है दिल मचलने पर।

140: आई ख़बर है कोई फ़रमान लिख रहे हैं

आई ख़बर है कोई फ़रमान लिख रहे हैं,
साहब नई कलम से ऐलान लिख रहे हैं।

तारीख़-साज़[1] ख़ुद को वो मानने लगे हैं,
अपने निज़ाम[2] पर ख़ुद दीवान[3] लिख रहे हैं।
[1]इतिहास बनाने वाले [2]व्यवस्था [3]संग्रह

सारी ज़मीं पे कब्ज़ा करने का है इरादा,
जो ज़ाहिराना[4] ख़ुद को मेहमान लिख रहे हैं।
[4]खुले तौर पर

पूरे जो हो गए हैं मुश्किल है याद करना,
बाक़ी जो रह गए वो अरमान लिख रहे हैं।

लोगों से परेशानी हुक्काम ने पूछी है,
सब लोग लिख रहे हैं, हैरान लिख रहे हैं।

तय हो गई है मंज़िल रस्ता भी तय हुआ है
फ़िलहाल वो सफ़र का इम्कान[5] लिख रहे हैं।
[5]संभावनाएं

हम भी लगा रहे हैं अंदाज़ा-ए-मौसम अब,
इस दौर की हवा को तूफ़ान लिख रहे हैं।

एक रोज़ मलक लेगा सबका हिसाब 'गौतम',
गिनवाने के लिए हम एहसान लिख रहे हैं।

141: सफ़र में जो मिला गुमराह मिला

सफ़र में जो मिला गुमराह मिला,
साथ में मीर कम-आगाह मिला।

सबने दावा किया हक़-गोई[1] का,
नहीं कोई भी हक़-आगाह मिला।
[1]सच बोलना

एक दीवाना सबसे कहता रहा,
उसे हर शख़्स में अल्लाह मिला।

दरिया-ए-जीस्त पार करने को,
हमें बे-कश्ती ही मल्लाह मिला।

अदू से करते हैं उम्मीद नहीं,
दोस्त भी दस्त-ए-कोताह[2] मिला।
[2]तंग हाथ (कंजूस)

रंग पर बज़्म को लाने के लिए,
मेरा ही क़िस्सा-ए-कोताह[3] मिला।
[3]छोटी कहानी

फ़क़ीर हो गए मोहब्बत में,
शोख़ का करम बे-पनाह मिला।

नहीं मिलता है रू-ब-रू 'गौतम',
ख़्वाब मे रोज़ ख़्वाह-मख़ाह[4] मिला।
[4]अकारण

142: सू-ए-मंज़िल चले रफ़्ता-रफ़्ता

सू-ए-मंज़िल चले रफ़्ता-रफ़्ता,
ख़याल में रहा अहद-ए-रफ़्ता[1]।
[1]बीता हुआ समय

दर-बदर इश्क़ ने किया हमको,
फिर भी दीदार के हैं मुतमत्ता[2]।
[2]इच्छुक

सबने नक़्शे से हटाई सरहद,
रही दीवार दिल में अलबत्ता।

दर्ज़ कर ली गई शिकायत है,
सब्र तो रखिए हफ़्ता-दो-हफ़्ता।

बहुत नाराज़ दिख रहा है वो,
आपने खोल दिया मुँह कित्ता[3]।
[3]कितना

छोड़ आया है कू-ए-जानाँ को,
सहरा में देखा उसे वारफ़्ता[4]।
[4]घूमते हुए

नहीं आएगा अयादत के लिए,
चारागर माँग रहा है भत्ता।

तमाशबीन सभी देख रहे,
उसी की बज़्म उसी की सत्ता।

हवा का इंतज़ार करता है,
शजर पे ज़र्द हो रहा पत्ता।

अभी रो देगा उसे मत छेड़ें,
दर्द सीने में लिए है ख़ुफ़्ता[5]।
[5]छुपा हुआ

जो कहा उसने सुन लिया 'गौतम',
समझ रहे हैं बात ना-गुफ़्ता[6]।
[6]अनकहा

143: जज़्बा-ए-इश्क़ के सताए हैं

जज़्बा-ए-इश्क़[1] के सताए हैं,
उसी कूचे में फिर से आए हैं।
[1]प्यार की भावनाएं

ख़ार की कर रहे वकालत हैं,
गुलाब कोट पर सजाए हैं।

सवाल हैं घिसे-पिटे सबके,
जवाब भी रटे-रटाए हैं।

उसी की बात लोग करते हैं,
जिसने रोज़ाना गुल खिलाए हैं।

लग रहा है वो बहुत ऊबा हुआ,
उसने मुद्दे नए सुझाए हैं।

गुमशुदा होना चाहता है वो,
उसने सब नक़्श-ए-पा[2] मिटाए हैं।
[2]पाँव के निशान

चुप लगाकर समय बचाया है,
और कुछ लफ़्ज़ भी बचाए हैं।

आज एक वादा फिर किया उसने,
आज फिर ख़्वाब कुछ दिखाए हैं।

हो गया है बदन दोहरा 'गौतम',
कलम वो आज भी उठाए हैं।

144: एन-मुमकिन कभी कहते हैं ग़ैर-मुमकिन को

एन-मुमकिन[1] कभी कहते हैं ग़ैर-मुमकिन[2] को,
ग़ैर-मुमकिन कभी कह देते हैं वो मुमकिन को।
[1]संभव [2]असंभव

वादा-ए-वस्ल वो करते हैं बे-झिझक पहले,
जोड़ देते हैं वो फ़ौरन ही लफ़्ज़ लेकिन को।

ख़याल ज़ेहन में उठते हैं बवंडर की तरह,
इसी में देख रहे हैं दव्वार-ए-मुमकिन[3] को।
[3]गोल गोल घूमना

घर से जाना था हरम चल दिया कू-ए-जानाँ,
गोया उत्तर को जाने वाले गए दक्खिन को।

इश्क़ करना नहीं ज़रूरी है मरने के लिए,
पकड़ने जाइए जंगल में नाग-ओ-नागिन को।

हाथ मलते हुए कुछ लोग रोज़ मिलते हैं,
पकड़ने के लिए बेताब दिखे पल-छिन को।

नया कुछ होने की उम्मीद किसी को भी नहीं,
लोग सुनते हैं सुबह-ओ-शाम हर बुलेटिन को।

नींद से जागकर हर सुबह सोचता हूँ मैं,
सज़ा किस बात की ख़ुदा ने दी मुअज़्ज़िन[4] को।
[4] नमाज़ के समय की सूचना देने वाला

गए हैं दैर-ओ-हरम[5] में ढूँढने किसको,
ध्यान से लोग देखते नहीं हैं बातिन[6] को।
[5]मंदिर-मस्जिद [6]हृदय/दिल

वक़्त सुनते हैं ठहरता कभी नहीं 'गौतम',
गुज़ारना मगर कठिन है शब-ए-साकिन[7] को।
[7]ठहरी हुई रात

145: आस्तीं में लिए ख़ंजर निकल पड़े क़ातिल

आस्तीं[1] में लिए ख़ंजर निकल पड़े क़ातिल,
ख़ैर-मक़्दम[2] लपक के करने गए हैं ग़ाफ़िल[3]।
[1]लिबास में बाजू [2]स्वागत [3]अनजान

अदू से ज़्यादा परेशान दोस्त करते रहे,
कभी भी काम नहीं आए वक़्त-ए-मुश्किल।

आज माहौल में तारी अजब बेचैनी है,
सुना सर जोड़कर बैठेंगे आलिम-ओ-फ़ाज़िल।

फ़ैसले एन-ए-महफ़िल[4] ही लिए जाने थे,
उन्हें लेते पस-ए-महफ़िल[5] हैं मीर-ए-महफ़िल[6]।
[4]सभा में [5]सभा से पहले [6]सभा का मुखिया

बदन थका के आँख भींच कर हम लेटे थे,
चोर-दरवाज़े से कुछ ख़्वाब हो लिए दाख़िल।

ग़ौर से देखने पर साफ़ पता चलता है
मिले हैं हाथ मगर दिल नहीं हुए वासिल[7]।
[7]मेल/जुड़ाव

हम अपनी बात सामने भी नहीं कह पाए,
हमारे सामने हुक्काम हो गया शाग़िल[8]।
[8]व्यस्त

रोज़ मयख़ाना इस बहाने से नासेह गया,
लेके होते हैं जाम रिंद सामा-ए-आक़िल[9]।
[9]ज्ञान की बात सुनने वाले

तुम्हारे बस का नहीं रोग इश्क़ है 'गौतम',
क़दम क़दम पे सोचते हो क्या हुआ हासिल।

146: ख़बर की जगह हर सफ़्हे में इश्तिहार मिले

ख़बर की जगह हर सफ़्हे में इश्तिहार[1] मिले,
हर सुबह सिर्फ हमें नाम के अख़बार मिले।
[1]विज्ञापन

लोग हैरान-ओ-परेशान हैं अफ़्वाहों से,
बयान करता हक़ीक़त का समाचार मिले।

ज़िंदगी जी नहीं सकता है अकेले कोई,
दिल मिलाने की मगर शर्त है विचार मिले।

भीड़ में चेहरे कुछ मानूस[2] नज़र आते हैं,
मगर एहसास होता रहता है अग़यार[3] मिले।
[2]परिचित [3]अजनबी

सुना था हमने तेरा शहर है अजाइब-घर,
हमे तो चार-सू केवल रंगे सियार मिले।

कोई उम्मीद नहीं करते हैं अब मुंसिफ़ से,
मुझे गवाह भी क़ातिल के तरफ़दार मिले।

रंग-रोगन से पहले उसकी मरम्मत कर लें,
अगर बुनियाद में पिन्हा कोई दरार मिले।

आरज़ू रखता है मिलने की यार से 'गौतम',
मगर वो यार भी मिलने को बे-क़रार मिले।

147: ख़ुदा सें माँगने में कोई बुराई भी नहीं

ख़ुदा सें माँगने में कोई बुराई भी नहीं,
यही है दूसरी तो कोई ख़ुदाई भी नहीं।

रेंग कर लोग चलना सीखने लगे हैं क्यों,
किसी के पाँव के नीचे दिखी काई भी नहीं।

हमसे ना बोलने की उसने क्यों कसम ली है,
साफ़-गोई में मेरी हर्ज़ा-सराई[1] भी नहीं।
*1*मूर्खता की बातें

वादा कर के कभी देखा नहीं वफ़ा करते,
तर्क-ए-वादा की देते हैं सफ़ाई भी नहीं।

काम उसके हुज़ूर में नहीं बनता मेरा,
किसी हुक्काम तलक मेरी रसाई[2] भी नहीं।
*2*पहुँच

दोस्त अब मानता नहीं हमें कोई अपना,
और अपनी किसी के साथ लड़ाई भी नहीं।

ग़ैर के सामने हम आह नहीं भरते हैं,
और हम करते कभी ज़ख़्म-नुमाई[3] भी नहीं।
*3*घाव का प्रदर्शन

असीर[4] ज़ुल्फ़ों के उससे ख़फ़ा मिले 'गौतम',
सज़ा भी देते नहीं देते रिहाई भी नहीं।
*4*बंदी

148: बंद दरवाज़ा दरीचा करते

बंद दरवाज़ा दरीचा करते,
अपने ही बारे में सोचा करते।

लाख चेहरे को छुपा कर देखा,
चंद साये रहे पीछा करते।

राब्ता गर नहीं रहा कोई,
मेरे बारे में क्यों पूछा करते।

रुआब आपका बहुत माना,
थोड़ा मेयार[1] भी ऊँचा करते।

[1]आदर्श

तीर पर तीर चलाते रहते,
मार कर काम समूचा करते।

बात सीधी भी समझ में आती,
बिगड़ गई आड़ा-तिरछा करते।

दिल लगाकर अगर किया होता,
काम जो करते वो अच्छा करते।

आख़िरी करम ये अगर होता,
वार गर्दन पे न ओछा करते।

भूलना चाहते अगर 'गौतम',
उसकी तस्वीर न पोछा करते।

149: दफ़अ'तन सामने आना है इत्तिफ़ाक नहीं

दफ़अ'तन[1] सामने आना है इत्तिफ़ाक[2] नहीं,
उसे है काम कोई हमसे वह फ़िदाक[3] नहीं।
*1*अचानक *2*अनायास *3*निस्वार्थ

बात करने लगा है अब अज़ीज़-दारी[4] की,
कभी जो बोलता था जुम्ला-ए-बेबाक[5] नहीं।
*4*रिश्तेदारी *5*साफ़ बात

आजकल देने लगे हैं वो सबको गुलदस्ते,
बरा-ए-मेहरबानी[6] देते थे ख़ाशाक[7] नहीं।
*6*मेहरबानी *7*सूखी घास

इसकदर रिंद से मायूस हुआ है ज़ाहिद,
करता मयख़ाने में अब चर्चा-ए-अफ़्लाक[8] नही।
*8*आसमान *(*जन्नत*)* की बात

चढ़ते दरिया को देखते रहेंगे साहिल से,
तमाश-बीन-ओ-शौक़ीन हैं तैराक नहीं।

नींद आसानी से आँखों मे उतर आती है,
ज़ेहन में रखता जो कल का कोई इदराक[9] नहीं।
*9*कोई विचार

क़फ़स[10] में बंद परिंदे की दास्ताँ 'गौतम',
पास परवाज़[11] नहीं नज़र भी आफ़ाक[12] नहीं।
*10*पिंजरा *11*उड़ान *12*विस्तृत

150: यही आज़ादी-ए-सहाफ़त है

यही आज़ादी-ए-सहाफ़त[1] है,
कारोबारी हुई ख़िलाफ़त है।
[1]पत्रकारिता

बात से अपनी पलट जाने की,
आज के दौर की सक़ाफ़त[2] है।
[2]संस्कृति

सहेज लीजिए रफ़ाक़त[3] को,
इसे खाने लगी अदावत[4] है।
[3]दोस्ती [4]शत्रुता

कल का अंदाज़ा दे रही है जो,
लिखी दीवार पर इबारत[5] है।
[5]पंक्तियाँ

रोकने का कोई उपाय करें,
सुगबुगाने लगी बग़ावत है।

ख़बर लिखाई है गुमशुदगी की,
लापता हो गई शराफ़त है।

रहें तैयार अब कमर कस के,
नहीं ये वक़्त-ए-फ़राग़त[6] है।
[6]मनोरंजन/आराम का समय

पूछिए, पूछना ज़रूरी है,
चुप लगा लेना बुरी आदत है।

रोज़ ए.सी. में बैठने वालों,
धूप में मिलती किसे राहत है।

माना तुमको गलत नहीं लगता,
मुझे हालात से शिकायत है।

नक़ब-ज़नों[7] से घर बचाने को,
घर की करनी हमें हिफ़ाज़त है।
[7]सेंध लगाने वाले (चोर)

आग अपने से नहीं लगती है,
पकड़िए जिसकी ये शरारत है।

मलक[8] के आने का दिन दूर नहीं,
दूर लगती नहीं क़यामत है।
[8]मृत्यु का फ़रिश्ता

घर का भेदी ही लंका ढाएगा,
याद रखना, सही कहावत है।

हम तो ख़ामोश रह नहीं सकते,
मिली चुप रहने की हिदायत[9] है।
[9]निर्देश

आओ मिलकर उसे बदल डालें,
अगर गलत कोई रिवायत[10] है।
[10]रिवाज/चलन

इलाज वक़्त से किया जाए,
देखिए बढ़ रही हरारत[11] है।
[11]बुखार

कोसना बंद कीजिए 'गौतम',
बदलना हमको ही सियासत है।

151: मैं ख़ुद को रोकता हूँ टोकता हूँ

मैं ख़ुद को रोकता हूँ टोकता हूँ,
अकेले में मगर फिर सोचता हूँ।

ख़लिश बेचैन करती है कभी तो,
पुराने ज़ख़्मों को मैं नोचता हूँ।

हुआ तन्हाई का गहरा असर ये,
मैं अपन साए से भी चौंकता हूँ।

नहीं तस्वीर कोई टाँगने को,
मगर एक कील याँ वाँ ठोकता हूँ।

मेरी कोशिश है घर को साफ़ करना,
लगा बेकार जो वो फेंकता हूँ।

नहीं उम्मीद आने की किसी की,
मगर खिड़की से बाहर झाँकता हूँ।

मेरी बेचैनी मुझसे पूछती है,
ख़ुदी को बारहा क्यों तोलता हूँ।

हवा देता हूँ बुझती आग को मैं,
कभी मैं ख़ुद को इसमें झोंकता हूँ।

लो अब कतरा रहे हैं लोग हमसे,
किसी भी बात को क्यों खेंचता हूँ।

गुज़रते अब नहीं बाज़ार से हम,
कोई न पूछ ले क्या बेचता हूँ।

मुझे अब कैक्टस लगते हैं अच्छे,
इन्हें गमलों में मैं अब रोपता हूँ।

कोई उम्मीद अपने से नहीं अब,
बहुत बेज़ार हूँ दिल-सोख़्ता[1] हूँ।

[1] विक्षुब्ध हृदय

मैं साँसें लेते लेते थक गया हूँ,
मैं अब मिट्टी को मिट्टी सौंपता हूँ।

मैं किसको खोजता रहता हूँ 'गौतम',
मुझे लगता है मैं ख़ुद लापता हूँ।

152: बा-ख़ुशी उनका इंतिज़ार करें

बा-ख़ुशी[1] उनका इंतिज़ार करें,
भरोसा गर हो एतिबार करें।
[1]सहर्ष

उनके वादे पे यक़ीं हो कैसे,
पेश हर बार जो एज़ार[2] करें।
[2]बहाना

राज़दाँ उनको बनाएं कैसे,
जारी रोज़ाना जो अख़बार करें।

रू-ब-रू उनके किसलिए जाते,
अदू[3] के साथ जो दरबार करें।
[3]शत्रु/विरोधी

आरज़ू का सफ़र मुफ़ीद नहीं,
किसलिए जिस्म रेगज़ार[4] करें।
[4]रेगिस्तान

क़त्ल करने की आरज़ू है तो,
क़त्ल यकबार क्यों सौ-बार करें।

अपने दीवानों में गिनते हैं उन्हें,
जो गिरेबाँ को तार-तार करें।

चश्म रोशन हो ख़्वाब से 'गौतम',
शब-ए-तन्हाई[5] तो गुलज़ार करें।
[5]वियोग की रात

153: सबका वजूद कितने रिश्तों में बंट रहा है

सबका वजूद[1] कितने रिश्तों में बंट रहा है,
इंसान मुकम्मल[2] था किस्तों में कट रहा है।
[1]अस्तित्व [2]संपूर्ण

आँखों में भींचते हैं यूँ ख़्वाब ख़ुश-फ़हम[3] को,
लगता है कोई बच्चा माँ से लिपट रहा है।
[3]प्रिय

बाज़ू से गुज़र जाते हैं हाथ हिलाते सब,
याराना तो यारों से ऐसे निपट रहा है।

करता गिला नहीं है अब तर्क-ए-वादा[4] का,
हर शख़्स अपनी बातों से ख़ुद पलट रहा है।
[4]वचन न निभाना

उसको ज़रूरतों ने मजबूर किया होगा,
महफ़िल में आजकल वो सबसे चिपट रहा है।

लगता है भूला-बिसरा कुछ आया है ज़ेहन में,
तन्हाई में माज़ी[5] के सफ़्हे पलट रहा है।
[5]अतीत

काई जमी हुई है हमवार रास्तों पर,
हर राही इस बहाने हँसकर रपट रहा है।

अग़यार[6] सा लगा है मिलने पे अब हमें वह,
कल तक हमारे दिल के सबसे निकट रहा है।
[6]अपरिचित

मंज़िल भी सामने हैं रस्ता भी नहीं ज़्यादा,
लेकिन सफ़र से मेरा अब दिल उचट रहा है।

हैरत से देखते हैं सब लोग उसे 'गौतम',
इस दौर-ए-जहाँ में जो निष्कपट रहा है।

154: देखकर आईना सदमा मुझे लगा गहरा

देखकर आईना सदमा मुझे लगा गहरा,
हमारे घर में एक अजनबी कैसे ठहरा।

लग रहा आईना नाराज़ मेरी सूरत से,
देखना चाहता होगा जमाल-ए-ज़ोहरा[1]।
*1*हसीं चेहरा

सुर्ख़रू[2] अपने आप को समझ रहे थे हम
एक अनजान के सर बंध गया मेरा सेहरा[3]।
*2*सफल *3*ताज

निकल के नक़ब-ज़न[4] माज़ी से नक़ब[5] काट रहे,
हमने तन्हाई पर कैसा है लगाया पहरा।
*4*सेंधमार *5*सेंध

चाल सब सोच-समझ कर हैं चल रहे लेकिन,
वक़्त के हाथ में हर आदमी ठहरा मोहरा।

तिश्ना-लब[6] लौटने लगे हैं यही कहते हुए,
हमसे भी ज़्यादा है प्यासा सराब[7]-ओ-सेहरा[8]।
*6*प्यासा *7*मृगमरीचिका *8*रेगिस्तान

ज़बान रख के भी ख़ामोश समझदार रहे,
नक़ाब लोगों ने चेहरे पे है डाला दोहरा।

उसके भी सामने हर राज़ बयाँ मत करिए,
जो इशारों से है समझा रहा वो है बहरा।

दूर की चीज़ साफ़ देखेगा कैसे 'गौतम',
नज़र में आज उतर आया है गहरा कोहरा।

155: आदमी तन्हा शुरू करता सफ़र है गोर से

आदमी तन्हा शुरू करता सफ़र है गोर[1] से,
सब अज़ीज़ों से विदा लेता बशर है गोर से।
*1*क़ब्र

चौंकता था जो कभी हल्की-सी इक आवाज़ पर,
आज गहरी नींद में वो बे-फ़िकर है शोर से।

कल सितारों के भरोसे काटा था शब का सफ़र,
रास्ता रोशन हुआ है अब चराग़-ए-गो[2] से।
*2*क़ब्र पर जलता दिया

था कहाँ तन्हाई मे भी चैन तेरे शहर में,
कान तक आवाज़ आया करती थी हर ओर से।

तय सुबह से शाम तक रोज़ाना गर करते सफ़र,
थकन का एहसास होता जिस्म के हर पोर से।

दो-जहाँ से हाथ धो लेता है अपने आदमी,
इश्क़ कर बैठा अगर नादानी में चित-चोर से।

लग रहा है आज गीला गीला क्यों दामन मेरा,
एक आँसू गिर गया है किसके दीदा-ए-कोर[3] से।
*3*बंद आँख/आँख का किनारा

डालनी थी ख़ाक[4] कुछ बातों पे कल 'गौतम' तुम्हें,
ख़ाक होकर जा रहे अब मिलने ख़ाक-ए-गोर से।
*4*क़ब्र की मिट्टी

156: हमारी आह में पैदा हुआ असर कोई

हमारी आह में पैदा हुआ असर कोई,
अभी अभी मुझे छूकर गई नज़र कोई।

दफ़अ'तन[1] गाहे-ब-गाहे[2] लगी आने हिचकी,
याद करता है मुझे आज भी घर पर कोई।
[1]अचानक [2]अक्सर

ज़ख़्म सीने पे लगा होता तो हम सहलाते,
टीसता पीठ पर है नक़्श-ए-ख़ंजर[3] कोई।
[3]छुरे का निशान

वक़्त के साथ नक़्श-ए-पा[4] नहीं रहते साबुत,
याद रखता नहीं किसी को उम्र भर कोई।
[4]पाँव के निशान

एक बुत ने बना दिया है बुत-परस्त हमें,
कुफ्र के नाम पर है फेंकता पत्थर कोई।

हादसा गुज़रा वो सबको नहीं सुना पाए,
बयान लोग चाहते थे मुख़्तसर कोई।

दवा के साथ दुआ भी थी ज़रूरी 'गौतम',
फ़राख़-दिल[5] नहीं मिलता है चारागर कोई।
[5]बड़े दिल वाला

157: प्यादा जो बना फ़र्ज़ी तो इतराने लगा है

प्यादा[1] जो बना फ़र्ज़ी[2] तो इतराने लगा है,
अब उससे बादशाह भी घबराने लगा है।
[1]पैदल चलने वाला / शतरंज का सबसे छोटा मोहरा [2]वजीर/मंत्री

हमने सवाल एक झिझकते हुए किया,
वो तिलमिला के चीखने-चिल्लाने लगा है।

हमने तो गुज़ारिश करी थी एक करम की,
वो अपना हर सितम हमें गिनवाने लगा है।

उससे थी साफ़-गोई की उम्मीद सभी को,
वो सामने जनाब के हकलाने लगा है।

उस्ताद की छड़ी का यह कमाल है देखो,
हर तिफ़्ल[3] सबक़ हू-ब-हू दोहराने लगा है।
[3]बच्चा

बे-ख़्वाब हो रही है मेरी आँख आजकल,
दिल बैठ रहा और सर चकराने लगा है।

वह दोस्त लेके मशवरा आता है अदू से,
हर मुद्दे को वो और भी उलझाने लगा है।

अब उसकी बे-रुख़ी का असर ये हुआ 'गौतम',
अब उससे उसका आश्ना[4] कतराने लगा है।
[4]प्रेमी

158: बात होती है हम-ख़यालों में

बात होती है हम-ख़यालों में,
ग़र्क शब होती है पियालों में।

सर्द रातों का हवाला देकर,
लपेटा मुर्दों को दुशालों में।

छोड़िए फिर गिला करेंगे हम,
यार आया है कई सालों में।

जवाब लेना पेट भरने पर,
अभी तो ध्यान है निवालों में।

वक़्त से हार नहीं मानी है,
गिना गया उसे जियालों[1] में।
[1]साहसी

जवाब देना हो गया मुश्किल,
सवाल थे निहाँ[2] सवालों मे।
[2]छुपे हुए

आते-जाते सलाम क्यों करते,
ख़ुद को रखते हैं कई तालों में।

मुफ़लिसी में जो गुनगुनाता है,
गिना गया उसे ख़ुश-हालों में।

कलाम इश्क़ पर नहीं कहते,
कभी छपे नहीं रिसालों[3] में।
[3]पत्रिकाएं

यहाँ अग़यार[4] हैं बहुत 'गौतम',
एक अपना हो शहर-वालों में।
[4]अजनबी

159: मुसलसल सफ़र में है

मुसलसल[1] सफ़र में है,
अभी तक ख़बर में है।
[1]लगातार

नहीं डर कोई उससे,
सभी की नज़र में है।

रही सबको शिकायत,
किसी के असर में है।

नहीं लगता है ज़िंदा,
नहीं वह क़बर में है।

है ज़िंदा-दिल वो कैसे,
अगर कुछ फ़िकर में है।

निहत्था दिख रहा है,
अगरचे ग़दर में है।

ज़मीं पर ना फ़लक पर,
वो लटका अधर में है।

सिफर सौदागरी में,
वो रहता ज़रर[2] में है।
[2]हानि

नहीं बे-नाम 'गौतम',
नहीं वह ज़िकर में है।

160: दोस्त हमको नहीं दगा देंगे

दोस्त हमको नहीं दगा देंगे,
जल्द मरने की वो दुआ देंगे।

उनसे उम्मीद अभी बाक़ी है,
मेरे क़ातिल को वो पता देंगे।

तर्क[1] हर वादा किया जायेगा,
वादा लेने की यूँ सज़ा देंगे।
[1]तोड़ना

उससे मिलने चले जाते लेकिन,
हमें भी सफ़[2] में वो बिठा देंगे।
[2]पंक्ति

दर्द-ए-ला-इलाज रखते हैं,
चारागर किसलिए दवा देंगे।

सबक़ सीखा नहीं उस्तादों से,
हादसे अब सबक़ सिखा देंगे।

दफ़्न यादों को वक़्त करता है,
अज़ीज़ जिस्म को दफ़्ना देंगे।

नाम न लिखिए गोर[3] पर 'गौतम',
एकदिन तो सभी भुला देंगे।
[3]कब्र